नई दिल्ली RNI NO. DELHIN/2010/37009

वर्षः 12

अंकः 26

सोमवार, 18-24 जुलाई 2022

मूल्यः 5 रु प्रति

रु 250 वार्षिक

मोहर्रम की तैयारियों को लेकर अजमेर जिला कलक्टर ने सभी विभागों को दिए निर्देश 03

चायवाले प्रधानमंत्री हैं, संत मुख्यमंत्री हैं और अब आदिवासी समुदाय से राष्ट्रपति हैं 08

NCR समाचार

आम चुनाव से पहले थाईलैंड के प्रधानमंत्री प्रयुथ चान-ओचा ने जीता आखिरी अविश्वास मत 10

भारत ने एकदिनी मैच में वेस्टइंडीज को 3 रनों से हराया 11

इस्माईल खान

www.ncrsamacharlive.in

BY C.R.O. TEAM

twitter-@ncrsamacharlive

भारत का नं 1 साप्ताहिक समाचार पत्र

करण जौहर पर लगा सारा के खिलाफ जाकर जान्हवी को फेवर करने का आरोप, निर्माता ने दी सफाई 12

दिल्ली में मंकीपॉक्स केस मिलने पर केजरीवाल बोले- एलएनजेपी अस्पताल में बना स्पेशल वार्ड

घबराने की जरूरत नहीं : केजरीवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में आज 34 वर्षीय एक व्यक्ति को मंकीपॉक्स से संक्रमित पाया गया है। चिंता की बाद तो यह है कि उसने विदेश की कोई यात्रा नहीं की थी। अब यही कारण है कि मंकीपॉक्स को लेकर लोगों में एक डर दिखने लगा है। इन सब के बीच दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है, स्थिति नियंत्रण में है। अपने ट्वीट में केजरीवाल ने लिखा कि मंकीपॉक्स का पहला मामला दिल्ली में सामने आया है। मरीज स्थिर है और ठीक हो रहा है। उन्होंने कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है। स्थिति नियंत्रण में है। हमने एलएनजेपी में अलग आइसोलेशन वार्ड बनाया है। हमारी सबसे अच्छी टीम दिल्लीवासियों में

इसे फैलने से रोकने और उनकी रक्षा करने के लिए काम कर रही है। एलएनजेपी अस्पताल के निदेशक सुरेश कुमार ने कहा कि व्यक्ति को 2 दिन पहले भर्ती कराया गया था। उसे बुखार और त्वचा पर लाल चकत्ते थे। हमने उसे निगरानी में रखा। बाद में उसके नमूने पुणे भेजे गए और आज हमें रिपोर्ट मिली जिसमें वह मंकीपॉक्स के लिए सकारात्मक पाया गया। एसओपी के अनुसार उनका इलाज किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि मरीज को आइसोलेट कर दिया गया है और वह अभी स्थिर है और ठीक हो रहा है। यह एक डीएनए वायरस है और चिकनपॉक्स के समान है। हमें फेस मास्क पहनना होगा, ट्रांसमिशन को रोकने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखनी होगी। आपको बता दें कि भारत में मंकीपॉक्स संक्रमण का यह चौथा मामला सामने आया है। संक्रमित पाए गए व्यक्ति ने हाल में हिमाचल प्रदेश के मनाली में एक जश्न में हिस्सा लिया था। पश्चिमी दिल्ली के रहने वाले इस व्यक्ति में मंकीपॉक्स के लक्षण दिखने के बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। फिलहाल यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि यह व्यक्ति कैसे संक्रमित हुआ। इससे पहले, केरल में मंकीपॉक्स के तीन मामले सामने आए थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने शनिवार को कहा था कि '70 से अधिक देशों में मंकीपॉक्स फैलना एक "असाधारण" हालात है और यह अब वैश्विक आपात स्थिति है। मंकीपॉक्स संक्रमित जानवर के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क में आने से मनुष्यों में फैलता हैं।

छपरा में अवैध पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट, 6 लोगों की मौत, एस बोले- जांच जारी

एजेंसी

छपरा। बिहार के छपरा में एक पटाखा बनाने वाली फैक्ट्री में ब्लास्ट होने की वजह से 6 लोगों की मौत हो गई है। घटना सारण जिले के खोदाईबाग गांव की है। ब्लास्ट होने पर दूर-दूर तक इसकी आवाज गई है। कई लोगों के मलबे में अभी भी दबे होने की सूचना है।

राहत और बचाव कार्य जारी है। जिन लोगों को बचाया जा चुका है उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक मरने वालों की संख्या में और वृद्धि हो सकती हैं। घटना की पुष्टि खुद सारण के एसपी संतोष कुमार ने की है। अपने बयान में एसपी संतोष कुमार ने कहा कि छपरा में विस्फोट से एक घर के ढहने से छह लोगों की मौत हो गई। मलबे में दबे लोगों को निकालने का प्रयास किया जा रहा है। हम विस्फोट के

कारणों की जांच कर रहे हैं। फॉरेंसिक टीम और बम निरोधक दस्ते को भी बुलाया गया है। बताया जा रहा है कि यहां अवैध रूप से पटाखा बनाने का काम होता था। एसपी ने इस बात की भी जानकारी दी है कि तीन भाइयों का मकान था। आगे की ओर साइकिल और रेडीमेड की दुकान चलती थी, पीछे पटाखा बनाया जाता था। रविवार को अचानक कि पटाखे में आग लग गई और बड़ा विस्फोट हुआ है। इस विस्फोट में तीन मंजिला मकान पूरी तरह से ध्वस्त हो गया है। मलबे में से भी पटाखों के फूटने की आवाज आई। स्थानीय लोगों ने सोशल मीडिया पर कई वीडियो भी जारी किए हैं। यह गैरकानूनी तरीके से पटाखा बनाने का काम बहुत पहले से चल रहा था। सूचना मिलने के साथ ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और राहत तथा बचाव कार्य शुरू कर दिया गया।

बार को लेकर वार-पलटवार

स्मृति ईरानी ने पवन खेड़ा और जयराम रमेश को भेजा लीगल नोटिस

एजेंसी

नई दिल्ली। गोवा में बार मामले को लेकर सियासी बवाल अभी भी जारी है। कांग्रेस केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को लेकर हमलावर है। इन सबके बीच पलटवार में स्मृति ईरानी की ओर से अब लीगल नोटिस भी भेज दिया गया है। कांग्रेस की ओर से स्मृति ईरानी की बेटी पर गोवा में अवैध बार चलाने का आरोप लगाया गया था।

कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से स्मृति ईरानी को मंत्रिमंडल से बर्खास्त करने की भी मांग की थी। पलटवार करते हुए स्मृति ईरानी ने कहा था कि मेरी बेटी विद्यार्थी है और वह कोई बार नहीं चलाती है। उन्होंने कहा था कि मुझे गांधी परिवार के खिलाफ बोलने की सजा कांग्रेस की ओर से दी जा रही है। शुक्रवार को एक संवाददाता सम्मेलन में भी स्मृति ईरानी ने साफ तौर पर कह दिया था कि वह इस मामले को लेकर कोर्ट जाएंगी। अब स्मृति ईरानी की ओर से कांग्रेस नेता पवन खेड़ा, जयराम रमेश, नेता डिसूजा और कांग्रेस को लीगल नोटिस भेजा गया है। इसके साथ ही उनसे बिना शर्त लिखित माफी मांगने और

आरोपों को तत्काल प्रभाव से वापस लेने के लिए भी कहा गया है। इससे पहले स्मृति ईरानी ने कांग्रेस के इस आरोप को दुर्भावनापूर्ण करार दिया और उस पलटवार करते हुए दावा किया कि नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया और राहुल गांधी की "5,000 करोड़ रुपये की लूट" पर उनके मुखर रुख के कारण उनकी बेटी को निशाना बनाया गया है। कांग्रेस के मीडिया एवं प्रचार प्रमुख पवन खेड़ा ने संवाददाताओं से कहा, केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के परिवार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे हैं। गोवा में उनकी बेटी द्वारा चलाए जा रहे रेस्त्रां पर शराब परोसने के लिए फ़र्ज़ी लाइसेंस जारी करवाने का आरोप लगा है और यह कोई 'सूत्रों के हवाले से' अथवा एजेंसियों द्वारा राजनीतिक प्रतिशोध लेने के लिए लगाया गया।

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिले नवीन पटनायक

एजेंसी

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक आज दिल्ली दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की है। मुलाकात के बाद नवीन पटनायक ने द्रौपदी मुर्मू के राष्ट्रपति बनने पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि मैं नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का अभिनंदन करने और उन्हें शुभकामनाएं देने आया हूं। मैं बहुत खुश और सम्मानित महसूस कर रहा हूं कि ओडिशा की एक बेटी को भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया है, मैं कल उनके शपथ ग्रहण समारोह के लिए वहां मौजूद रहूंगा। आपको बता दें कि द्रौपदी मुर्मू नवीन पटनायक सरकार में मंत्री भी रह चुकी हैं। द्रौपदी मुर्मू को जब राष्ट्रपति उम्मीदवार बनाया गया था तब भी नवीन पटनायक में हार्दिक प्रसन्नता जताई थी। इससे पहले नवीन पटनायक ने राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल करने पर द्रौपदी मुर्मू को शुक्रवार को फोन कर बधाई दी।

बंगाल के मंत्री पार्थ चटर्जी की सहयोगी अर्पिता को एक दिन के लिए ईडी की हिरासत में भेजा गया

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के गिरफ्तार मंत्री पार्थ चटर्जी की सहयोगी अर्पिता मुखर्जी को प्रवर्तन निदेशालय की एक दिन की हिरासत में भेज दिया गया है। उन्हें सोमवार को पीएमएलए कोर्ट में पेश किया जाएगा। इससे पहले अर्पिता मुखर्जी को कोलकाता में ईडी मुख्यालय से बाहर चिकित्सा जांच के लिए ले जाया गया। उसे बंशाल कोर्ट में पेश किया गया, लेकिन आदेश सुरक्षित रख लिया गया। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेता पार्थ चटर्जी को प्रवर्तन निदेशालय ने शनिवार 23 जुलाई को पश्चिम बंगाल में कथित स्कूल नौकरी घोटाले की जांच के सिलसिले में गिरफ्तार किया था।

पूर्व शिक्षा मंत्री की करीबी सहयोगी अर्पिता मुखर्जी के कोलकाता स्थित घर से 21 करोड़ रुपये नकद बरामद होने के बाद पार्थ चटर्जी की गिरफ्तारी हुई। एजेंसी ने शनिवार को अर्पिता मुखर्जी को भी गिरफ्तार किया था। कोलकाता की एक अदालत ने शिक्षक भर्ती घोटाले के सिलसिले में शनिवार को पश्चिम बंगाल के मंत्री पार्थ चटर्जी

को दो दिन के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की हिरासत में भेज दिया। प्रवर्तन निदेशालय ने तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चटर्जी को पहले दिन में गिरफ्तार किया था और उन्हें बैंकशाल अदालत में एक न्यायाधीश के सामने पेश किया।

न्यायाधीश ने चटर्जी को दो दिन के लिए ईडी की हिरासत में भेज दिया। धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) अदालत ने मामले की सुनवाई नहीं की, क्योंकि आज शनिवार का दिन है। चटर्जी को उनके आवास पर करीब 26 घंटे की पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया। कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्देश के तहत केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) सरकार द्वारा प्रायोजित और सहायता प्राप्त स्कूलों में समूह-सी और डी कर्मचारियों के साथ-साथ शिक्षकों की भर्ती में कथित अनियमितताओं की जांच कर रही है। ईडी घोटाले में राशि कहां से आयी और कहां गई इसकी पड़ताल कर रही है। ईडी ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल में शिक्षक भर्ती घोटाले की जांच के सिलसिले में दो मंत्रियों सहित करीब 12 व्यक्तियों के घरों पर एकसाथ छापेमारी की थी और करीब 20 करोड़ रुपये नकद जब्त किये थे।

बिना किसी सबूत के किया जा रहा परेशानः सिन्हा

कोलकाता की एक अदालत ने शिक्षक भर्ती घोटाले के सिलसिले में पश्चिम बंगाल के मंत्री पार्थ चटर्जी को दो दिन के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की हिरासत में भेज दिया है। इस मामले को लेकर आसनसोल से तृणमूल कांग्रेस सांसद शत्रुघ्न सिन्हा का बयान सामने आया है। शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि मैं इस पर कुछ नहीं कहूंगा अभी जांच चल रही है लेकिन जो प्राथमिक रूप से दिख रहा है उसमें ये साफ है कि बिना किसी पुष्टि और बिना किसी सबूत के आप किसी को परेशान कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि इस पार्टी (TMC) ही नहीं बल्कि बाकी पार्टियों के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। इसके साथ ही दिग्गज अभिनेता ने कहा कि देश में मुख्य मुद्दा बेरोजगारी और महंगाई कै है। अग्निपथ का ड्रामा सामने आया... 4 साल काम करने के बाद बेरोजगार कर दिया जाएगा। मंत्री फिरहाद हाकिम ने कहा कि हम स्थिति पर नजर रखे हुए हैं और हमें न्यायपालिका पर भरोसा है।

युवा पीढ़ी जड़ों से जुड़े रहने की परंपरा को आगे बढ़ाएं: रामनाथ कोविंद

एजेंसी

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद छोड़ने की पूर्व संध्या पर देशवासियों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने खुलकर अपनी बातें रखी। इस दौरान उन्होंने देशवासियों का आभार भी जताया। राष्ट्र के नाम संबोधन में रामनाथ कोविंद ने कहा कि निष्ठावान नागरिक ही वास्तविक निर्माता है। उन्होंने कहा कि अपने कार्यकाल के दौरान प्रतिभावान लोगों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं भी देश के लिए कुछ करना चाहता था। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भारत का लोकतंत्र सभी को मौका देता है। राष्ट्रपति ने कहा कि मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे सभी का सहयोग मिला। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 5 साल पहले, मैं आपके चुने हुए जनप्रतिनिधियों के माध्यम से राष्ट्रपति के रूप में चुना गया था। राष्ट्रपति के रूप में मेरा कार्यकाल आज समाप्त हो रहा है। मैं आप सभी और आपके जन प्रतिनिधियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि 21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के लिए हमारा देश सक्षम हो रहा है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। राष्ट्रपति ने कहा कि कानपुर देहात जिले के परौंख गांव के अति साधारण परिवार में पला-बढ़ा राम नाथ कोविन्द आप सभी देशवासियों को संबोधित कर रहा है।

संक्षिप्त समाचार

चीन और पाकिस्तान को सख्त चेतावनी देते हुए राजनाथ बोले- यदि कोई युद्ध हुआ, तो भारत बनेगा विजेता

नई दिल्ली। पाकिस्तान और चीन के साथ भारत के रिश्ते तनाव भरे रह रहे हैं। 2020 में लद्दाख में हुई घटना के बाद से भारत और चीन के बीच के टकराव में लगातार बढ़ोतरी हुई है। अब तक भारत और चीन के बीच 16 दौर की बातचीत हो चुकी है। लेकिन कोई ठोस समाधान नहीं निकल सका है। चीन लगातार एलएसी पर अपनी विस्तार वाली सोच को बढ़ाने में जुटा हुआ है। वहीं, पाकिस्तान आतंकवाद के जरिए भारत के खिलाफ लगातार साजिश रचता रहता है। इन सबके बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आज एक बार फिर से दुश्मन देशों को बड़ी चेतावनी दे दी है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने साफ तौर पर कहा कि 'हम पर बुरी नजर डालने वाला कोई भी हो' भारत मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार है। इतना ही नहीं, जम्मू-कश्मीर दौरे पर गए रक्षा मंत्री ने विश्वास जताते हुए कहा कि यदि आज के समय में कोई युद्ध हुआ तो भारत विजेता बनकर वह भरेगा। राजनाथ ने कहा कि पाक अधिकृत कश्मीर पर भारत की संसद में प्रस्ताव पारित हुआ था। पाक अधिकृत कश्मीर भारत का हिस्सा था, भारत का हिस्सा है और रहेगा। ये कैसा हो सकता है कि शिव के स्वरूप बाबा अमरनाथ हमारे यहां हो और मां शारदा शक्ति स्वरूपा LoC के पार हो। रक्षा मंत्री ने पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) के हिस्से को फिर से हासिल करने की वकालत करते हुए साफ तौर पर कहा कि यह भारत का हिस्सा है और इस देश का हिस्सा बना रहेगा। उन्होंने कहा कि मैं आपको विश्वास के साथ बताना चाहता हूं कि अगर किसी विदेशी ताकत ने हम पर बुरी नजर डाली और युद्ध हुआ तो हम विजयी होंगे।

तिगड़ी थाने में हुए अत्याचार का विरोध करने पर पुलिस ने दी महिला को निवस्त्र करके मारने की धमकी

नमिता चौहान

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली, तिगड़ी जे जे कैंप में रहने वाली शिवानी नाम की लड़की के साथ उसी के मोहल्ले में रहने वाले एक परिवार के सदस्यों ने मिलकर एक ऐसी घटना को अंजाम दिया जिसमे शिवानी अधमरी हो गई। उस मोहल्ले

में रहने वाले लगभग सभी लोगों ने एक ही परिवार का नाम लिया और शिवानी के साथ हुए हादसे का सारा आरोप मनोज के परिवार पर लगाया। मिली जानकारी के मुताबिक मनोज और शिवानी दोनों ही पुलिस के मुखबिर है। शिवानी के कुछ पैसे मनोज पर थे जिसकी मांग वह कई दिनों से कर रही थी, पर मनोज उसे पैसे देना नहीं चाहता था। जब 15 जुलाई की रात शिवानी खाना खाकर करीब 11 बजे अपनी ही गली के 2 बच्चों के साथ टहल रही थी तो अचानक ही मनोज के पूरे परिवार ने उसके साथ साथ उन दोनों गली के बच्चों पर भी वार करना शुरू कर दिया। इस दौरान आस पास के लोगों ने शिवानी को बचाने की कोशिश की, लेकिन वे सभी लोग उस वक्त शराब के नशे में थे इसलिए वो किसी के रोके नहीं रुके और शिवानी से छेड़छाड़ के साथ साथ उसके सिर, पैर, हाथ और गुप्तांगों पर भी वार किए। इस झड़प और मारपीट में शिवानी बुरी तरह से घायल हो गई, वहीं साथ के एक लड़के का हाथ और दूसरे का पैर फेक्चर हो गया। शिवानी को काफी चोटें आई थी इसलिए वो वेंटिलेटर पर थी। जब उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ तो उसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया। पीड़िता ने बताया कि, ये सब तिगड़ी थाना SI ने करवाया है। इसके साथ ही पीड़िता ने खुद पर थाने के भीतर हुए अत्याचारों का भी खुलासा किया और बताया कि, तिगड़ी थाना पुलिस ने उसे बालों से घसीटा और पूरी रात बिना CCTV के कमरे में रखा। पीड़िता ने बताया कि, उसे पूरी रात बिना किसी कारण थाने में रखा गया, उससे मारपीट की गई, इतना ही नहीं पीड़िता से जब बर्दास्त नहीं हुआ तो उसने महिला पुलिसकर्मी से खुद का बचाव करने के लिए पलटवार किया, जिसके बाद पीड़िता ने आरोप लगाया है कि तिगड़ी थाना SI ने उसे निवस्त्र करके मारने की धमकी दी है। पूरे मोहल्ले ने ये आरोप लगाया है कि, 15 जुलाई की रात हुए वारदात में पूरा परिवार शामिल था, लेकिन पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाने के बावजूद भी पुलिस ने केवल 2 लोगों को ही गिरफ्तार किया और बाकियों को छोड़ दिया।

एनसीआर समाचार, साप्ताहिक समाचार पत्र में विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

कार्यालयः
12/276, संगम विहार
नई दिल्ली-62

फोनः
8888883968,
9811111715

एनसीआर समाचार पत्र के
स्वामित्व/ प्रकाशन परिवर्तन के संबंध में

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

नवनिर्वाचित पार्षदों ने अपने समर्थकों के साथ धूम-धाम से निकाला विजय जुलूस, जनता जनार्दन का किया आभार व्यक्त

मध्य प्रदेश इंदरगढ़ दतिया जिले की नगर परिषद इंदरगढ़ में नगरीय निकाय चुनाव की आज मतगणना संपन्न होते ही, नवनिर्वाचित पार्षदों ने अपने अपने समर्थको के संग बेंड बाजों के साथ नगर में निकाला विजय जुलूस, और जोरदार आतिशबाजी भी की, नगर वासियों ने जगह जगह नवनिर्वाचित पार्षदों का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत भी किया, सभी नवनिर्वाचित पार्षदों ने अपने अपने वार्डो में घर घर जाकर वार्डवासियों से आशीर्वाद प्राप्त कर आभार व्यक्त किया, सभी नवनिर्वाचित पार्षदों ने शीतला माता मंदिर पर मत्था टेक कर मा का आशीर्वाद भी प्राप्त किया। पुजारी अंशुल दांतरे ने समस्त नवनिर्वाचित पार्षदों का पुष्पमाला पहनाकर अभिवादन किया। एक ओर जहां नवनिर्वाचित पार्षदों के चेहरों पर खुशी है तो, वही चुनाव में सिकस्त खाएं हुए प्रत्याशियों के चेहरों पर मायूसी छाई हुई है।

इंदरगढ़ नगर पंचायत में जीते पार्षद उम्मीदवारों को अपर कलेक्टर रुपेश उपाध्याय ने प्रमाण पत्र दिए

मध्य प्रदेश इंदरगढ़ नगर परिषद पार्षद पद के उम्मीदवार विजय घोषित होने के बाद दतिया अपर कलेक्टर भूपेश उपाध्याय सभी प्रत्याशियों को प्रमाण पत्र दिए। वार्ड क्रमांक 1 से सिम्मी पठान भाजपा, अखिलेश सेन भाजपा, अरविन्द जाट युवा, गोमती रामस्वरूप मटेरियल मंडेलिया भाजपा, रवि चौरसिया निर्दलीय, प्रेमवती भाजपा, संजीव कुशवाहा भाजपा, मंजू पटेल कांग्रेस, ममता कुशवाहा कांग्रेस, विनीता राठौर भाजपा, पूजा राणा भाजपा 13 मनीषा मिर्धा निर्दलीय, पूजा राणा भाजपा 13 मनीषा मिर्धा निर्दलीय, सुमित उपाध्याय युवा, रामदेवी परिहार निर्दलीय को, विजय प्रमाण पत्र वितरण किए गए। इस मौके पर इंदरगढ़ तहसील मोहिनी साहू, डीएसपी राजू रजक नायव, तहसीलदार दीपक यादव, थाना प्रभारी परमानंद शर्मा, आदि उपस्थित रहे।

पंजाब में 31 जुलाई को रैल, सड़क की आवाजाही ठप्प करने का ऐलान

ज्ञन सहानी / एनसीआर समाचार

पंजाब के बरनाला में 20 जुलाई को केंद्र सरकार द्वारा किसानों के संघर्ष के दौरान किए गए वादों से मुकरने और तोड़ने के विरोध में संयुक्त किसान मोर्चा के आमंत्रण पर बरनाला की अनाज मंडी में भव्य किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह अधिवेशन 18 से 30 जुलाई तक पूरे में 31 जुलाई की सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक ट्रेन और सड़क यातायात अवरुद्ध रहेगा। मंच का संचालन गुरदेव सिंह मंगेवाल ने किया और विभिन्न संगठनों के वक्ताओं में भाकिउ एकता डकोंडा के प्रदेश अध्यक्ष बूटा सिंह बुर्ज गिल, मंजीत धानेर, पंजाब किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष रुलदू सिंह मानसा, भाकिउ काड़ी के प्रदेश उपाध्यक्ष संपूर्ण सिंह चुंगन, करन्तिकारी किसान यूनियन शामिल थे। नेता पवित्रा लाली कलसन, सिंगरा सिंह, मनवीर कौर जसमेल सिंह काले के, जगसीर सिंह छिनीवाल, दर्शन सिंह रायसर, मोहन सिंह रुडेके, कबीले रणजीत सिंह रुडेके लखोवाल, दर्शन सिंह उगोके, मंजीत राज, गुरमेल शर्मा, उजागर सिंह बिहला टोटल हिंद कुलदीप सिंह, कुलदीप सिंह जय किसान आंदोलन, मा बीकर सिंह औलख, गुरप्रीत सिंह गोपी, गुरमीत सिंह सुखपुर बंधु संगठन ने अपने विचार रखे। चावल की सेवा बाबा बाबू सिंह, प्रमुख सेवादार गुरुद्वारा साहिब अडीसर हंडिआया द्वारा की गई थी।

हिमाचल प्रदेश के युवा नशा छोड कर रहे चंदन की खेती

हिमाचल प्रदेश के चार जिले की जमीन से उगल रहे हैं सोना हिमाचल प्रदेश के युवा नशा छोड कर रहे चंदन की खेती हिमाचल प्रदेश के चार जिला हमीरपुर बिलासपुर ऊना व कांगड़ा मे हो रही है चन्दन की खेती हमीरपुर जिला के बटुरडा गाँव के संजय शर्मा ने लगा रखा है 5 कनाल में चन्दन आने वाले समय में संजय शर्मा को कोई भी दुनिया की ताक़त करोड़ पति बनने से नही रोक सकती है। बता दे कि आज की तारीख में सफेद चन्दन की किमत 15000 हजार रुपए किलो की है उन्होंने कहा कि,12वर्ष में चन्दन के पौधे को तयार होने में समय लगता है। 15वर्ष में मार्किट में बेचने को तैयार होता है एक पौधा लगभग दो करोड़ के करीब बिकेगा उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश के लोग नशा मुक्त होकर नशा को त्याग चन्दन की खेती करके आपकी दस पीडी बैठकर भगवान का भजन करेगी। उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि बरसात के मौसम में बंजर जमीन में पौधा रोपण का कार्य शुरू करें जो कि पौधा फौरेसट विभाग की नर्सरी में मिल रहे हैं और साथ में प्राइवेट नर्सरी में भी सफेद चन्दन के पौधे उपलब्ध है ।

भाजपा के मुख्यमंत्रियों से भी समर्थन मांगेंगी मार्गरेट अल्वा

मैं राज्यसभा के कामकाज में ला सकती हूं बदलाव: मार्गरेट अल्वा

एजेंसी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति चुनाव की रणनीति पर चर्चा के लिए आज विपक्षी नेताओं की बैठक हुई। इस बैठक में विपक्ष की संयुक्त उम्मीदवार मार्गरेट अल्वा भी शामिल हुईं। इन सब के बीच मार्गरेट अल्वा का बड़ा बयान सामने आया है। विपक्ष की साक्षा उम्मीदवार मार्गरेट अल्वा ने कहा हा कि मैंने कई राज्यों के सीएम से बात करना शुरू कर दिया है, जो मेरा समर्थन नहीं कर रहे हैं, मैं उनसे मदद मांग रहा हूं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि असम, कर्नाटक के सीएम और योगी आदित्यनाथ, सभी मेरे दोस्त हैं। उन्होंने दावा किया कि मैं राज्यसभा के कामकाज में बदलाव ला सकती हूं। मार्गरेट अल्वा गैर-भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दलों में लगातार बढ़ रहे मतभेद और संख्या बल उनके पक्ष में नहीं होने पर चिंतित नहीं हैं। इसको लेकर उन्होंने कहा कि वह चुनावी नतीजों को लेकर बिल्कुल भी परेशान नहीं हैं, क्योंकि वोटों का गणित कभी भी बदल सकता है। इसके साथ ही अल्वा ने यह भी कहा कि हम यह कह कर पीछे नहीं हट सकते कि हमारे पास पर्याप्त संख्या बल नहीं है। मार्गेट अल्वा को इस बात की भी उम्मीद है कि तृणमूल प्रमुख ममता बनर्जी अपने फैसले पर एक बार फिर से पुनर्विचार करेंगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए अभी पर्याप्त समय है। अल्वा ने कहा कि जब मैं आसपास देखती हूं तो काफी डर लगता है। आप जो चाहते हैं, वह खा नहीं सकते। आप जो चाहते हैं, वह पहन नहीं सकते। आप जो चाहते हैं, वह कह नहीं सकते। आप उन लोगों से मिल भी नहीं सकते, जिनसे आप मिलना चाहते हैं। यह कैसा समय है? अल्वा सोमवार को संसद भवन के सेंट्रल हॉल में विभिन्न दलों के सांसदों से मुलाकात कर उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना अभियान शुरू करेंगी। पूर्व राज्यपाल 80 वर्षीय अल्वा ने कहा कि आज के लोकतंत्र की यह 'त्रासदी' है कि जनता द्वारा दिया गया जनादेश कायम नहीं रह पाता और धनबल, बाहुबल और धमकियों से निर्वाचन की रूपरेखा बदल जाती है। संसद में चल रहे गतिरोध को लेकर अल्वा ने कहा कि यह सब हो रहा है क्योंकि आसन एक ऐसा समाधान निकालने में 'असमर्थ' है जहां विपक्ष की आवाज भी सुनी जाए। उनका कहना था कि एक लोकतंत्र कैसे चल सकता है जब सरकार का यह नारा प्रतीत होता हो,'मेरे अनुसार चलो अन्यथा कोई रास्ता नहीं है।'

अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा साइबर फ्रॉड से बचने के लिये व्यापार मंडल के पदाधिकारियों को किया जागरूक

एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश पुलिस अधीक्षक गोंडा आकाश तोमर के निर्देशन में 21 जुलाई को पुलिस लाईन सभागार में व्यापार मंडल के पदाधिकारियों के साथ अपर पुलिस अधीक्षक गोंडा शिवराज ने बैठक की। जिसमें सर्वप्रथम अपर पुलिस अधीक्षक ने सभी से परिचय प्राप्त कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना। जिसमें कुछ पदाधिकारियों द्वारा शहर क्षेत्र के अंदर कुछ स्थानों पर जाम की स्थिति से निपटने के लिए ट्रैफिक व्यवस्था को और सुदृढ़ करने हेतु सुझाव दिया। सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक ने समस्त पदाधिकारियों को सलाह दी कि समस्त दुकानदार अपनी दुकानों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाए जिससे किसी भी आपराधिक गतिविधि पर नजर रखी जा सके। अपर पुलिस अधीक्षक ने गोष्ठी के दौरान पदाधिकारियों द्वारा बताई गई समस्याओं का उचित निदान करने का आश्वासन दिया। साथ ही साथ अपर पुलिस अधीक्षक ने शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता के अनुरूप आम जनमानस में साइबर जागरूकता अभियान के माध्यम से साइबर अपराधों से बचाव हेतु आवश्यक जानकारियां दी गयी। इस गोष्ठी में जनपद क्षेत्र के व्यापार मंडल के पदाधिकारीगण मौजूद रहे।

बारिश की वजह से पंजाब का हुआ बुरा हाल, बच्चो और बड़ों का घर से निकलना हुआ मुश्किल

एनसीआर समाचार

आम आदमी पार्टी को मोहाली पंजाब में मिल रही पब्लिक की चुनौती पब्लिक परेशान मोहाली को पंजाब का दिल भी कहा जाता है मोहाली में हजारों लोग हाउसिंग सोसायटी में रहते हैं और ज्यादातर लोग प्राइवेट सैक्टर में नौकरी करते है। जिन्होंने अपनी जिंदगी की कमाई मकान खरीदने में लगा रखीं हैं कि हमारे बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके मगर बीस साल से पूडा और अब गबाडा ने पानी की निकासी का उचित प्रबंध नहीं किए जिससे आज बच्चे स्कूल नहीं जा सके घर के बाहर तीन तीन फिट पानी भरा हुआ है। सड़कों का तो इस से भी बुरा हाल है लोगों की आम आदमी पार्टी सरकार से अनुरोध है कि जिस बिभाग ने सड़कों ब हाउसिंग सोसायटी की डीपीआर तैयार की है उस पर कार्रवाई करे मोहाली में रहने वाले लोग पानी की निकासी न होने पर धरना करने पर मजबूर होना पड़ रहा है मोहाली में हजारों लोगों ने पंजाब सरकार से अपील करते हुए कहा कि सरकार इस ओर ध्यान दें जिससे कि हम समय पर अपने बच्चों को स्कूल में भेज सके ब हम भी टाइम पर अपनी ड्यूटी पर जा सके।

संजय राउत का दावा, शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार का आधार मजबूत नहीं

एजेंसी

मुंबई। शिवसेना सांसद संजय राउत ने रविवार को दावा किया कि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार का आधार मजबूत नहीं है और यह अपने ही अंतर्विरोध के कारण गिर जाएगी।

राउत ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''हम भारतीय जनता पार्टी की तरह लाउडस्पीकर पर तारीख नहीं देंगे। लेकिन यह सरकार निश्चित रूप से लंबे समय तक चलने वाली नहीं है।'' शिवसेना के मुख्य प्रवक्ता राउत ने कहा कि शिंदे सरकार के गठन के लगभग एक महीने बाद भी किसी विभाग का आवंटन नहीं किया गया है। राउत ने रविवार को दावा किया, ''चोरी छिपे गठित की गई दोहरा मानदंड रखने वाली यह सरकार अपने ही अंतर्विरोध से गिर जाएगी। यह मजबूत नींव पर टिकी हुई नहीं है।'' भाजपा की महाराष्ट्र इकाई के प्रमुख चंद्रकांत पाटिल ने इससे पहले शनिवार को कहा था कि पार्टी ने (पूर्व मुख्यमंत्री) देवेंद्र फडणवीस के बजाय शिवसेना के बागी नेता शिंदे को राज्य का मुख्यमंत्री बनाने का भारी मन से निर्णय लिया था। फडणवीस द्वारा राउत को एक ऐसा 'लाउडस्पीकर' बताने जिससे लोग आजिज आ गये हैं, शिवसेना सांसद ने कहा कि उनका ''लाउडस्पीकर महाराष्ट्र के लोगों की आवाज है'' और वह उनके विचारों को प्रकट करना जारी रखेंगे। उन्होंने कहा, ''यहां तक कि फडणवीस भी मेरा लाउडस्पीकर सुनते हैं।

हमें जो कुछ कहने की जरूरत होती है निर्भिक होकर कहते हैं। '' उन्होंने कहा, ''शिवसेना का लाउडस्पीकर 56 वर्षों से बज रहा है और लोग हमेशा यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि यह क्या बोल रहा है।'' शिवसेना नेता ने कहा, ''आप अपनी सरकार को देखिए। आप दिल्ली कितनी बार जाते हैं? एक महीने बाद भी विभागों का बंटवारा नहीं हुआ है।'' शिवसेना के साथ पूर्व में भाजपा के सरकार बनाने संबंधी फडणवीस के बयान को लेकर राउत ने उन पर निशाना साधा। उन्होंने सवाल किया, ''वह किस शिवसेना की बात कर रहे हैं? क्या (पार्टी संस्थापक) बालासाहेब और उद्धव ठाकरे के बिना शिवसेना हो सकती है? उन्होंने कहा कि शिवसैनिकों और महाराष्ट्र के लोगों में इसे लेकर रोष है कि बालासाहेब के बेटे को धोखा दिया गया और मुख्यमंत्री पद छोड़ने के लिए मजबूर किया गया।

घूस मांगने वाला तलाठी फंसा भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के जाल में, दूसरी किस्त में की थी 25000 रुपये की मांग

समीर वानखडे

चंद्रपूर जिले के राजुरा तहसील कार्यालय तलाठी को रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार किए जाने की एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। तालुका मुख्यालय से महज 10 किमी की दूरी पर स्थित वरूर रोड के तलाठी विनोद गेडाम को बालू तस्करी में पकड़े ट्रक को छोड़ने की मांग की रिश्वत की दूसरी किस्त लेते हुए भ्रष्टाचार निरोधक विभाग ने जाल बिछाकर गिरफ्तार किए जाने की जानकारी प्राप्त हुई है। प्राप्त जानकारी अनुसार वरूर रोड तलाठी विनोद गेडाम ने 8 फरवरी को बालू तस्करी करने वाले एक ट्रक को पकड़ा था,

लेकिन ट्रक को नियमानुसार तहसील कार्यालय में जमा करवाकर बिना कोई कानूनी कार्यवाही किये संबंधित तलाठी ने ट्रक मालिक से 70 हजार रुपये रिश्वत की मांग की। ट्रक मालिक ने उसी समय 35000 रुपये का भुगतान किया और ट्रक को छोड़ दिया गया और शेष राशि का भुगतान बाद में करने का निर्णय लिया गया। तलाठी और ट्रक मालिक के बीच समझौता हुआ और बाद में 25000 रुपये देने पर सहमति बनी लेकिन ट्रक मालिक के रिश्वत की शेष राशि देने के लिए राजी नहीं होने पर उसने भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में शिकायत दर्ज कराई। प्राप्त शिकायत के आधार पर भ्रष्टाचार निरोधक विभाग द्वारा जाल बिछाकर आज 19 जुलाई को संबंधित तलाठी के खिलाफ़ रिश्वत का मामला दर्ज किया है, समाचार लिखे जाने तक विरूर स्टे। थाने में कार्रवाई चल रही है। यह सफल कार्रवाई रिश्वत विरोधी विभाग नागपुर पुलिस अधीक्षक राकेश ओला, अपर पुलिस अधीक्षक मधुकर गीते के मार्गदर्शन में चंद्रपुर पुलिस उप अधीक्षक अविनाश भामरे, पुलिस कर्मचारी की टीम ने किया।

ऐतिहासिक संतपुरा शिवपीठ के विकास के लिए जिला प्रशासन से की बातचीत

एनसीआर समाचार

ओडिशा लोक सेवा संगठन की ओर से संस्थापक शोवन आचार्य एवं जिला प्रशासक विकास स्वयं के नेतृत्व में डेराबिश प्रखंड संतपुरा स्थित ऐतिहासिक गरवेस्वर शिवपीठ के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए केंद्रपाड़ा जिला प्रशासन से विचार विमर्श किया गया।

गौरतलब है कि इस ऐतिहासिक जनजाति को 2009 से पर्यटन क्षेत्र के रूप में मान्यता मिली हुई है, लेकिन प्रचार के अभाव में इसका उतना विकास नहीं हो पाया है। मंदिर की खुदाई के दौरान इसकी मिट्टी के नीचे कई प्राचीन बौद्ध मूर्तियाँ, पत्थर आदि मिले हैं। लेकिन यह पीठ अभी भी उपेक्षित अवस्था में है। यदि उचित प्रचार-प्रसार किया जाए और सुविचारित योजना बनाई जाए, तो इस क्षेत्र में कुछ रोजगार पैदा होगा और विदेशी पर्यटक भी आकर्षित होंगे।

संगठन के सलाहकार मेजर भरत जेना, धीरेंद्र शतपथी ने कहा कि जिला प्रशासन को इस संबंध में तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। इस कार्यक्रम में संतपुर के सुरेश साहू और राजेंद्र दास के नेतृत्व में संतपुर के 40 से अधिक निवासियों ने एक पत्र दिया आलोक साहू, झेली दास, संदीप दास, भंडारानी राउत ने कार्यक्रम का आयोजन सैकड़ों ग्रामीणों के हस्ताक्षर से किया।

जिपं सदस्य लोकेंद्रसिंह राजपूत का बेगमखेड़ी में देवनारायण मंदिर पर हुआ भव्य स्वागत

एनसीआर समाचार

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में ऐतिहासिक बहुमत हासिल कर भाजपा ने अपना झंडा पहराया है। शाजापुर जिले में 13 सीटों में से 11 पर भाजपा समर्थित प्रत्याशियों ने जीत हासिल की है। इस दौरान वार्ड नंबर 13 से जिला पंचायत सदस्य लोकेंद्र सिंह राजपूत खिजड़िया ने जित हासिल की है। देखा जाए तो जिनका हर गांव में स्वागत किया जा रहा है इसी दौरान शुजालपुर जनपद पंचायत अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत बोल्दा बेगमखेड़ी में नवनियुक्त सरपंच कमल सिंह पटेल के द्वारा ग्राम बेगमखेड़ी देवनारायण मंदिर पर लोकेंद्रसिंह राजपूत का फूल माला एवं

साफा बांधकर स्वागत किया गया। जिसके चलते गांव के गली मोहल्ला मैं बड़े ही धूमधाम से ढोल धमाके के साथ जुलूस निकाला गया यहां मंदिरों में दर्शन करते हुए गांव की कन्याओं द्वारा लोकेंद्र सिंह राजपूत को तिलक लगाकर सम्मानित किया गया जिसमें उपस्थित पूर्व सरपंच माखनसिंह अंजना एवं पूर्व सरपंच अमरसिंह कीर, ज्ञान सिंह आंजना, नंदराम, जीतमल उपस्थित रहे।

मोहर्रम से पहले सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें अधिकारी जिला कलक्टर मोहर्रम की तैयारियों को लेकर बैठक सम्पन्न

एनसीआर समाचार

राजस्थान आगामी दिनों में जिला स्तरीय अधिकारियों का दौरा कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की जाएगी। पुलिस भी 24 घण्टे मुस्तैद रहकर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं पर नजर रखेगा। जिला कलक्टर अंश दीप ने आज पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर भावना गर्ग के साथ मोहर्रम की तैयारियों की टिप्पणी की। उन्होंने अजमेर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम को निर्देश दिए कि कायड़ विश्राम स्थली एवं दरगाह क्षेत्र में सफाई एवं अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। चांदनी रात से ही चौकी धुलाई, ताजिया जुलूस, फरीद बाबा का

चिल्ला खुलने, अलम का जुलूस, हाईदौस एवं बयान शहादत जैसे कार्यक्रम में सभी विभाग अपने से संबंधित कार्यवाही को पूरी तरह से बड़े ध्यान से अमल में लाए गे। उन्होंने जलदाय विभाग को निर्देश दिए कि मेला क्षेत्र में पर्याप्त जलापूर्ति सुनिश्चित की जाए। महोर्रम की समस्त रस्मों के दौरान दरगाह क्षेत्र में प्रतिदिन दो बार जलापूर्ति होनी चाहिए। समस्त हैण्डपम्पों की मरम्मत की जाए। समस्त लीकेज ठीक हों तथा ताजीया मार्ग पर लीकेज खत्म करने के लिए अलग दल का गठन करा जाएगा। दरगाह क्षेत्र में पूरे प्रेशर से सप्लाई होनी चाहिए। जुम्मे की नमाज के दिन अतिरिक्त सप्लाई दी जाएगी। बिजली, टेलिफोन तथा केबल के झूलते तारों को टाटा पॉवर सही करें एवं आपूर्ति को सुचारू रखा जाए। टाटा पावर द्वारा समस्त प्रकार की तारें उपर की जाएगी। क्षेत्र के दुकानदार व्यापारियों से आग्रह किया गया है कि वे प्रशासन द्वारा बनवायी जाने वाली सफेद लाइन से आगे अपनी दुकानों का सामान नहीं रखेंगे । चिकित्सा विभाग को मौसमी बीमारियों की रोकथाम एवं फोगिंग के निर्देश दिए गया है। रसद एवं चिकित्सा विभाग को खाने पीने की वस्तुओं एवं बर्फ की लगातार जांच कर सैंपल लेने के लिए निर्देशित किया गया है। पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट ने यातायात विभाग को निर्देश दिया है कि ओवरलोड यात्री वाहनों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। इसके अलावा मेले में प्रतिबंधित ईलाकों में वाहनों के प्रवेश पर भी नजर रखी जाएगी। पुलिस अधिकारी कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए काम करेंगे। सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता रखने के लिए जिला कलक्टर द्वारा प्रशासन, पुलिस, दरगाह कमेटी, आयोजन से जुड़ी संस्थाओं तथा गणमान्य व्यक्तियों की एक कमेटी गठित की जाएगी। इसके द्वारा लिए गए निर्णय सभी पर लागू होंगे। जायरीन की सुरक्षा को सर्वोपरी रखते हुए सुरक्षा संबंधी कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर पर नगर निगम के आयुक्त सुशील कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर भावना गर्ग, अजमेर विकास प्राधिकरण के उपायुक्त किशोर कुमार, उपखंड अधिकारी महावीर सिंह, जिला रसद अधिकारी विनय कुमार शर्मा, दरगाह कमेटी के उपाध्यक्ष मुनव्वर खान, दरगाह दीवान के प्रतिनिधि नसीरूद्दीन चिश्ती, अंजुमन सैयदजादगान के सदर सैयद गुलाम किबरीया चिश्ती, सदस्य सैयद इमरान चिश्ती, अंजुमन यादगार के अध्यक्ष शेखजादाब सुब्हान चिश्ती, सचिव जबरूल हक चिश्ती, पंचायत अंदर कोटियां ऑडिटर एस. एम. अकबर, कार्यवाहक अध्यक्ष मुख्तार बक्श, पार्षद अजहर खान एवं शाकिर शाह उपस्थित रहेंगे ।

संक्षिप्त समाचार

अजमेर मसूदा के ग्राम पंचायत पर लगा 300 करोड़ के घोटाले का आरोप

घनश्याम दास

मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच व कोरम ग्राम पंचायत पर की तालाबंदी सरपंच ने बताया कि नागौर जिले में पंचायत राज मंत्री रमेश मीणा द्वारा नरेगा के तहत 300 करोड रुपए के अनावश्यक सरपंचों के खिलाफ घोटाले का आरोप लगाया गया, जिसके तहत राजस्थान के सभी सरपंचों में भारी आक्रोश के कारण सरपंच संघ द्वारा आह्वान करने के पक्ष में आज ग्राम पंचायत मसूदा जिला (अजमेर) के द्वारा मीटिंग का बहिष्कार कर तालाबंदी की गई।जिसमें उपसरपंच लक्ष्मण माली, सरपंच प्रतिनिधि गोविंद धूत, जसराज पवार, जितेंद्र सैनी, गिरिराज सिंह, संजय जैन, बाबू रावत, राकेश नागर, कैलाश माली इत्यादि वार्ड पंच गण मौजूद रहे।

हरियाणा में 20 जुलाई को क्षेत्र गांव में बाबा छबीलदास जी महाराज की स्मृति मे भंडारे का आयोजन करवाया गया

सतीश शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा में 20 जुलाई रेवाड़ी क्षेत्र के गांव सीहा में बाबा छबीलदास जी महाराज की स्मृति मे भंडारे का आयोजन करवाया गया था। यह पर सुबह के समय हवन और भंडारे का आयोजन किया गया था। वह पर सभी भक्तो और कलाकारों ने बाबा का गुणगान किया था। उसके बाद इस आयोजन के बाद देसी घी का प्रसाद भी भक्तों और कलाकारों खिलाया गया था फिर बाद वहां पर तरह-तरह की झांकियां भी निकाली गई थी।

हरियाणा के गांव एक बाबा खेता नाथ मंदिर में सभी ग्राम वासियों ने मिलकर के सावन महीने में पेड़ पौधे लगाए

सतीश शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा में मिशन महेंद्रगढ़ ने अपना जल विद माय तलैया के तहत आज सीमा गांव में बाबा खेता नाथ मंदिर में सभी ग्राम वासियों ने मिलकर के सावन महीने में पेड़ पौधे लगाए। वह मंदिर के चारों तरफ साफ सफाई की और जिसमें सभी ग्रामवासी सेल्फी विद माय तलैया में शामिल होकर के पेड़ पौधे लगाए और उन्होंने बाबा का आशीर्वाद लिया था।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मलोट में किया औचक निरीक्षण, लिए गए सैंपल

ज्ञान साहनी / एनसीआर समाचार

आम जनता के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए डॉ. सिविल सर्जन डॉ. रंजू सिंगला मुक्तसर साहिब के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग द्वारा मलोट में दूध, पनीर व अन्य मिलावटी उत्पादों की जांच का औचक निरीक्षण किया गया। इस बीच जिला खाद्य निरीक्षक अभिनव खोसला ने बताया कि 2022-23 में 6 दूध, 1 देसी घी, 1 नमकीन, 1 इमली, 1 रु-अफजा (सिरप), 1 कनोला घी समेत 11 सैंपल लिए गए। जिन्हें जांच के लिए भेज दिया गया है और 15-20 दिनों में रिपोर्ट आ जाएगी। इस दौरान उन्होंने कहा कि अगर कोई दुकानदार ऐसा करके लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ करता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

विद्यार्थियों को क्षय रोग के लक्षणों व क्षय रोग से होने वाले दुष्प्रभाव की दी जानकारी

घनश्याम दास

मसूदा जुलाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मसुदा के विद्यार्थियों को एनटीईपी प्रोग्राम की जानकारी दी गई। क्षयरोग विभाग की तरफ से एसटीएस कमल सेन ने विद्यार्थियों को क्षय रोग के लक्षण क्षय रोग से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया एवं भारत सरकार की तरफ से नि:शुल्क टीवी की जांच एवं नि:शुल्क टीवी की दवाई के बारे में संपूर्ण जानकारी दी। सरकार की तरफ से मिलने वाले ₹500 प्रति माह निक्षय पोषण योजना के तहत की भी जानकारी विद्यार्थियों को दी गई। विद्यार्थियों को बताया गया कि, 2 सप्ताह से अधिक अगर किसी को खांसी हो तो टीवी हो सकती है, जिसका वजन लगातार गिर रहा है। वजन कम हो रहा है इसको टीवी हो सकती है। रात के समय में पसीना आकर बुखार आना भी टीवी के लक्षण है। बलगम आने पर नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर अपनी जांच कराएं। जांच बिल्कुल मुफ्त की जाती है। कमल सेन के साथ डॉक्टर रजनी मीणा गौरव परिहार जीत संस्था के विनोद सिंह रावत विद्यालय के प्रधानाचार्य सीताराम शर्मा व विद्यार्थी मौजूद रहे।

रतलाम में भारतीय जनता पार्टी के प्रहलाद पटेल की 9245 वोट से हुई जीत

पवन धाकड़ / एन सी आर समाचार

मध्य प्रदेश रतलाम में भारतीय जनता पार्टी ने किया कब्जा महापौर में प्रहलाद पटेल की 9245 वोट से विजय हुए। वहीं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट करते हुए महापौर प्रत्याशी श्री प्रहलाद पटेल और कार्यकर्ताओं को शानदार विजय की हार्दिक बधाई भी दी है। साथ ही मयंक जाट को हार का सामना करना पड़ा है जो कांग्रेसी प्रत्याशी है।

मुशीर मेमोरियल कप सहसवान का पुलिस क्षेत्राधिकारी चंद्रपाल सिंह ने किया उद्घाटन

उत्तर प्रदेश बदायूं सहसवान में नगर सहसवान में प्रमोद इंटर कॉलेज की फील्ड में मुशीर मेमोरियल कप का उद्घाटन पुलिस क्षेत्राधिकारी चंद्रपाल सिंह ने किया। आपको बता दें टूर्नामेंट कि 19 जुलाई से 31 जुलाई तक चलेगा फाइनल 1 अगस्त को होगा टूर्नामेंट में कुल 16 टीमें भाग ले रही हैं। सैयद हसन मुख्तार ने बताया ऐसे ही टूर्नामेंट हम लोग हर साल कराते हैं। इस बार भी कराया जा रहा है जिसमें चुनिंदा टीमों को लिया गया है टूर्नामेंट की व्यवस्था करने वाले लोग, सैयद हसन मुख्तार, शादाब अंसारी, वसीम अकरम, मुनीर अहमद और इमरान खान हैं।

1 अगस्त से लगेगा बसों वह टैकसीओं में वाहन लोकेशन ट्रेकिंग डिवाइस सिस्टम

ज्ञान साहनी / एनसीआर समाचार

पंजाब राज्य में सभी वाहनों की निगरानी के लिए 1 अगस्त से सभी यात्री सेवा वाहनों पर वाहन स्थान ट्रैकिंग डिवाइस प्रणाली शुरू की जाएगी। शुरुआत में यह सिस्टम बसों, मिनी बसों और टैक्सियों में लगाया जाएगा इसके साथ ही राज्य सरकार ने 'एक बस एक परमिट' को वाहन पोर्टल से जोड़ने का भी फैसला किया। परिवहन मंत्री लालजीत सिंह भुल्लर ने चंडीगढ़ में क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण कार्यालयों के कामकाज की समीक्षा बैठक के दौरान सभी परमिट धारकों से वाहन पोर्टल पर मोटर वाहन कर का भुगतान करने की अपील की।

मोहर्रम की तैयारियों को लेकर अजमेर जिला कलक्टर ने सभी विभागों को दिए निर्देश

एनसीआर समाचार

जिला कलक्टर अंश दीप ने सभी विभागों को निर्देश दिए है कि आगामी दिनों में आयोजित होने वाले मोहर्रम से पूर्व तैयारियां पूरी कर लें। पानी, बिजली, सफाई, सड़क, सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाएं चाकचौबंद की जाए। आगामी दिनों में जिला स्तरीय अधिकारियों का दौरा कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की जाएगी।

पुलिस भी 24 घण्टे मुस्तैद रहकर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं पर नजर रखेगी। जिला कलक्टर अंश दीप ने आज पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर भावना गर्ग के साथ मोहर्रम की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने अजमेर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम को निर्देश दिए कि कायड़ विश्राम स्थली एवं दरगाह क्षेत्र में सफाई एवं अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। चांद रात से ही चौकी धुलाई, ताजिया जुलूस, फरीद बाबा का चिल्ला खुलने, अलम का जुलूस, हाईदौस एवं बयान शहादत जैसे कार्यक्रम में सभी विभाग अपने से संबंधित कार्यवाही को पूरी गम्भीरता से अमल में लाए।

उन्होंने जलदाय विभाग को निर्देश दिए कि मेला क्षेत्र में पर्याप्त जलापूर्ति सुनिश्चित की जाए। महोर्रम की समस्त रस्मों के दौरान दरगाह क्षेत्र में प्रतिदिन दो बार जलापूर्ति होनी चाहिए। समस्त हैण्डपम्पों की मरम्मत की जाए। समस्त लीकेज ठीक हों तथा ताजीया मार्ग पर लीकेज खत्म करने के लिए अलग दल का गठन किया जाए। दरगाह क्षेत्र में पूरे प्रेशर

से सप्लाई होनी चाहिए। जुम्मे की नमाज के दिन अतिरिक्त सप्लाई दी जाए। बिजली, टेलिफोन तथा केबल के झूलते तारों को टाटा पॉवर सही करें एवं आपूर्ति को सुचारू रखा जाए। टाटा पावर द्वारा समस्त प्रकार की तारें उपर की जाएगी। क्षेत्र के दुकानदार व्यापारियों से आग्रह किया गया कि वे प्रशासन द्वारा बनवायी जाने वाली सफेद लाइन से आगे अपनी दुकानों का सामान नहीं रखें। चिकित्सा विभाग को मौसमी बीमारियों की रोकथाम एवं फोगिंग के निर्देश दिए गए। रसद एवं चिकित्सा विभाग को खाने पीने की वस्तुओं एवं बर्फ की लगातार जांच कर सैंपल लेने के लिए निर्देशित किया गया। पुलिस अधीक्षक श्री चुनाराम जाट ने यातायात विभाग को निर्देश दिए कि ओवरलोड यात्री वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

इसके अलावा मेले में प्रतिबंधित ईलाकों में वाहनों के प्रवेश पर भी नजर रखी जाए। पुलिस अधिकारी कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए काम करेंगे। सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता रखने के लिए जिला कलक्टर द्वारा प्रशासन, पुलिस, दरगाह कमेटी, आयोजन से जुड़ी संस्थाओं तथा गणमान्य व्यक्तियों की एक कमेटी गठित की जाएगी। इसके द्वारा लिए गए निर्णय सभी पर लागू होंगे। जायरीन की सुरक्षा को सर्वोपरी रखते हुए सुरक्षा संबंधी कार्यवाही की जाएगी।इस अवसर पर नगर निगम के आयुक्त श्री सुशील कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर भावना गर्ग, अजमेर विकास प्राधिकरण के उपायुक्त श्री किशोर कुमार, उपखंड अधिकारी महावीर सिंह, जिला रसद अधिकारी विनय कुमार शर्मा, दरगाह कमेटी के उपाध्यक्ष मुनव्वर खान, दरगाह दीवान के प्रतिनिधि नसीरूद्दीन चिश्ती, अंजुमन सैयदजादगान के सदर सैयद गुलाम किबरीया चिश्ती, सदस्य सैयद इमरान चिश्ती, अंजुमन यादगार के अध्यक्ष शेखजादाब सुब्हान चिश्ती, सचिव जबरूल हक चिश्ती, पंचायत अंदर कोटियां ऑडिटर एस. एम. अकबर, कार्यवाहक अध्यक्ष मुख्तार बक्श, पार्षद अजहर खान एवं शाकिर शाह उपस्थित रहे।

भीलवाड़ा की आर्टिस्ट रिया विश्व स्तर पर मचा रही धमाल, स्वर्ण पदक और श्रेष्ठ पुरस्कार के लिए हुआ चयन

घनश्याम / एनसीआर समाचार

राजस्थान भीलवाड़ा जिले के एक छोटे से गांव बागौर निवासी रिया वैष्णव ने आर्ट कला में विश्व स्तर पर धमाल मचा दिया है रिया एफएजी फॉर्चून आर्ट गैलरी इंटरनेशनल आर्ट अचीवमेंट अवॉर्ड 2022 में ऑनलाइन वार्षिक पुरस्कार में भाग लिया है जहा अंतरराष्ट्रीय कला स्पर्धा में रिया वैष्णव अव्वल रही। कलाकृति और भावनाओ को उकेर कर प्रदर्शन करने में 28 कलाकारों ने पुरस्कार जीते हैं जिसमे रिया वैष्णव विश्व में प्रथम रही रिया वैष्णव ने अपनी कृति चौखट में अपनी भावनाओं और रंगों का खूबसूरती से सम्मिश्रण करते हुए अद्भुत कलाकृति बनाई है। रिया की दूसरी रचनाएं भी बहुत खूबसूरत है पर ₹चौखट₹ स्वर्ण पदक और श्रेष्ठ पुरस्कार के लिए सम्माननीय निर्णायक मंडल द्वारा निष्पक्ष रूप से चुनी गई है। रिया ने अपनी कला से केनवास पर जीती जागती घर की चौखट पर जान डाल दी है। खुबसूरती से रंगो की सुंदरता से रिया की आर्ट का विश्व दीवाना हो गया। रिया ने अपनी कला से प्रकृति में जान डाल दी और अपनी भावनाओं को केनवास में संजोकर मन को प्रफुल्लित कर दिया। अभी रिया महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल उदयपुर में 10वीं की छात्रा है और भविष्य में विश्व विख्यात कला संस्थानों में से एक किसी में अपनी स्नातक और परास्नातक की यूनिवर्सिटी में फाइन आर्ट में अपनी पढ़ाई करना चाहती है।

पुलिस की पहल से ग्रामीण हुए गदगद, पुलिस अधीक्षक ने चलाया जागरूकता अभियान

घनश्याम दास

सामाजिक जागरूकता अभियान की तहत ग्राम पंचायत कैरोट मैं भिनाय थानाधिकारी महावीर प्रसाद मीणा ने आमजन की हर समस्या का समाधान बताकर किया खुश। भिनाय पुलिस द्वारा ग्राम पंचायत कैरोट में जिला पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट के आदेशों की पालना में पुलिस जनसहभागिता जनसुनवाई शिविर का आयोजन कैरोट के श्यामचौक पर रखा गया, जहां समस्त ग्रामवासियों के बीच जनसुनवाई में की गई। थानाधिकारी महावीर प्रसाद मीणा ने ग्रामीणों से रूबरू होकर नशे पर अंकुश लगाने हेतु समझाया गया। साथ ही जनसुनवाई में उपस्थित आमजन व बच्चों और महिलाओं को कानूनी अपराधों व सायबर संबंधी

अपराध को रोकने की जानकारी दी गई और यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी गई। स्वच्छ अभियान के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि, आप अपने घर का कूड़ा कचरा झाड़ू लगाकर दूसरे घर के सामने नहीं धकेले उसको एकत्रित कर जला दे या फिर कहीं दूर डालकर हर गली मोहल्लों को स्वच्छ बनाये, जिससे आप व आपका परिवार और गाँव डेंगू और मलेरिया जैसी बहुत सी बीमारियों से बच जाएगा। किसी भी प्रकार का नशा करने व नशे का कारोबार करने वालों की सूचना देने के लिए ग्रामीणो को जागरूक किया गया और सभी ग्राम वासियों को प्यार, प्रेम व सद्भावना बनाये रखने को कहा गया। जनसुनवाई कार्यक्रम को देख समस्त ग्रामीणों मैं खुशी की लहर छा गई। वहीं थानाधिकारी महावीर प्रसाद मीणा ने आमजन को शादी या अन्य कार्यक्रम में डीजे बजाने पर अंकुश लगाते हुए, डीजे वालों से अति शीघ्र भिनाय थाने पर बुलाकर पहले प्यार से समझाऊँगा और बात नहीं माने तो फिर भी डीजे बजाने की सूचना मुझे मिली तो मैं कानूनी तौर पर कार्यवाही करके सीधा अंदर डाल के फिट कर दूंगा। इस दौरान कैरोट दरबार सरपंच प्रतिनिधि अनिरुद्ध सिंह राठौड़, पूर्व सरपंच रामधनसाहू, उप सरपंच कैलाश जागिड़, सूरजकरण चौधरी, नेमीचंद शर्मा, छोटे बना सा हुक्म, पूर्व सरपंच धनालाल कीर, बाबूलाल मेवाड़ा,कन्हैयालाल कुमावत कादोलाई, राधेश्याम दास कामड़, छितर प्रजापत उपस्थित रहें।

आवासन मंडल के अधिकारियों पर लापरवाही का आरोप

स्कूल मैदान में पानी भरने से एक हजार पौधे नष्ट होने की कगार पर

किशन वैष्णव

शाहपुरा कस्बे के कुंड गेट स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के खेल मैदान में पानी भरने से सरकार के हरित पाठशाला अभियान में लगे लाखों रूपयों के ओषधीय एवं अन्य पौधों को नुकसान पहुंच रहा है। पानी भरने से पौधे गल कर नष्ट होने की कगार पर हैं। इसका मुख्य कारण है कि राजस्थान आवासन मंडल द्वारा अलॉट की गई कॉलोनी की मुख्य सड़क के नीचे पाइप नहीं लगाने से पूरा पानी स्कूल के खेल मैदान में भर जाता है जिससे मैदान में लगे हरित पाठशाला अभियान के तहत लाखों रूपयों के पौधे हर वर्ष खराब हो जाते हैं, लेकिन अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य देबीलाल बैरवा ने राजस्थान आवासन मंडल पर

लापरवाही का आरोप लगाया है कि, हाउसिंग बोर्ड के अधीन बनी कॉलोनी के सड़क के नीचे पाइप लगाकर पानी की निकासी सही तरीके से नहीं करने के कारण पूरा पानी स्कूल के खेल मैदान में भर जाता है और मैदान तलैया बन जाता है, जिससे मैदान में लगे एक हजार औषधीय और अन्य पौधों को नुकसान पहुंच रहा है। देवीलाल बैरवा का कहना है कि हरित पाठशाला अभियान में प्रतिवर्ष सरकार लाखों रुपए के पेड़ पौधे लगाती है और हम ही इनके नियमों को ताक में रख कर कार्य करेंगे तो पर्यावरण संरक्षण केसे करेंगे। मामले को लेकर अधिकारियों को पूर्व में भी अवगत कराया था पर किसी प्रकार संज्ञान नही लिया गया, उन्होंने जल्द से जल्द कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा, जिस सीमा में पानी भर रहा है वह अतिक्रमण युक्त जमीन है जिसमे विद्यालय ने अतिक्रमण कर पेड़ पौधे लगा रखे हैं राजस्व विभाग से संपर्क कर जल्द ही नपवाकर चार दिवारी करवाएंगे।

राजगढ़ में त्रिस्तरीय पंचायत एवं निकाय चुनाव सम्पन्न

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश जिला राजगढ़ पुलिस की आम जन, प्रत्याशी एवं जनप्रतिनिधियों से अपील है कि त्रिस्तरीय पंचायत एवं निकाय चुनाव में सम्पन्न हो चुके है। मतगणना को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने में पुलिस प्रशासन को आप सभी के सहयोग की सख्त जरूरत है। मतगणना केंद्र पर शांति बनाये रखना अनिवार्य है, यह हर नागरिक का कृतव्य है। मतगणना में किसी भी प्रकार का अवरोध व अशांति उत्पन्न ना करें। किसी के दबाव व बहकावे में न आएं एवं किसी के साथ उदंडता का प्रयोग न करें। चुनाव आयोग की गाइडलाइन का पालन करते हुए शांति व्यवस्था बनाये रखने में प्रशासन एवं पुलिस का सहयोग करें। 20 जुलाई 2022 को 10 नगरीय निकाय की मतगणना सम्पन्न कराई जाएगी। पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था की गई है साथ ही चेतावनी दी जाती है कि मतगणना प्रक्रिया में किसी ने भी अप्रिय घटना कारित कर बाधा उत्पन्न की तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। जिला दंडाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी महोदय द्वारा धारा 144 प्रभावशील की गई है जो आगामी आदेश तक जारी रहेगी। धारा 144 प्रभावशील रहने वाले स्थानों पर कोई जुलुस, रैली, निकालने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा हुआ है।

विजयपुर नगरी निकाय द्वितीय चरण के मतदान के परिणाम घोषित

खरवेन्द्र शर्मा / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश विजयपुर नगरीय निकाय निर्वाचन के अंतर्गत द्वितीय चरण में संपन्न हुए नगर परिषद विजयपुर के निर्वाचन परिणाम बुधवार को मतगणना के पश्चात रिटर्निंग ऑफिसर एवं एसडीएम नीरज शर्मा द्वारा प्रेक्षक आरपी भारती की उपस्थिति में घोषित किये गये। गत 13 जुलाई को संपन्न हुए मतदान के उपरांत नगर परिषद विजयपुर के 15 वार्ड पार्षदों के निर्वाचन परिणाम शासकीय आईटीआई कॉलेज विजयपुर में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई और मतगणना के बाद घोषित करते हुए निर्वाचित अभ्यर्थियों को विजयपुर एसडीएम नीरज शर्मा द्वारा निर्वाचन प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। जिसमें निर्वाचन परिणामों के अनुसार नगर परिषद विजयपुर के वार्ड क्र. 01 से निर्वाचित श्रीमती गीता मुकेश जाटव भाजपा को 337, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती इन्द्रा रामकिशोर अटेरिया (कांग्रेस) को 254 तथा निर्दलीय श्रीमती मीना जाटव को 170 वोट मिलें। वार्ड क्र. 02 से निर्वाचित श्रीमती माया बाई बाथम (भाजपा) को 217, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती बूंदी बानो उर्फ मेहबूदी (कांग्रेस) को 208 मत प्राप्त हुए है। वार्ड क्र. 03 से निर्वाचित श्रीमती निर्मला महेन्द्र मांझी (भाजपा) को 306, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती मंजू आदिवासी (कांग्रेस) को 165 तथा निर्दलीय श्रीमती ममता आदिवासी को 31 मत प्राप्त हुए है। वार्ड क्र. 04 से निर्वाचित श्रीमती राजकुमारी त्रिवेदी (निर्दलीय) को 195, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती नीलम उदयभान पाराशर (कांग्रेस) को 187, श्रीमती शाहजहां बानो (निर्दलीय) को

61 तथा श्रीमती रूबीना (भाजपा) को 40 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 05 से निर्वाचित श्री सोनेराज कुशवाह (कांग्रेस) को 308, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री ईश्वरलाल राठौर (भाजपा) को 266, श्री संजय कुमार (निर्दलीय) को 242 तथा श्री पुष्पराज राठौर (निर्दलीय) को 09 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 06 से निर्वाचित श्री शिवचरण कुशवाह (कांग्रेस) को 405, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री भगवान सिंह कुशवाह (भाजपा) को 302, श्री सुरेन्द्र (निर्दलीय) को 56 तथा श्रीमती रीनू मुरारी (आम आदमी पार्टी) को 39, श्रीमती मुकेशी (निर्दलीय) को 08, श्री जगदीश (निर्दलीय) को 03, श्री माधो सिंह (निर्दलीय) को 02 वोट मिलें है।वार्ड क्र. 07 से निर्वाचित श्री सवन जाटव (कांग्रेस) को 231, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री राम सिंह जाटव (निर्दलीय) को 191, श्री श्रीनिवास (निर्दलीय) को 166 तथा श्री राजाराम (निर्दलीय) को 152, श्री मोतीराम जाटव (भाजपा) को 83, श्री पूरनलाल (निर्दलीय) को 12 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 08 से निर्वाचित श्रीमती प्रियंका मुकेश शिवहरे (कांग्रेस) को 217, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती संजू नामदेव (भाजपा) को 133, श्रीमती सूरज देवी (निर्दलीय) को 56 तथा श्रीमती नीतू गोस्वामी (निर्दलीय) को 33, श्रीमती रीना कुशवाह (आम आदमी पार्टी) को 02 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 09 से निर्वाचित श्री मनोज कुमार बंसल (कांग्रेस) को 288, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री रामअवतार शर्मा (भाजपा) को 135 मत प्राप्त हुए। वार्ड क्र. 10 से निर्वाचित श्रीमती मुन्नी बाई राधेश्याम (भाजपा) को 153, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती रजनी देवी (कांग्रेस) को 140, श्रीमती सुनीता (निर्दलीय) को 56 तथा श्रीमती गौरीबाई (निर्दलीय) को 23 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 11 से निर्वाचित श्री जगदीश प्रसाद मित्तल (कांग्रेस) को 194, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री केदारलाल (भाजपा) को 91, श्री मनीशंकर (निर्दलीय) को 31 तथा श्री कुलदीप (निर्दलीय) को 25 मत प्राप्त हुए। वार्ड क्र. 12 से निर्वाचित श्री सुभाष शर्मा (भाजपा) को 188, निकटतम प्रतिद्वंदी श्री उमेश शर्मा (कांग्रेस) को 130, श्रीमती कामना जादौन (निर्दलीय) को 42 तथा श्री सियाराम (निर्दलीय) को 39 वोट मिलें है। वार्ड क्र. 13 से निर्वाचित श्रीमती कल्पना भास्कर मंगल (भाजपा) को 363, निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीमती सपना प्रवीण मित्तल (कांग्रेस) को 335 वोट मिलें है।

संक्षिप्त समाचार

उ.प्र सहसवान में करंट की चपेट में आने से हुई बैल की मौत, आनन-फानन में थाना प्रभारी ने कराई विद्युत सप्लाई बंद

उत्तर प्रदेश बदायूं सहसवान कोतवाली क्षेत्र के ग्राम जरीफ पुर गढ़िया में आज भोजराज, पुत्र भूप सिंह, अपनी बैलगाड़ी को लेकर घूरन पुर चक्र रोड की ओर अपने खेत पर जा रहा था बीच रास्ते में पड़े 11000 वॉल्ट की लाइन के तार की चपेट में आ जाने से उसकी बैल की तार से चिपक कर मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया की 11000 की लाइन का तार कल शाम से टूटा पड़ा था जिसकी सूचना विद्युत विभाग के कर्मचारियों को दी गई लेकिन किसी भी कर्मचारी ने तार को जोड़ने व देखने की हिम्मत तक नहीं जुटाई। यदि किसी हादसे को लेकर जेई को फोन लगाया जाता है। तो उनका फोन तक रिसीव नहीं होता इसी लापरवाही की वजह से अब से कुछ दिन पहले सहसवान नगर के मोहल्ला अकबराबाद में विद्युत विभाग की लापरवाही की वजह से अंडर ग्राउंड खुले तारो की विद्युत सप्लाई से चिपक कर दो बैलों की मौत हो गई थी। आज की घटना को लेकर ग्रामीणों में काफी रोष दिखाई दे रहा है।

कोटपुतली कस्बे में राजकीय एलबीएस पीजी महाविधालय में पौधारोपण किया गया

राजस्थान कोटपुतली कस्बे में राजकीय एलबीएस पीजी महाविधालय द्वारा वर्षाऋतु में महाविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न उद्यानों के प्राकृतिक श्रंगार हेतु लगभग एक हजार पेड़ लगाने के संकल्प को लेकर चलाये जा रहे वन महोत्सव के तहत गुरूवार को (एचडीएफसी) बैंक के सौजन्य से पौधारोपण किया गया। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. आर पी गुर्जर ने अधिक से अधिक वृक्षारोपण का आह्वान किया। इस दौरान बैंक के चेतन सोनी, कमल सिंह, जितेन्द्र सिंह, संदीप यादव, मिन्दु सिंह समेत महाविद्यालय के डॉ. एस.पी.सिंह, डॉ. राजपाल सिरोहीवाल, डॉ. अमित शर्मा, प्रो.सुरेश कुमार यादव, डॉ. पी.सी.जाट, डॉ. आर. के लाटा आदि मौजूद रहे।

अटाली गांव के सरकारी विद्यालय में बच्चों को प्लास्टिक की थेली यूज ना करने की शपथ दिलाई गई

सतीश शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा के अटाली गांव के सरकारी विद्यालय में डीसी साहब जय कृष्णा आभीर जी के द्वारा चलाए जा रहे मिशन महेंद्रगढ़ अपना जल के तहत पौधे लगाए गए, जिसमें हमारे स्कूल के अध्यापक ओम प्रकाश जी हरपाल सिंह जी वह जगदीश प्रसाद वीरेंद्र सिंह वह सुदेश कुमार जी वह बाबू श्याम वह मुख्त्यार सिंह चपरासी वह प्रधान सुंदर सिंह इन सभी ने मिलकर बच्चों द्वारा पेड़ पौधे लगाएं मिशन महेंद्रगढ़ अपना जल के तहत बच्चों को जानकारी दी व प्लास्टिक की थेली यूज ना करने की शपथ दिलाई गई।

हरियाणा के महेंद्रगढ़ क्षेत्र में स्कूली बच्चों से शपथ दिलवाई गई

सतीश शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा के महेंद्रगढ़ क्षेत्र के ग्राम सीहमा में बाबा खेता नाथ स्कूल मैं यहां के अध्यापकों ने स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को पॉलिथीन बैग का प्रयोग न करने की शपथ दिलवाई गई वह प्लास्टिक से प्रदूषण फैलने के बारे में जानकारी दी गई स्कूल के सभी बच्चों ने अध्यक्ष अध्यापकों के आगे पॉलिथीन ना यूज़ करने की शपथ ली बच्चों ने कहा आज से हम कपड़े का थैला यूज करेंगे और इसके बारे में सभी को जानकारी देना है।

गोंडा जिला के मदनपुर गांव में बारिश के पानी भरने से लोग हुए परेशान

उत्तर प्रदेश गोंडा जिला के थाना खरगूपुर ग्राम मदनपुरा से एक मामला सामने आया है। गांव मदनपुर व खड़ंजा में जगह-जगह गड्ढा हो गया है, जिसकी वजह से बारिश होने पर सड़कों पर पानी भर जाता है आमजन लोगों को आने जाने में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वहां के ग्राम प्रधान एवं जो भी अधिकारी हैं शासन प्रशासन इस गांव के ऊपर किसी का कोई कार्यवाही नहीं किया जा रहा है ना जाने कितने बार प्रधान के पास लोग गए और बोले पर आज तक इस समस्या की कोई सुनवाई हुई है।

मध्य प्रदेश शाजापुर आरटीओ ने स्कूल वाहनों की चेकिंग के दौरान पांच वाहन जप्त

मध्य प्रदेश शाजापुर परिवहन विभाग एवं ट्रैफिक पुलिस द्वारा स्कूली वाहनों की चेकिंग की गई चेकिंग में 5 स्कूली वाहन क्रमांक mp41, p0435, Ap36TA74oo mp09FA2678, mp06p0199, mp42p0297 को जप्त कर लालघाटी थाना की अभिरक्षा में रखा गया सहज पब्लिक स्कूल में बसों की चेकिंग की गई छात्र-छात्राओं को बिना लाइसेंस वाहन से स्कूल नहीं आने के लिए समझाया गया। सभी स्कूल वाहन संचालकों को निर्देशित किया जाता है कि अपनी समस्त वाहनों को माननीय सुप्रीम कोर्ट के नियम अनुसार वाहन संचालन योग्य होने पर ही संचालित करें। जिला परिवहन अधिकारी एपी श्रीवास्तव नेपाल लोगों से अपील की है कि अपने बच्चों को वैध दस्तावेजों के वाहन होने पर संबंधित वाहन में चेकिंग के दौरान ट्रैफिक इंचार्ज थाना प्रभारी सत्येंद्र सिंह राजपूत रवि वर्मा आदि मौजूद थे।

मध्य प्रदेश सुजालपुर में राजू दरबार पार्षद की भारी मतों से हुई जीत, ढोल नगाड़ों के साथ किया स्वागत

राजेश मेवाड़ा / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश सुजालपुर तहसील के अंतर्गत आने वाले नगर पालिका चुनाव में बीजेपी के गढ़ में कांग्रेस वरिष्ठ कार्यकर्ता राजू दरबार पार्षद ने भारी मतों से जीत हासिल की है। नगर पालिका चुनाव जितने के बाद सुजालपुर में भारी उत्साह देखने को मिला। साथ ही ढोल नगाड़ों के साथ उनका स्वागत किया गया।

विद्यालय में छात्रों को नोटबुक, बॉल पेन वितरण का कार्यक्रम आयोजन किया गया

राजस्थान में आज 22जुलाई को स्थानीय विद्यालय रा उ मा वि भागवा में भामाशाह हीरा चंद पुत्र गुणेश मलजी पोमोणी बागरेचा परिवार सिवाना व अशोक कुमार बागरेचा अशोक फैंसी स्टोर सिवाना के सहयोग से कक्षा प्रथम से बारहवीं तक के समस्त छात्र छात्राओं को निःशुल्क नोटबुक, बॉल पेन वितरण का कार्यक्रम आयोजन किया गया।

विधायक एवं सुशील तिवारी की उपस्थिति में भारतीय मजदूर संघ ने मनाया स्थापना दिवस

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश सागर भारतीय मजदूर संघ का 68वां स्थापना दिवस नगर विधायक शैलेंद्र जैन के मुख्य आतिथ्य, डॉ सुशील जी तिवारी महापौर प्रतिनिधि एवं आशीष सिंह जी प्रदेश मंत्री भारतीय मजदूर संघ के विशेष आतिथ्य में तथा जिला अध्यक्ष जगदीश जी जारोलिया की अध्यक्षता में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर नगर विधायक शैलेंद्र जी जैन ने भारतीय मजदूर संघ के कार्यालय हेतु पांच लाख रुपए की राशि देने एवं कार्यालय के सम्पूर्ण निर्माण तक सहयोग करने की घोषणा की। उन्होंने अपने उद्बोधन में आकर भारतीय मजदूर संघ को संक्षिप्त रूप बीएमएस के रूप में कहने पर अपना एतराज जताया और कहा कि यदि हम उसे भारतीय मजदूर संघ ही कहेंगे तो उसका जो मूल रूप और उद्देश्य है वह सार्थक होगा। डॉ सुशील तिवारी महापौर प्रतिनिधि ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ शोषित पीड़ित बंचित जन के कल्याण में लगा रहता अतः आपके संघठन के माध्यम से कोई भी विषय मेरे संज्ञान में आयेगा मैं तत्परता से मदद करुंगा। इस अवसर पर पधारे सुनील सीरोठिया, पूर्व जिलाध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ, राजेश पंडित प्रदेश अध्यक्ष एम आर संघ, डॉ प्रदीप पाठक, प्रदेश महामंत्री कंस्ट्रक्शन मजदूर संघ, रीतेश तिवारी पार्षद इन्द्रानगर सागर का मंच पर स्वागत किया गया। मंच संचालन जिला मंत्री दीपक मिश्रा एवं राकेश श्रीवास्तव जिला अध्यक्ष म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ ने आभार विकास उपाध्याय ज्ञापित किया। इस अवसर पर म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ, बिजली कर्मचारी संघ, कंस्ट्रक्शन मजदूर संघ, गल्ला मंडी तुलावटी एवं मजदूर संघ, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका संघ एम आर संघ, आऊटसोर्सिंग कर्मचारी संघ, बुन्देलखण्ड दुग्ध कर्मचारी संघ,लोक सेवा कर्मचारी संघ, बीड़ी मजदूर महासंघ, पेंशनर्स कर्मचारी संघ, पश्चिम मध्य रेलवे परिषद्, कर्मचारी भविष्य निधि कर्मचारी संघ, भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी संघ,नगर निगम कर्मचारी प्रकोष्ठ, बीना रिफाइनरी कर्मचारी एवं मजदूर संघ। के पदाधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से एमके सक्सेना प्रदीप सिंह राहुल जैन राजीव श्रीवास्तव राज शेखर सेन दिनेश कनौजिया अजय साहू श्रीमती माया चौबे प्रदीप तिवारी ओ पी श्रीवास्तव हरीश कुशवाहा डीके तिवारी संतोष आठिया प्रमोद श्रीवास एवं जितेंद्र साहू उपस्थित थे।

बंगाल के मंत्री के सहयोगी पर ईडी की छापेमारी के बाद 20 करोड़ रुपये जब्त

एनसीआर समाचार

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा टीएमसी मंत्री पार्थ चटर्जी के एक सहयोगी के घर से 20 करोड़ रुपये नकद बरामद करने के बाद, भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा, ये तो बस ट्रेलर है, तस्वीर अभी बाकी है। जांच एजेंसी ने शुक्रवार रात पश्चिम बंगाल में एक कथित शिक्षक भर्ती घोटाले के सिलसिले में टीएमसी मंत्री पार्थ चटर्जी की करीबी सहयोगी अर्पिता मुखर्जी के आवास पर छापा मारा। अर्पिता मुखर्जी के घर पर छापेमारी तब हुई जब एजेंसी ने पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग और पश्चिम बंगाल प्राथमिक शिक्षा बोर्ड भर्ती घोटालों से जुड़े कई स्थानों पर तलाशी ली। बंगाल की मंत्री की सहयोगी अर्पिता मुखर्जी के घर में 20 करोड़ रुपये नकद मिले है। ईडी ने तलाशी के दौरान अर्पिता मुखर्जी के आवासीय परिसर से करीब 20 करोड़ रुपये नकद बरामद किए। उक्त राशि को उक्त एसएससी घोटाले के अपराध की आय होने का संदेह है। तस्वीरों में अर्पिता मुखर्जी के घर से बरामद किए गए है उसके घर से 500 और 2000 रुपये के नोट मिले हैं। कैश काउंटिंग मशीन के जरिए कैश काउंटिंग के लिए सर्च टीम बैंक अधिकारियों की मदद ले रही है। अर्पिता मुखर्जी के परिसर से कुल 20 से अधिक मोबाइल फोन भी बरामद हुए है। किए गए हैं, जिसके उद्देश्य और उपयोग का पता लगाया जा रहा है।

महान चंद्रशेखर आजाद का आज जन्मदिन है, जानिए भारत के लिए क्या था उनका योगदान

एनसीआर समाचार

भारत ने अपने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई गुमनाम नायकों को देखा है और उनमें से एक हैं पंडित चंद्रशेखर आजाद का नाम है। जिनका जन्मदिन आज 23 जुलाई को आता है। 1919 में अमृतसर में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड से आज़ाद बहुत परेशान थे। 1921 में, जब महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया, तो चंद्रशेखर आज़ाद ने क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। पंद्रह साल की उम्र में उन्हें पहली सजा मिली। क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त होने के दौरान चंद्रशेखर को पकड़ा गया था। जब मजिस्ट्रेट ने उससे उसका नाम पूछा, तो उसने कहाः आजाद मतलब मुक्त होता है। चंद्रशेखर आजाद को पंद्रह कोड़ों की सजा सुनाई गई थी। चाबुक के एक-एक झटके के साथ, युवा चंद्रशेखर बात माता बच्चे जय के नारे लगाते रहे। तभी से चंद्रशेखर ने आजाद की उपाधि धारण की और चंद्रशेखर आजाद के नाम से जाने लगे। चंद्रशेखर आजाद ने कसम खाई थी कि उन्हें कभी भी ब्रिटिश पुलिस द्वारा गिरफ्तार नहीं किया जाएगा और वह स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में मर जाएगे। चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

भड़काऊ नारे लगाने वाले गोहर चिश्ती को मजिस्ट्रेट के समक्ष किया पेश

एनसीआर समाचार

राजस्थान दरगाह के निजाम गेट के बाहर भड़काऊ भाषण व सर तन से जुदा के नारे लगाने वाले गौहर चिश्ती को आज 7 दिन का रिमांड पूरा होने के बाद न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया। जहां से उसको 14 दिन की न्यायिक हिरासत में हाई सिक्योरिटी जेल भेज दिया गया। अजमेर पुलिस ने गौहर चिश्ती को गुपचुप तरीके से मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया वही 7 दिन का रिमांड पूरा होने के बाद अजमेर एडिशनल एसपी विकास सांगवान ने बताया कि गौहर चिश्ती से पूछताछ में उदयपुर में हुए कन्हैया लाल की हत्या का कोई लिंक सामने नहीं आया, एडिशनल एसपी सांगवान ने कहा कि इसके अलावा उसके परिचितों, जान पहचान वालो से भी पूछताछ की गई। उन्होंने कहा कि गौहर चिश्ती से विभिन्न तरीकों से, मनोवैज्ञानिक तरीके से अलग अलग टीमो ने पूछताछ की लेकिन ऐसी कोई बात सामने नहीं आई की उदयपुर हत्याकांड से गौहर का कोई कनेक्शन है। इसके अलावा बैंक ट्रांजेक्शन की भी गहनता से जांच की लेकिन कुछ नही पाया गया। सांगवान ने कहा कि आवेश में आकर उसने दरगाह के निजाम के बाहर तन सर से जुदा के नारे लगाए थे और यही नारा उदयपुर हत्याकांड के आतंकियों ने लगाए थे जिससे डर कर वह अजमेर से जयपुर ओर जयपुर से हैदराबाद भाग गया था। जहां से पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था। आपको बता दें कि पिछले 17 जून को गौहर चिश्ती ने दरगाह के मुख्य निजाम गेट के बाहर से नूपुर शर्मा के विरोध में सर तन से जुदा के नारे लगाए थे, इसके बाद 25 जून को दरगाह थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी थी। मुकदमा दर्ज होने के बाद से गौहर चिश्ती फरार था, जिसे 15 जुलाई को पुलिस ने हैदराबाद के तेलंगाना से गिरफ्तार किया था। उसके बाद पुलिस ने मजिस्ट्रेट के समक्ष गौहर चिश्ती को पेश किया था जहां से गौहर 22 जुलाई तक 7 दिन के लिए पुलिस की रिमांड पर था।

मदुरई के शिवभक्त ने 20 किलो चांदी से तैयार हुआ भगवान श्री काशी विश्वनाथ का आसान अर्पित किया

एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश वाराणसी तमिलनाडु के मदुरई निवासी शिवभक्त ए एन सुब्बा ने बाबा श्री काशी विश्वनाथ के रात्रि विश्राम के लिये चांदी का नया आसन तैयार किया है। 20 किलो चांदी से निर्मित ये पलंग रविवार को बाबा को अर्पित किया जाएगा। श्री काशी नाटको्रट्टई नगर क्षेत्रम् प्रबंध सोसाइटी की ओर से रविवार को बाबा विश्वनाथ के जलाभिषेक के बाद इसे अर्पित किया जाएगा। बता दें कि हाल ही में बाबा विश्वनाथ के मंदिर के गर्भगृह के अंदर और बाहर की दीवारों पर 60 किलो सोने की परत चढ़ाई गई थी। 300 साल से चढ़ाते हैं बेलपत्रः श्री काशी नाटकोंट्टई नगर क्षेत्रम् प्रबंध सोसाइटी का सिगरा रथयात्रा मार्ग पर बगीचा है। बीते 300 साल से इसी बगीचे के बेलपत्र बाबा विश्वनाथ को चढ़ाए जाते हैं। यही संस्था बाबा विश्वनाथ की रोजाना होने वाली आरती की व्यवस्था भी करती है। इसके अलावा बाबा विश्वनाथ धाम के अन्नक्षेत्र में श्रद्धालुओं के फ्री प्रसाद की जो व्यवस्था शुरू की गई है, उसका जिम्मा भी इसी सोसाइटी के पास है। बता दें कि पिछले 20 साल

से श्री काशी नाटकोंट्टई क्षेत्रम् प्रबंध सोसाइटी का रथयात्रा स्थित बगीचे पर कुछ दबंग किस्म के लोगों ने अवैध कब्जा जमाया था। यह मामला वाराणसी पुलिस कमिश्नर ए सतीश गणेश के संज्ञान में पहुंचने के बाद दबंगों से पूरा इलाका खाली कराने के साथ ही कानूनी कार्रवाई भी की गयी। इसके बाद यहां नित धार्मिक आयोजन हो रहे हैं। तीन दिन का महारुद्र यज्ञः विश्व कल्याण की कामना के साथ श्री काशी नाटकोंट्टई नगर क्षतरम् मैनेजिंग सोसाइटी की ओर से रथयात्रा स्थित अन्ना मलईयार नंदवनम परिसर में तीन दिन का महारुद्र यज्ञ किया जा रहा है। यज्ञ के लिए 1008 कलश में गंगाजल लाया गया है। यज्ञ का शुभारंभ पूजन के साथ किया गया और दक्षिण भारत के 108 वैदिकों द्वारा श्रीसूक्त के मंत्रों की एक लाख आठ आहुतियां की गईं।

स्मृति ईरानी की बेटी पर द्वारा गोवा में अवैध बार चलाने का आरोप लगा है

एनसीआर समाचार

हाल ही में खबरें आई थीं कि बीजेपी गोवा के कांग्रेस विधायकों को निशाना बना रही है और भगवा पार्टी ऑपरेशन कमला चलाने की कोशिश कर रही है, हालांकि अब ऑपरेशन कमल का मामला ठंडा पड़ गया है और अब बार के मुद्दे पर बीजेपी और कांग्रेस के बीच बवाल हो गया है। कांग्रेस ने केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की बेटी पर गोवा में अवैध बार चलाने का आरोप लगाया है। इसी पृष्ठभूमि में कांग्रेस ने मांग की है कि स्मृति ईरानी को केंद्रीय मंत्री पद से हटाया जाए। हालांकि स्मृति ईरानी की बेटी ने इस आरोप से इनकार किया है। राहुल के संसदीय क्षेत्र वायनाड के लिए मंत्री स्मृति ईरानी असमंजस कांग्रेस के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए, केंद्रीय मंत्री की बेटी जोश ईरानी के वकील किरत नागरा ने कहा मेरे मुवक्किल का सिली सोल्स गोवा नाम का कोई रेस्तरां नहीं है और न ही वह चलाता है। साथ ही उन्होंने कहा है कि सोशल मीडिया पर बताई जा रही कोई कारण बताओ नोटिस नहीं मिला है। वकील कीरत नागरा ने कहा, यह हमारे मुवक्किल की मां, प्रसिद्ध राजनेता स्मृति ईरानी के खिलाफ एक राजनीति से प्रेरित आरोप है।

दिनदहाड़े 6 लाख 55 हज़ार से भरा बेग लेकर भागा चोर

संजय फरक्या / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश में पहले चोरी और लूट की वारदातें रात के समय ही अधिके होती थी। लेकिन अब चोरी और लूट करने वाले दिन में भी सक्रिय हो गए है। बैंको से राशि निकालकर आने वाले लोगो पर नजर रखते है और मौका देखकर उनकी राशि पर हाथ मार रहे है।

एक माह पहले दिनदहाड़े हुई 60 हज़ार की लूट के मामले में भी पुलिस अभी तक आरोपी को पकड़ नही पाई है। ग्राम घसोई निवासी विजय बहादुर सिंह देवड़ा ने बताया कि उन्होंने शुक्रवार की दोपहर करीब 2 बजे सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से 6 लाख 55 हजार रुपये की राशि निकाली। वे तहसील घाटी रोड पर स्थित स्टेशनरी की एक दुकान पर कुछ देर रुके और पैसों से भरा बैग काउंटर पर रख एक अन्य शिक्षक से दुकान के बाहर ही बात करने लगे। इतने में आरोपी शुभम पिता कुंदनसिंह निवासी कड़िया सासि थाना बोड़ा जिला राजगढ़ और आरोपी बंटी कड़िया सासि थाना बोड़ा जिला राजगढ़ जो कि दुकान के आसपास रहकर बैग पर नजरे जमाए थे। मौका देख बेग लेकर भागने लगे। देवड़ा की नजर आरोपी और उनके पैसों से भरे बैग पर पड़ी तो उन्होंने शोर मचाया। इतने में भीड़ एकत्र हो गयी और आरोपी को चारों तरफ से घेरकर लोगो ने उसकी जमकर धुनाई की। इस दौरान एक

आरोपी बंटी कड़िया सासि थाना बोड़ा जिला राजगढ़ फरार हो गया। लोगो ने आरोपी शुभम के पास से रुपयो से भरा बेग छिना और पुलिस को सूचना देकर आरोपी शुभम को पुलिस के हवाले किया। देवड़ा ने भीड़ में उपस्थित सभी लोगो की एकजुटता को देख सभी को धन्यवाद दिया। देवड़ा कन्या हाई सेकेंडरी स्कूल में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर है। वही पुलिस ने आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। परमानन्द पिता बद्रीलाल धाकड निवासी धाकड़खेड़ी के साथ करिब एक माह पहले 60 हजार की लूट हुई थी। मामले में नगर के हॉस्पिटल चौराहे पर दो नकाबपोश बदमाश बाइक से आये और बेग लूटकर फरार हो गए थे। उल्लेखनीय है कि परमानन्द के बेटे रामप्रसाद का कैंसर का उपचार चल रहा है। हर बीस दिन में इलाज के लिए जाना पड़ता है। उक्त राशि लेकर उसे रामप्रसाद के उपचार के लिए उज्जैन जाना था।

आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत, दो छोटी बच्चियां हुई घायल

उत्तर प्रदेश में कौड़िया थाना क्षेत्र के भरथा इटहिया ग्राम पंचायत के पाटन गौढ़ी गांव में शुक्रवार की दोपहर हुई बारिश के बाद आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई और दो छोटी छोटी बच्चियां घायल हो गई। करीब 35 वर्षीय महिला सुशीला पत्नी जग प्रसाद यादव अपने खेत में धान की रोपाई कर रहीं थी, तभी अचानक आसमान से गड़गड़ाहट के साथ गिरी आकाशीय बिजली से उसकी मौके पर मृत्यु हो गई। जबकि दो छोटी छोटी बच्चियां घायल हो गई थी, बच्चियों का इलाज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कराया गया जहां उनकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक मृतका का पति लुधियाना में रहकर मजदूरी का कार्य करता है। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष कौड़िया मदन लाल गौतम व राजस्व टीम ने कागजी लिखा पढ़ी के पश्चात शव को पोस्टमार्टम के लिये भेजवाया।

संक्षिप्त समाचार

डॉ. सुनील बंसल ने सरकारी अस्पताल में एस एम ओ का पदभार संभाला

ज्ञान साहनी / एनसीआर समाचार

पंजाब में स्टेट अवार्ड विजेता डॉ. बंसल ने मलौट के सरकारी अस्पताल का एस एम ओ पदभार संभाल लिया है। इस दौरान पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि वह विभाग द्वारा दी गई। जिम्मेदारी को पूरी लगन से पहले भी निभाते आ रहे हैं, और अब मिली जिम्मेदारी को भी पुरी लग्न के साथ निभायेंगे तथा मरीजों वह सरकारी अस्पताल के सभी कर्मचारियों के सहयोग से और पूरी लगन के साथ दी गई जिम्मेदारी को पूरा करते रहेंगे किसी को भी परेशानी नहीं होने दी जाएगी।

हर हर तिरंगा घर घर तिरंगा अभियान को लेकर मध्य प्रदेश में बैठक आयोजित

मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद विकास खंड शुजालपुर के माध्यम से विकासखंड शुजालपुर की हर-हर तिरंगा घर-घर तिरंगा अभियान को एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। जिसमें शुजालपुर नगर के गणमान्य नागरिक एवं ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के कार्यकर्ता उपस्थित रहे । बैठक में अनुविभागीय अधिकारी सत्येंद्र सिंह एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद रुपाली पोरस, धनसिंह धनगर विकासखंड समन्वयक जन अभियानपरिषद् द्वारा अभियान जानकारी दी गई एवं अभियान को सफल बनाने के लिए गांव गांव तक जाना है और राष्ट्रीय ध्वज का अपमान न हो सा सम्मान इसको लगाना एवं इसके बाद सुव्यवस्थित ढंग से रखना अभियान में झंडा प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। परंतु राष्ट्रीय भावना हर एक नागरिक में प्रबल हो इसके के लिए झंडे का ₹30 शुल्क 11अगस्त से 17 अगस्त तक राष्ट्र ध्वज घर पर लगाना है जिला प्रशासन द्वारा निर्धारित समय पर झण्डा लगाएं और निर्धारित समय पर ही निकले ।

कमरे में एक साथ तीन शव पड़े मिले

कमरे में एक साथ तीन शव पड़े थे लखिया मुर्मू का शव बेड पर पड़ा था जबकि, सविता और गीता का शव उसी कमरे में फर्श पर पड़ा था, तीनों की हत्या धारदार हथियार से की गई थी पुलिस ने कमरे को सील कर डॉग स्क्वायड के अलावा फोरेंसिक टीम को बुलाया और जांच में जुट गई इधर सूचना पाकर सविता की बहन रानो मार्डी मौके पर पहुंची रानो ने बताया कि वो लोग मूल रूप से सरायकेला खरसावां जिले के राजनगर के रहने वाले है सविता के पति कैलाश हेंब्रम की मौत जादूगोड़ा में हुए नक्सली हमले में मौत हो गई थी पति के मारने के बाद नौकरी मिली थी। नौकरी के बाद वह एसएसपी कार्यालय में गार्ड का काम करती थी और अपनी बेटी और मां के साथ स्टाफ क्वार्टर में रहती थी. घटना को किसने अंजाम दिया इसके बारे में जानकारी नहीं है, एसएसपी प्रभात कुमार ने बताया कि सविता बुधवार से कार्यालय नही आई थी, आज पड़ोसियों ने सूचना दी कि कमरे से दुर्गंध आ रही है जिसके बाद कमरे का ताला तोड़ा गया. जांच के लिए फोरेंसिक टीम को बुलाया गया है, फिलहाल जांच चल रही है,जांच के बाद ही मामले का खुलासा हो पाएगा।

मसूदा विधानसभा के लोकप्रिय भामाशाह पडांगा निवासी सुनील कावड़िया ने किया केकड़ी व गुलाबपुरा का दौरा

घनश्याम दास / एनसीआर समाचार

भिनाय उपखंड के लोकप्रिय भामाशाह पडांगा निवासी सुनील कावड़िया ने आज गुलाबपुरा थाना अधिकारी गजराज चौधरी का माला व साफा पहनाकर भव्य स्वागत सत्कार किया और बधाई दी। वही गुलाबपुरा कोर्ट में अपने अजीज मित्र सांवर नाथ योगी से मुलाकात की। यहां से केकड़ी विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय युवा नेता हृदय सम्राट केकड़ी के पर्व विधायक शत्रुघ्न गौतम के जन्मदिन के कार्यक्रम मैं जूनिया पहुँच कर समाज सेवी सुनील कावड़िया व उनकी टीम ने पूर्व विधायक शत्रुघ्न गौतम के जन्मदिन कार्यक्रम मैं शिरकत की। उनको राजस्थानी परम्परागत माल्यार्पण कर साफा बंधवाकर इनकी लंम्बी उम्र व उज्वल भविष्य की कामना करते हुये जन्मदिन की बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित की। इस दौरान टीम कावड़िया व टीना दाधीच मौजूद रहें।

अटाली में डाक कावड़ लाने के लिए बाबा खेतानाथ नाम से कावड़ियों का जत्था रवाना हुआ

मनीष शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा में महेंद्रगढ़ क्षेत्र के गांव अटाली में डाक कावड़ लाने के लिए बाबा खेतानाथ नाम से कावड़ियों का जत्था रवाना हुआ डाक कावड़ लाने वालों का कहना है की यह डाक कावड़ हमारी 45 कावड़ है डाक कावड़ लाने वालों में सुनील कुमार शर्मा, जगजीत शर्मा, राकेश कुमार, सुनील कुमार, मनोज कुमार, हरद्वारी लाल शर्मा, वह गांव के नौजवान लड़के डाक कावड़ लाने वालों में शामिल हुए। हर साल श्रद्धा भाव से डाक कावड़ लाते हैं वह हर साल बाबा खेता नाथ मंदिर में शिविर का आयोजन किया जाता है शिविर में आगे जाने वाले कावड़ियों को श्रद्धा भाव से जलपान कराया जाता है।

इंदौर मैं विवादों के मामले सुर्खियों में चल रहे है, पुलिस से बेखौफ गुंडों के हौसले दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं

मध्य प्रदेश के इंदौर मैं विवादों के मामले सुर्खियों में चल रहे है पुलिस से बेखौफ गुंडों के हौसले दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं ऐसा ही मामला सामने आया है। थाना द्वारकापुरी के दिग्विजय नगर अहिरखेड़ी का जिसमें पुराने विवाद को लेकर दो गुटआपस में भिड़े मालवीय गुट के आकाश मालवीय ने किया देसी पिस्टल से हवाई फायर कैट रोड अहिरखेड़ी मल्टी के दिग्विजय नगर एल ब्लॉक के सामने रोड पर हुई घटना 22 जुलाई शाम 6:30 बजे की है।

उ.प्र के अनूप शहर में एक नवयुवक हुआ लापता, आगे की छान-बीन में जुटी पुलिस

उत्तर प्रदेश के अनूप शहर में नवयुवक काफी देर से लापता है। बता दे कि कोतवाली क्षेत्र के कस्बे अनूप शहर के स्थित मोहल्ला पवित्र पुरी का नवयुवक संविदा कर्मी आशुतोष शर्मा पुत्र विमल शर्मा 21 जुलाई 2022 को सुबह 9:00 बजे रजिस्ट्रार ऑफिस अपनी बाइक से गया था जिसके बाद वो शाम को घर वापस नहीं पहुंचा। काफी खोजबीन की जाने के बाद भी वो युवक कहीं पर नहीं मिला युवक की पत्नी स्नेह लता का कहना है कि तहरीर देकर रजिस्टार व उसकी पत्नी पर आरोप लगाया है कि उसकी पत्नी मेरे पति आशुतोष शर्मा से प्रतिदिन लड़ाई झगड़ा करती थी वह मानसिक तनाव में थे।

वानिकी कार्यों में भ्रष्टाचार की भरमार

राजेश मेवाड़ा / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश के वन विभाग में परिक्षेत्र शुजालपुर के अन्तर्गत ग्राम जेठड़ा में वृहद स्तर पर कराये जा रहे वानिकी कार्यों में, रेंजर शुजालपुर पराग सेनानी के नेतृत्व में भारी भ्रष्टाचार कर, लुटपाट मचा रखी है, असल में रेंजर शुजालपुर पराग सेनानी और उनके अधिनस्थ कर्मचारी हरिश सक्सेना द्वारा जेठड़ा के कार्यो मे शुरूआत ही भ्रष्टाचार से करी है, तो आगे भी भ्रष्टाचार की भरमार होना लाजमी है। काम शुरू होने के पहले ही चैनलिंक फैंसिंग और सीमेंट के पोल की खरिदी में भारी भ्रष्टाचार की खबरें समाचार पत्रों एवं न्यूज़ चैनल के माध्यम से प्रकाशित भी हुई थी। उन खराब और अमानक स्तर के खम्बो को वनसीमा पर बेहद घटिया सीमेंट का प्रयोग कर, एक फ़ीट के गड्ढे ट्रैक्टर की पायल मशीन से खोदकर, चुरी सीमेंट के माल से गाड़े गए, जो पहली बरसात मे ही अपनी जगह छोड़कर, इधर उधर हिलने लगे। तारजालिया बेच दी गई, सीमेंट खुले मे रखकर पानी से खराब कर दी गई, व आधी सीमेंट की उपयोगी बोरिया बेंच दी गई, कई सैकड़ो सीमेंट के खम्बो को तोड़कर अनुपयोगी दी शासन की गाढ़ी राशि का अपव्यय किया गया, जिसकी कोई वसूली होगी या कोई जिम्मेदार अधिकारी इस और अपना फर्ज ईमानदारी से निभायेंगे। क्या ऐसी काली करतूतों के कलाकारों को कोई सजा मिलेगी या यंहा पर भी अपना हिस्सा लेकर जिम्मेदार अधिकारी नो दो ग्यारह हो जाएंगे लेकिन इन सारे घपलो में विभाग द्वारा कार्यवाही करना तो दूर की बात, वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मामले की जांच मे भी लीपापोती कर गुनाहगारों को बचा लिया गया, जिससे की भ्रष्ट कर्मचारियों के होसलों मे पंख लगाकर वे सातवें आसमान पर उड़ने लगे, और भ्रष्ट कारनामो में इजाफा होता गया, इसी भ्रष्टाचार के क्रम मे आगे बढ़ते हुए रेंजर शुजालपुर पराग सेनानी, हरिश सक्सेना द्वारा पौधारोपण के लिये गढ्ढे भी जे.सी. बी. मशीन द्वारा अमानक आकार के खोदे गए। फिर उन गढ्ढो में काली मिट्टी के नाम पर ऊपर-ऊपर दो-चार मुट्ठी मिट्टी डाल दी गई, गढ्ढो में पौधे रोपित होने के बाद भी गढ्ढे आधे खाली है, क्योंकि गढ्ढो में भरने के लिए न तो पर्याप्त ऊपजाऊ काली मिट्टी मौके पर उपलब्ध थी, ना ही खाद, और न ही विभाग के अधिकारियों की ईच्छाशक्ति आज भी रोपित पौधों के आसपास दिखावे के लिए, मिट्टी के ढेर आपको स्पष्ट रूप से नज़र आ जायेंगे, लेकिन फिर भी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कोई भी कार्यवाही ना कर, बल्कि सारे फर्जी बिल पास कर दिये गए और सभी जिम्मेदार अधिकारी भी अपना-अपना हिस्सा लेकर चुपचाप बैठें तमाशा देखकर, बंदरबांट मे लगे है। जेठड़ा वनभूमि की सीमा पर जो तारजाली लगाई गई हैं, वो सुरक्षा के मापदंड के हिसाब से बिल्कुल भी उचित नहीं हैं, क्या ऐसी फैंसिंग से वनो की सुरक्षा होगी ये देखने और सुनने में बिल्कुल हास्यास्पद है, सुरक्षा सीमा के चारो और की वनभूमी में से कई स्थानों पर विभाग के अधिकारियों द्वारा वनभूमि देने के बदले पैसे लेकर बेच दी गई है, इसलिए वनभूमि मौक़े पर कम है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई विजयपुर द्वारा पौध रोपण कार्यक्रम का शुभारंभ

एनसीआर समाचार

विजयपुर श्योपुर जिले की विजयपुर तहसील में शुक्रवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई विजयपुर द्वारा विजयपुर नगर में विद्यालयों में सात दिवसीय पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, जिसमें सीएम राइज स्कूल विजयपुर में विभिन्न प्रकार के फलों एवं छायादार पौधों अशोक, अनार, अमरूद एवं नींबू के पौधों का रोपण किया गया। तथा इस अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई विजयपुर के नगर प्रमुख खरवेन्द्र शर्मा ने बताया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पौधरोपण करना अनिवार्य है, तथा हमारा पौधरोपण करने का प्रमुख उद्देश्य यह है कि, हम इन पौधों को लगाकर इनकी प्रतिदिन देखरेख करें। अपने पर्यावरण को सुरक्षित बनाए रखने के लिए हम सभी को अपने जीवन में अधिक से अधिक पौधरोपण करना चाहिए। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई विजयपुर के द्वारा पूरे विजयपुर नगर में शुक्रवार से सात दिवसीय पौधरोपण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के द्वारा पूरे श्योपुर जिले में 10,000 (दस हजार) पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। आज के इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) नगर इकाई विजयपुर के नगर प्रमुख खरवेन्द्र शर्मा, संकल्प फ्री कोचिंग क्लासेज के शिक्षक नितेश उपाध्याय, सी.एम. राइज स्कूल विजयपुर के प्राचार्य के.सी. यादव आदि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) नगर इकाई विजयपुर के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

जिला महेंद्रगढ़ की अंजलि ने देशभर में हासिल किया पहला स्थान

सतीश शर्मा / एनसीआर समाचार

हरियाणा में नारनौल जिला के ग्रामीण अंचल की रहने वाली बेटी अंजली ने 500 में से 500 अंक लेकर सीबीएसई की 10वीं कक्षा मे देशभर में किया टॉप। उसका किसी विषय में कोई अंक नहीं कटा। अंजली इंडस वैल्ली स्कूल दोगरा अहीर की छात्रा है। अंजलि के स्कूल में जश्न मनाया गया। अंजलि बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती है। महेंद्रगढ़ जिले गांव सिलारपुर की बेटी अंजलि पुत्री रामनरेश ने 10वीं कक्षा की परीक्षा में 500 में 500 अंक हासिल किया है। अंजलि को ऐच्छिक विषय में भी 100 में 100 अंक मिले हैं। इसी स्कूल की छात्रा मानवी पुत्री अशोक कुमार गांव दौगडा ने 99% अंक लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। वहीं संस्था की तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली रजनीश पुत्री नरेश कुमार मूंडियाखेड़ा व मनीषा पुत्री राजेश कुमार गांव मुंडिया खेड़ा ने 98% अंक लेकर सफलता हासिल की है। सभी छात्राओं ने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों व अभिभावकों को दिया है। संस्था के चेयरमैन धर्मेंद्र यादव व प्राचार्य जयवीर यादव ने बताया की स्कूल ग्रामीण अंचल में स्थित है और संस्था ने जिले में अपनी अलग से पहचान स्थापित की है। संस्था के नाम विगत समेस्टर में भी अच्छी उपलब्धियां दर्ज है। खेलों में भी संस्था ने अपना नाम कमाया है।

रेलवे स्टेशन के अंदर महिला से गैंगरेप, 4 रेलवे कर्मचारी को किया गिरफ्तार

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली के रेलवे स्टेशन के इलेक्ट्रिकल मेंटेनेंस स्टाफ रूम के अंदर गुरुवार देर रात दो रेलवे कर्मचारियों द्वारा 30 वर्षीय एक महिला के साथ कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार किया गया। सामूहिक बलात्कार की प्राथमिकी दर्ज की गई और बाहर से कमरे की रखवाली कर हमले में मदद करने वाले दो सहित चार रेलवे कर्मचारियों को गिरफ्तार किया गया। वहीं डीसीपी हरेंद्र सिंह ने कहा कि आरोपियों की पहचान सतीश कुमार 35वर्ष, विनोद कुमार 38वर्ष, मंगल चंद मीणा 33वर्ष और जगदीश चंद 37वर्ष के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि प्राथमिकी दर्ज होने के दो घंटे के भीतर चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया और आरोपियों को दिल्ली की एक अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। डीसीपी हरेंद्र सिंह ने कहा कि हमें 22 जुलाई को तड़के करीब 3.27 बजे एक कॉल आया जिसमें महिला ने आरोप लगाया कि रेलवे स्टेशन के एक कमरे के अंदर दो लोगों ने उसके साथ बलात्कार किया। जांच के दौरान, हमने पाया कि घटना ट्रेन की लाइटिंग झोपड़ी के अंदर हुई थी। डीसीपी हरेंद्र सिंह ने कहा कि महिला ने पुलिस को सूचित किया कि वह पिछले एक साल से अपने पति से अलग थी और तलाक के लिए एक अदालती मामले में लगी हुई थी। करीब दो साल पहले, वह एक आरोपी के संपर्क में एक कॉमन फ्रेंड के जरिए आई थी। उसने उससे कहा कि वह एक रेलवे कर्मचारी है और उसके लिए नौकरी की व्यवस्था भी कर सकता है। उन्होंने फोन पर बात करना शुरू कर दिया और 21 जुलाई को, उसने उसे अपने बेटे के जन्मदिन की पार्टी के लिए और एक नया घर खरीदने के लिए अपने घर पर आमंत्रित कर के बुलाया था। सूत्रों के मुताबिक आरोपी रात करीब साढ़े दस बजे महिला को कीर्ति नगर मेट्रो स्टेशन से उठाकर रेलवे स्टेशन ले आए। डीसीपी हरेंद्र सिंह ने कहा कि महिला ने यह आरोप लगाया कि उसे ट्रेन की लाइटिंग झोपड़ी में बैठने के लिए कहा गया, जो बिजली के रखरखाव कर्मचारियों के लिए है। वहीं कुछ मिनटों के बाद, आरोपी अपने दोस्त के साथ कमरे के अंदर आया और उसे बंद कर दिया। उन्होंने एक के बाद एक उसका यौन उत्पीड़न किया और उसके दो साथियों ने बाहर से कमरे की रखवाली कर हमले में मदद की।

शिक्षक भर्ती घोटाले में पश्चिम बंगाल के मंत्री 'पार्थ चटर्जी' को ईडी ने किया गिरफ्तार

एनसीआर समाचार

नई दिल्ली: पश्चिम बंगाल के वाणिज्य और उद्योग मंत्री पार्थ चटर्जी को शनिवार को कोलकाता में प्रवर्तन निदेशालय ने शिक्षक भर्ती घोटाले में उनकी कथित संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार किया। घोटाले के समय राज्य के शिक्षा मंत्री रहे पार्थ चटर्जी को जांच के सिलसिले में करीब 26 घंटे की पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया था। उन्हें साल्ट लेक इलाके में सीजीओ कॉम्प्लेक्स में ईडी के कार्यालय ले जाया गया। बता दे कि ईडी ने शुक्रवार को कई जगहों पर छापेमारी के दौरान कहा कि उसने अर्पिता मुखर्जी से करीब 20 करोड़ रुपये बरामद किए हैं, जो कथित तौर पर पश्चिम बंगाल के पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी की करीबी हैं। तलाशी के दौरान ईडी ने अर्पिता मुखर्जी के आवासीय परिसर से लगभग 20 करोड़ रुपये की भारी नकदी बरामद की है, जो पार्थ चटर्जी की करीबी सहयोगी है। उक्त राशि एसएससी घोटाले के अपराध की आय होने का संदेह है। कैश काउंटिंग मशीनों के जरिए नकदी की गिनती के लिए सर्च टीम बैंक अधिकारियों की मदद ले रहे है। वहीं अर्पिता मुखर्जी के परिसर से कुल 20 से अधिक मोबाइल फोन भी बरामद किए गए हैं, जिसके उद्देश्य और उपयोग का पता लगाया जा रहा है। ईडी ने दक्षिण कोलकाता में मुखर्जी के घर से कथित रूप से नकदी बरामद की तस्वीरें साझा करते हुए ईडी ने ट्वीट किया, ₹ईडी पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग और पश्चिम बंगाल प्राथमिक शिक्षा बोर्ड में भर्ती घोटाले से जुड़े विभिन्न परिसरों में तलाशी अभियान चला रहा है। जिन अन्य लोगों के घरों की तलाशी ली गई उनमें पार्थ चटर्जी शामिल हैं, जो वर्तमान में वाणिज्य और उद्योग मंत्री थे। परेश सी अधिकारी, शिक्षा राज्य मंत्री, माणिक भट्टाचार्य, विधायक और पश्चिम बंगाल बोर्ड ऑफ प्राइमरी एजुकेशन के पूर्व अध्यक्ष पार्थ चटर्जी के विशेष कर्तव्य अधिकारी पी के बंदोपाध्याय।

मध्य प्रदेश के सरकारी स्कूल में पढ़ाई के नाम पर बच्चों से उखड़वाइए जा रहे थे घास

मध्य प्रदेश में राजगढ़ जिले की नरसिंहगढ़ तहसील से करीब 15 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत तिदौनिया में, स्कूलों में शिक्षा के नाम पर किया जा रहा है बच्चों से खिलवाड़ शिक्षा देने की बजाय स्कूली बच्चों से स्कूल के सामने की घास उखड़वाई जा रही है। जब एनसीआर समाचार कि टीम ने बच्चों से पूछा तो बच्चों ने कहा कि सर हमसे घास उखड़वाते है। हम मना करते हैं तो सर हमें टीसी निकाल दूंगा ऐसी धमकी देते हैं। उधर सरकार सरकारी स्कूल के नाम पर बड़े-बड़े प्रयास कर रही है और इधर शिक्षक बच्चों को पढ़ाने की वजह बच्चों से घास उखड़वाते है स्कूल में टाइम पास कर रहे हैं यहां ग्राम पंचायत तिदौनिया के शासकीय माध्यमिक स्कूल तिदोनिया का मामला है। जब बच्चों से पूछा तो बच्चों ने यहां कहा कि सर हकीकत में हमसे घास उखड़वाते हैं। बच्चों की शिकायत लेकर शिक्षक के पास पहुंची महिलाएं, शिक्षक ने बनाया बहाना कुछ शिक्षक ने कहा कि मैंने घास गलती से उखड़वा ली अब नहीं उखड़वाउगा।

अंतरराज्यीय वाहन गिरोह का भंडाफोड़, चार चोर गिरफ्तार

एनसीआर समाचार

गाजियाबाद पुलिस ने गुरुवार को अंतरराज्यीय कार और बाइक चोरों के एक गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया, जिन्होंने दिल्ली एनसीआर से 300 से अधिक वाहन चुराए थे, पुलिस ने कहा कि गिरोह के सरगना की पहचान हापुड़ निवासी 47 वर्षीय जोगेंद्र के रूप में हुई है, जिसे गाजियाबाद के कविनगर के हिंट चौराहे से पकड़ा गया था। पुलिस ने उसके पास से चोरी की हुई एक कार बरामद की है। अन्य तीन आरोपियों की पहचान संदीप शर्मा उर्फ गल्ला (33), रामसुशील चौपाल 22 और साहिल 21 के रूप में हुई है। ये सभी हरियाणा के सोनीपत के रहने वाले हैं और पांचवां आरोपी अभी फरार है। मीडिया से बात करते हुए, पुलिस उपाधीक्षक अवनीश कुमार ने कहा कि कविनगर पुलिस स्टेशन के कर्मियों की एक टीम ने जोगेंद्र को हिंट चौराहे पर एक पुलिस चौकी के पास पकड़ा, जब हमारे मुखबिरों ने उसे इलाके में देखा, उनके द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर गाजियाबाद पुलिस ने सोनीपत के एक गोदाम में छापेमारी कर तीन अन्य आरोपियों को विभिन्न वाहनों के पुर्जों के साथ गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ के दौरान जोगेंद्र ने खुलासा किया कि वह दिल्ली एनसीआर में पिछले 15-20 साल से रैकेट चला रहा था। पुलिस ने कहा कि गाजियाबाद और मेरठ में पुलिस की कड़ी चौकसी के चलते जोगेंद्र ने सोनीपत के संदीप शर्मा उर्फ गल्ला के साथ हाथ मिला लिया था, जो वाहनों को तोड़कर उसके पुर्जे बेचता था। वहीं जोगेंद्र और संदीप शर्मा दोनों का आपराधिक इतिहास रहा है और हापुड़, नोएडा और गाजियाबाद में दर्ज धारा 420 धोखाधड़ी और बेईमानी से संपत्ति की डिलीवरी और 370 चोरी के लिए सजा सहित भारतीय दंड संहिता की कई धाराओं के तहत 30 से अधिक मामलों का सामना करना पड़ता है। हमने पांच कारों और सात दोपहिया वाहनों और अन्य वाहनों के कई हिस्से बरामद किए हैं। जब कविनगर इलाके से कुछ कारें चोरी हो गईं, तो हमारी निगरानी टीम और मुखबिरों ने हमें गिरोह के बारे में जानकारी दी और पुलिस उनकी गतिविधियों पर करीब से नजर रख रही थी। आरोपी के आपराधिक इतिहास में ज्यादातर वाहन चोरी के मामले हैं। बरामद की गई छह कारें होंडा सिटी, मारुति सुजुकी वैगन आर, हुंडई सैंट्रो, हुंडई आई20 मैग्ना, मारुति सुजुकी ऑल्टो, मारुति सुजुकी स्विफ्ट डिजायर हैं। जब्त किए गए सात दोपहिया वाहनों में दो होंडा एक्टिवा स्कूटी, एक बजाज डिस्कवर मोटरसाइकिल, एक टीवीएस अपाचे मोटरसाइकिल, एक बजाज प्लेटिना, एक बजाज पल्सर और एक महिंद्रा रोडियो स्कूटी शामिल हैं। धारा 379 (चोरी के लिए सजा) 411 (बेईमानी से चोरी की संपत्ति प्राप्त करना), 414 (चोरी की संपत्ति को छिपाने में सहायता करना)।

जमशेदपुर के सबसे सुरक्षित जगह पुलिस लाइन में मां बेटी और नानी की निर्मम हत्या, शक की सुई अपनों पर

झारखण्ड में जमशेदपुर शहर के सबसे सुरक्षित जगह पुलिस लाइन में महिला पुलिस कर्मी की निर्मम हत्या से सनसनी फैल गई है सबसे सुरक्षित माने जाने वाले पुलिस लाइन में ही घुसकर महिला पुलिसकर्मी की हत्या कर दी जाती है और पुलिस को घटना के दो दिनों बाद इसकी जानकारी होती है, जमशेदपुर के गोलमुरी स्थित पुलिस लाइन के स्टाफ क्वार्टर एलएसजी प्लस3 जे5 निवासी महिला कांस्टेबल 36 वर्षीय सविता रानी हेंब्रम, उसकी मां 60 वर्षीय लखिया मुर्मू और 13 वर्षीय बेटी गीता हेंब्रम की बेरहमी से हत्या कर दी गई। हत्यारे ने घटना को अंजाम देने के बाद कमरे में बाहर से ताला लगा दिया। दो दिनों तक शव बंद कमरे में ही पड़ा रहा। कमरे से तेज बदबू आने पर पड़ोसियों ने इसकी सूचना वरीय अधिकारियों को दी।

संक्षिप्त समाचार

कायड़ विश्रामस्थली पर शुरू हुई तैयारीयां नायब सदर मुनव्वर खान ने सफाई कार्यो लिया जायज़ा

राजस्थान अजमेर में 21 जुलाई से प्रारंभ होने वाले मोहर्रम मिनी उर्स की तैयारीयों को लेकर दरगाह कमेटी और जिला प्रशासन द्वारा अजमेर कायड़ विश्रामस्थली पर तैयारीयां शुरू कर दी गई है। दरगाह कमेटी के नायब सदर मुनव्वर खान गुरूवार को विश्रामस्थली पहुंचे। विश्रामस्थली पर खान ने अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा जारी किए गए सफाई कार्यो का जाएज़ा लिया। नायब सदर ने शफीक खान को बेहतर से व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने के दिशा निर्देश दिये। विश्रामस्थली की प्राथमिक तैयारीयों को 27 जुलाई तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है।

शराब के धंधे में शामिल युवक की खुलेआम हत्या, सीएनजी पंप के पास किया मर्डर

अर्जुन तड़वी / एनसीआर समाचार

गुजरात के सुरत शहर में शराब के धंधे में शामिल युवक की खुलेआम हत्या कर दी गई है। घटना कि सूचना मिलते ही पुलिस घटना स्थल पर पहुंचे गई है। तत्कालिक तलाश सुरु कर दी गई है। सुरत शहर में टिटोटि गांव में हत्या का मामला सामने आया है। आबेलीया, सीएनजी पंप के पास युवक की हत्या कर दी गयी है। पुलिस का काफिला घटना स्थल पर पहुँच गया था। रात के समय में इस हत्या को अंजाम दिया गया था। शराब के धंधे में सामिल था युवक, पुलिस के अनुसार उस युवक का नाम मचिनद था।

चीन पर आया धन-संबंधी संकट इस विरोध में लोग तोपखाने की गाड़ियां को ब्लॉक करने के लिए रुक गईं

चीन में इस घटना के वजह से उस समय हड़कंप मच गया था जब जनता ने वित्तीय संकट से लकवा चीनी बैंक से जब अपने पैसे निकालने की कोशिश की। तब चूंकि बैंक धन-संबंधी संकट में था, इसलिए उन्होंने उसके ग्राहकों के बैंक खाते बंद कर करवा दिए थे। इसके चलते ही पिछले कई हफ्तों में हेनान प्रांत में अपने पैसे वापस मांगने के लिए पुलिस और ग्राहकों के बीच झड़पें भी हो गई हैं। विरोध को बढ़ने से रोकने के लिए तोपखाने की गाड़ियां सड़कों पर खड़ी कर दी गई है। उस हादसे से जुडी कुछ तस्वीरे और वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आई हैं। सुत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक एक मीडिया उपयोगकर्ता ने बताया कि यह घटना 1989 के तियानमेन स्क्वायर नरसंहार की गंभीर अनुस्मारक थी।

दतिया में चोरों के हुए हौसले बुलंद, राह चलते एक आदमी के निकाले पैसे

दतिया में चोरों के हौसले बुलंद एक ग्रामीण जन ने सेंट्रल बैंक से पैसे निकाले तिगेलिया से होते हुए। पटवा तिराहे पर एक सुनार की दुकान पर रुका कुछ सामान लेने के लिए दुकान के अंदर गया तभी दो चोरों ने सेंट्रल बैंक से उसका पीछा किया और सर्राफा व्यापारी की दुकान के सामने से चोर ने पैसे निकाले बड़े आराम से। दतिया में आए दिन हो रही है चोरियां कहीं बाइकों की तो कहीं बैंकों से निकाले हुए पैसों की इस और पुलिस प्रशासन का कोई भी ध्यान नहीं है हर रोज एक ना एक घटना सामने आती है।

पर्यटकों को लुभाता है मध्य प्रदेश का वाटरफॉल, जानिए कैसे पहुँचे यहां

पप्पू लाल धनगर / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश में बारिश के दिनों प्रकृति भी अपना प्राकृतिक श्रृंगार कर लेती है। हर तरफ हरियाली ही हरियाली छा जाती है। ऐसा ही प्राकृतिक एवं मनोहारी स्थान है सीहोर और रायसेन जिले के मध्य स्थित देलावाडी वाटरफॉल यहां पर बारिश के दिनों में प्राकृतिक झरने यहां आने वाले पर्यटकों के मन को भा जाते हैं। यहां आने के बाद हर कोई इस प्राकृतिक वाटरफॉल का दीवाना हो जाता है। ये प्राकृतिक वॉटरफॉल रेहटी-ओबेदुल्लागंज मार्ग पर देलावाड़ी घाट से जंगल में 2 किलोमीटर अंदर की तरफ स्थित है। भोपाल से इसकी दूरी करीब 50 किलोमीटर है। यहां पर जब 70-80 फिट ऊपर से पानी नीचे गिरता है तो ये नजारा हर किसी को यहां बार-बार आने के लिए विवश भी करता है। देलवाड़ी वॉटरफॉल रातापानी अभ्यारण में स्थित है, इसलिए यहां जाने के लिए परमिशन की जरूरत लगती है। यहां तक पहुँचने के लिए दुर्गम रास्तों से भी होकर गुजरना पड़ता है। ज्यादातर पर्यटक बारिश के दिनों में ही यहां पहुँचते हैं। हालांकि भारी बारिश को देखते हुए फिलहाल प्रशासन ने यहां पर रोक लगा दी है।

भारत में कोरोना के 21,880 नए मामले दर्ज, 60 की हुई मौतें

भारत में शुक्रवार को पिछले 24 घंटों में कोविड-19 के 21,880 नए मामले दर्ज किए गए, जो पिछले दिन गुरुवार को सामने आए 21,566 की संख्या से थोड़ी ज्यादा है। इसकी जानकारी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने दी। इसी अवधि में, कोरोना वायरस से 60 लोगों की मौत हुई, जिससे देश भर में मरने वालों की संख्या 5,25,930 हो गई है। वहीं 21,219 मरीज महामारी से ठीक हुए है। देशभर में कोरोना वायरस से ठीक होने वालों की कुल संख्या 4,31,71,653 हो गई है। नतीजतन, भारत का रिकवरी रेट 98.46 प्रतिशत हो गया है। इस बीच, भारत का डेली पॉजिटिविटी रेट बढ़कर 4.42 प्रतिशत हो गया है, जबकि वीकली पॉजिटिविटी रेट वर्तमान में 4.51 प्रतिशत है। साथ ही इसी अवधि में, देश भर में कुल 4,95,359 कोविड टेस्ट किए गए, जिससे कुल संख्या बढ़कर 87.16 करोड़ से अधिक हो गई।

बान्दनवाड़ा अस्पताल के आगे चलते ट्रक में लगी आग, एक युवक जल कर खत्म

बान्दनवाड़ा कस्बे में गुरुवार रात 10 बजे करीब एक चलते ट्रक की केबिन में भयानक आग लग गई देखते ही देखते आग नें भयानक रूप ले लिया। वंही आग लगने पर ट्रक को ड्राइवर नें सडक के साइड में ट्रक खड़ा कर दिया। आग भयानक होने से बाहर नहीं निकल पाया व कुछ देर बाद खल्लासी साइड की फाटक का दरवाजा तोड़ कर एक जिन्दा जलता व्यक्ति बाहर गिर गया जिसे बान्दनवाड़ा अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया व बॉडी को भिनाय अस्पताल में भेज दिया गया। पुलिस चौकी बान्दनवाड़ा इंचार्ज गिरधारी सिंह नें बताया की अभी तक एक व्यक्ति के ही ट्रक में होने का पता चला हे जो आग में झूलसने से मर गया, वंही आग बुझने पर ही पूरी वस्तुस्थति का पता चलेगा ट्रक ड्राइवर पास ही के गांव खेड़ी का बताया जा रहा हे। नगर पालिका की दमकल आग लगने के बाद किशनगढ़ की और जाने वाले हाइवे को बंद कर दिया गया।

जब मन में मलिनता उत्पन्न हो तब उसके लिए पश्चाताप प्रकट करो: श्री राजमती जी मारासा

एनसीआर समाचार

राजस्थान में मदनगंज किशनगढ़ शहर के शिवाजी नगर स्थित श्री ब्रज मधुकर स्मृति भवन मैं पूज्य गुरु माता महाश्रमणी श्री पुष्पवती जी मारासा के पावन सानिध्य में जीवन निर्माण के सूत्र विभिन्न माध्यमों से बताए जा रहे हैं। धर्म सभा को संबोधित करते हुए उप प्रवर्तिनी सद्गुरुवर्या श्री राजमती जी मारासा ने फरमाया कि अपनी भावनाओं को शुद्ध बनाएं रखने का प्रयत्न करो। जब चित में किसी प्रकार की मलिनता उत्पन्न हो तब उसके लिए पश्चाताप प्रकट करो। मन को दंड दो। निश्चय करो कि इस प्रकार की गलती फिर कभी नहीं करेंगे। जब चित मलीन भावना से रहित हो जाएगा उसमें शुभ भावनाएं उत्पन्न होगी, ऐसा होने पर आपको परम लाभ होगा आनंद ही आनंद होगा।आपका भविष्य आपके वचनों एवं विचारों पर निर्भर है। जैसा विचार करोगे वैसे ही कर्म बंध होगा और जैसा कर्म बंध होगा वैसा ही आगामी भव प्राप्त होगा। यह एक ध्रुव सत्य है। परमात्मा के निकट पहुंचने के लिए मन की निर्मलता, भावना की पवित्रता और आंतरिक शुद्धता जरूरी है। निष्काम भाव से सेवा परोपकार करो।

नम्रता धारण करो। साध्वी डॉ.राज रश्मि जी मारासा ने फरमाया जीवन में सुख हो या दुख अपमान हो या सम्मान अभाव हो या अति भाव सबको हृदय की प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना आ जाता है तो मन में न खेद होता है न ही हर्ष। संतुलन का भाव जागृत होता है। प्रत्येक परिस्थितियों को हार्दिक भाव से, बड़प्पन के साथ स्वीकार करें। गंभीर वही है जो छलकता नहीं। समत्व का जीवन

व्यक्तित्व को उत्कर्ष तक ले जाता है। साध्वी डॉ.राजरिद्धि जी मारासा ने फरमाया जो ज्ञानी है, धैर्यवान है, विवेकी और संयमी है। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों के समागम से व्यक्ति अनेक पापों से बच सकता है। अपने जीवन को सन्मार्ग की और गतिशील बनाए रखने के लिए परिपक्व बुद्धि वाले विवेकी पुरुषों का अनुकरण - अनुसरण करना चाहिए।आज गुरु माता राजमती जी मारासा के दर्शनार्थ एडवोकेट डॉ. मनोज आहूजा, मनोज मिश्रा, राजेश कुमावत, एडवोकेट मनीष छीपा, देवांश कुमावत, गोविन्द सिंगला ने भी पधारकर आशीर्वाद व मांगलिक प्राप्त किया। संयोजक ने बताया कि श्रमण संघ के द्वितीय पट्ट धर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंद ऋषि जी मारासा की 122 वी जयंती आयम्बिल दिवस के रूप में मनाई जाएगी।

यह जानकारी देते हुए संघ महामंत्री अनिल सोनी ने धर्म सभा को प्रेरित किया कि दिनांक 28 जुलाई को अधिक से अधिक संख्या में आयंबिल तप की भेंट देकर महान आचार्य के श्री चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित करें। आयम्बिल की श्रृंखला में आज का आयम्बिल श्रीमती कंचन देवी कूमठ जी ने किया।धर्म प्रभावना का लाभ श्रीमान शांतिलाल जी, संजय कुमार जी छाजेड़ परिवार ने लिया। दिनांक 22 जुलाई शुक्रवार को महाप्रभावक विघ्न निवारक उवसग्गहरम स्त्रोत का जाप प्रातः 8:30 बजे से होगा।

राजस्थान कोटपुतली में पुलिस अधिकारियों की बॉर्डर मिटिंग का आयोजन

एनसीआर समाचार

राजस्थान कोटपुतली कस्बे के पूतली रोड़ टी.वी. टॉवर के पास स्थित एएसपी कार्यालय पर मंगलवार को एएसपी विधा प्रकाश की अध्यक्षता में कोटपूतली व बानसूर सर्किल के वृत्ताधिकारी व थानाधिकारियों की बॉर्डर मिटिंग का आयोजन किया गया। इस दौरान कोटपुतली व बानसूर सर्किल के सक्रिय अपराधियों के आपराधिक रिकॉर्ड व डॉजियर का आदान प्रदान एवं अपराधियों की सक्रियता को लेकर सूचनाओं का आदान-प्रदान करने व अपराध की स्थिति के सम्बंध में चर्चा कर सुझाव लिए गए। साथ ही वृत्ताधिकारी व थानाधिकारियों को वांछित अपराधियों की धरपकड़ व शरणदाताओं / फाईनेंसरों एवं अन्य प्रकार से सहयोग करने वालों को चिन्हित कर पकडने, व्हाट्सएप्प ग्रुप पर सूचनायें आदान प्रदान करने (एरियाडोमिनेशन के लिए पाक्षिक दबिश) व बानसूर, कोटपुतली, पनियाला, प्रागपुरा थाना ईलाके के नदी वाले व अन्य खाली ईलाकों में संयुक्त गश्त व दबिश देने एवं बफर जोन में संयुक्त रूप से गश्त कर अपराध रोकथाम के लिए प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश भी दिये गये। इस बैठक में कोटपूतली डीएसपी डॉ. संध्या यादव, बानसूर डीएसपी मृत्युंजय मिश्रा, कोटपुतली एसएचओ सवाई सिंह, बानसूर एसएचओ रविन्द्र कविया, पनियाला एसएचओ हितेश शर्मा, हरसौरा एसएचओ ताराचंद समेत अन्य मौजूद रहे।

CBSE 12वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम हुआ जारी

एनसीआर समाचार

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने शुक्रवार को 12वीं बोर्ड के नतीजे घोषित कर दिए, जिसमें लड़कियों ने लड़कों को 3.29 फीसदी से अंक से पीछे छोड़ दिया है। लड़कियों ने 94.54 प्रतिशत के कुल उत्तीर्ण प्रतिशत के साथ लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया, जबकि लड़कों ने 91.25 प्रतिशत हासिल किया। 33,000 से अधिक छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि 1.34 लाख ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। इस साल 92.71 प्रतिशत की तुलना में 2021 में कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 99.37 प्रतिशत था। परीक्षा के लिए कुल 1435366 छात्र उपस्थित हुए, जिनमें से 1330662 उत्तीर्ण हुए हैं। सीबीएसई 12वीं बोर्ड परीक्षा में 92.71 फीसदी छात्रों ने पास किया है। केरल के तिरुवनंतपुरम में 98.83 प्रतिशत के साथ उच्चतम

उत्तीर्ण प्रतिशत दर्ज किया गया है, इसके बाद बेंगलुरु में 98.16 प्रतिशत, चेन्नई में 97.79 प्रतिशत, दिल्ली पूर्व और दिल्ली पश्चिम में 96.29 प्रतिशत रहा है। हालांकि, उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में सबसे कम पास प्रतिशत 83.71 प्रतिशत दर्ज किया गया है। इस बीच 4.72 फीसदी छात्रों को कंपार्टमेंट में रखा गया है। इस साल, बोर्ड ने दो टर्म यानी टर्म 1 और टर्म 2 में परीक्षाएं आयोजित कीं। टर्म 1 की परीक्षा में 30 फीसदी वेटेज दिया गया और टर्म 2 को 70 फीसदी वेटेज दिया गया। इस साल बोर्ड उन 0.1 फीसदी छात्रों को मेरिट सर्टिफिकेट जारी करेगा, जिन्होंने विषयों में सबसे ज्यादा अंक हासिल किए हैं। टर्म 2 के लिए प्रतिशत वेटेज। हालांकि, छात्रों के बीच अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए बोर्ड के पहले के निर्णय के अनुसार, कोई मेरिट सूची घोषित नहीं की जाएगी। इस संबंध में यह भी सूचित किया जाता है कि बोर्ड अपने छात्रों को प्रथम, द्वितीय या तृतीय श्रेणी प्रदान नहीं कर रहा है। छात्र अपना रिजल्ट आधिकारिक वेबसाइट cbseresults.nic.in और results.cbse.nic.in पर देख सकते हैं। छात्र अपना परिणाम डिजिलॉकर या उमंग ऐप पर भी देख सकते हैं। कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षा 26 अप्रैल से 15 जून तक आयोजित की गई थी।

मध्य प्रदेश थाना देहात ब्यावरा पुलिस ने की सख्त कार्यवाही

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश तूफान गाड़ी में अंदर व ऊपर ठूंस ठूंस कर सवारी बैठाने, एवं वाहन में बैठे लोगों का जीवन संकट में डालते हुए लापरवाही व उतावलेपन से वाहन चलाने पर की गई कार्यवाही। जिला पुलिस अधीक्षक राजगढ़ श्री अवधेश कुमार गोस्वामी (भापुसे) के द्वारा समस्त थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गाय है कि निर्धारित संख्या से अधिक सवारी ढोने एवं लापरवाही से वाहन चलाकर लोगो का जीवन संकट में डालने वालों के विरुद्ध कि गई कार्यवाही। उसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री मनकामना प्रसाद, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस ब्यावरा श्रीमती नेहा यादव के मार्गदर्शन में देहात थाना प्रभारी रामकुमार रघुवंशी के नेतृत्व में कार्रवाई की गई 19 जुलाई को प्रातः

10.30 बजे करीबन एक तूफान गाडी क्रमांक आर जे 17 टी.ए. 0880 में चालक इमरान खान निवासी ग्राम बाँसखेड़ा तहसिल मनोहर थाना जिला झालावाड़, राजस्थान की राजगढ़ तरफ से आ रहा था जिसने अपनी गाडी के अंदर एबं छत के ऊपर बैठाकर कई लोगों के जीवन को संकट मे डालते हुए लापरवाही व उतावलेपन से चलाता हुआ राजगढ़ से ब्यावरा की ओर आ रहा था जिससे उक्त तूफान वाहन में बैठे लोगो को चोट लगने की पूरी संभावना थी। रिपोर्ट पर तूफान वाहन चालक इमरान खान निवासी ग्राम बाँसखेड़ा तहसिल मनोहर थाना जिला झालावाड़ राजस्थान के विरूद्ध अपराध क्रमांक 217/2022 धारा 279 भादवि 66/192 ए, 39/192 (1), 184, 180, 3 मोटर व्हीकल एक्ट के अन्तर्गत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया।

पुलिस अधीक्षक एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजगढ व एसडीओपी ब्यावरा के निर्देशन मे त्वरित कार्यवाही करते हुए विवेचना के दौरान तूफान वाहन RJ 17 TA 0880 को जप्त किया गया एवं आरोपी चालक इमरान खान निवासी ग्राम बाँसखेड़ा को अभिरक्षा मे लिया गया। जप्तसुदा तूफान वाहन चालक द्वारा परमिट की शर्तों का उल्लंघन किया गया एवं वाहन चालक पर लाइसेंस भी नहीं पाया गया। इस उक्त कार्यवाही में थाना देहात ब्यावरा थाना प्रभारी एवं उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

ओड़िया लेखक सागर प्रधान ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया नाम

एनसीआर समाचार

भुवनेश्वर पर्यबरण के प्रति योगदान के लिए अमेरीका की अंतर्राष्ट्रीय संस्थान यूनाइटेड नेसन ऑर्गनइजेसन के तरफ से ओड़िआ लेखक डाक्टर सागर प्रधान को अंतरास्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया था | अभी एक और सफलता में अपना नाम जोड़ते हुए प्रसिद्ध लेखक और पर्यावरणविद् डॉ सागर प्रधान ने हाल ही में पर्यावरण सफाई अभियान के लिए अपने अद्वितीय व्यक्तिगत प्रयास के लिए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (आईबीआर) में प्रवेश किया। डॉ प्रधान ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले के अधंगा मल्लिकेश्वरपुर के रहने वाले हैं। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के अनुसार ₹उन्होंने पौधे लगाने, साफ समुद्र तटों, छोटी झीलों और तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए अपनी पुस्तक रॉयल्टी दान की है। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक कचरा प्रबंधन, एकल उपयोग प्लास्टिक, चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन, कार्बन फुटप्रिंट को कम करने आदि पर आधारित किताबें और कई पर्यावरण जागरूकता लेख भी लिखे हैं। उनके सराहनीय कार्य के कारण उन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस हीरो -2020 शीर्षक दिया गया था।

भारत की 15वीं राष्ट्रपति बनी द्रौपदी मुर्मू, जानिए नए राष्ट्रपति का जीवन संघर्ष

नमिता चौहान/ एनसीआर समाचार

भारत की 15वीं राष्ट्रपति बनी द्रौपदी मुर्मू। भारत के इतिहास में पहली आदिवासी महिला को मिला देश के सबसे बड़े पद का सम्मान। द्रौपदी मुर्मू ने आदिवासी समाज को एक नई पहचान दी है। भारत के 15वें राष्ट्रपति चुनाव के बाद वोटों की गिनती आज सुबह ही शुरू हो थी। NDA की उम्मीदवार 'द्रौपदी मुर्मू' पहले राउंड की गिनती के बाद आगे चल रही थी। वोटों की गिनती का काम भी ठीक उसी कमरे में शुरू किया गया जहां सभी सांसदों ने वोट डाले थे। संसद का कमरा नंबर 63 वोटों के बॉक्स से भरा हुआ है। चुनाव के बाद इस कमरे की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई थी।

NDA उम्मीदवार के गांव में शुरू हुआ जश्न

NDA उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू पहले राउंड की गिनती के बाद विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा से 2,33,600 वोटों से आगे चल रही थी। दोनों पक्षों के बीच इस बड़े फासले को देखते हुए तभी से ही द्रौपदी मुर्मू के गांव में जश्न मनाया जाने लगा। ओड़िशा के रायरंगपुर में स्थित श्याम, लक्ष्मण और सिपुन मेमोरियल रेसिडेंसियल स्कूल, पहाड़पुर में जश्न की शुरुआत हो चुकी है। ये वो स्कूल है जिसका निर्माण द्रौपदी मुर्मू ने अपने 2 बेटों और पति की याद में बनवाया था।

कब शुरू हुई वोटों की गिनती

18 जुलाई को नए राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान किया गया था। चुनाव मतदान के बाद आज 21 जुलाई को सुबह 11 बजे वोटों की गिनती शुरू की गई और इस गिनती के शुरू होते ही दोनों उम्मीदवार के बीच वोटों के आकड़ें का फासला स्पष्ट होने लगा।

जहां यशवंत सिन्हा के कहते में 208 वोट आए वहीं विपक्ष के खाते में 540 वोट आए।

किस पार्टी ने किया द्रौपदी मुर्मू का समर्थन

द्रौपदी मुर्मू ने 24 जून को अपना नामांकन फॉर्म भरा था जिसके बाद उनके समर्थन में कई पार्टियां आई जिनके नाम है- बीजेडी, वाईएसआर कांग्रेस, जेडीयू, एआईएडीएमके, लोक जन शक्ति पार्टी, अपना दल (सोनेलाल), निषाद पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (अठावले), एनपीपी, एनपीएफ, एमएनएफ, एनडीपीपी, एसकेएम, एजीपी, पीएमके, एआईएनआर कांग्रेस, जननायक जनता पार्टी, यूडीपी, आईपीएफटी, यूपीपीएल।

यशवंत सिन्हा के समर्थन में आगे आई ये पार्टियां

यशवंत सिन्हा ने 27 जून को राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना नामांकन किया था। यशवंत सिन्हा को समर्थन देने के लिए आगे आई कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, एनसीपी, टीएमसी, सीपीआई, सीपीआई (एम) समाजवादी पार्टी, रालोद, आरएसपी, टीआरएस, डीएमके, नेशनल कांफ्रेंस, भाकपा, आरजेडी पार्टी।

कौन है द्रौपदी मुर्मू

द्रौपदी मुर्मू भारत की निर्वाचित राष्ट्रपति हैं और भारतीय जनता पार्टी की सदस्य थीं। वह 2022 के चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार थीं। मुर्मू अनुसूचित जनजाति से संबंधित दूसरी व्यक्ति और पहली आदिवासी महिला हैं, जिन्हें भारत के राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार के रूप में नामित किया गया था।

संक्षिप्त समाचार

चंद्रपूर फिर से बाढ की चपेट में, महाराष्ट्र तेलंगाना अंतरराज्यीय यातायात ठप्प

समीर वानखेडे

महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में सप्ताह भर मे लगातार दूसरी बार राजूरा, भद्रावती, माजरी, बल्लारपूर चंद्रपूर के नागरी को को फिर से बाढ का सामना करना पड़ रहा है। मंगलवार को उक्त इलाको में आई बाढ से जनजीवन बुरी तरह से प्रभावित हो गया है। अमरावती, वर्धा मे मुसलधार बारिश और बादल फटने जैसी घटनाओं से के कारण वर्धा नदी उफान पर आने से, सटे इलाको को एक बार फिर बाढ का सामना करना पड रहा है। महाराष्ट्र तेलंगाना राष्ट्रीय महामार्ग तीन दिन मे दूसरी बार बंद हुआ है। यहां दोनों छोर पर वाहनो की लंबी कतारे लग गई है। बल्लारपूर मे बस्ती विभाग के गोल पुलिया मे बाढ का पानी आने से सास्ती होकर तेलंगाना की ओर जाने वाला मार्ग भी बंद होने से तेलंगाना राज्य से संपर्क टूट गया है। चंद्रपुर शहर के अधिकांश इलाके जलमग्न होने से बाढ की विभिषिका झेल रहे लोगों में बाढ को लेकर दहशत व्याप्त है।

बैकवाटर से वर्धा नदी मे फिर बाढ़

मंगलवार दोपहर राजूरा बल्लारपूर मार्ग पर वर्धा नदी के पूल पर बाढ़ आने से महाराष्ट्र तेलंगाना अंतरराज्यीय मार्ग बंद कर दिया गया है। वर्धा नदी से सटे अनेक गांव बाढ़ के पानी से घिर गए है। इस वजह से तहसील मुख्यालय से संपर्क टूट गया है। इस दौरान बैकवाटर के कारण नदी और नाले ओव्हरफ्लो होकर बहने की वजह से खेतों को तालाब का स्वरूप प्राप्त हो गया है। बाढ का पानी उतरने के बाद दो दिन से कृषि का आगे का नियोजन करने जुटे किसानों को फिर से आई बाढ की वजह से नुकसान हुआ है, जिला तथा तहसील प्रशासन बचाव कार्य तथा गाँवो में हुए नुकसान का जायजा ले रहा है।

मध्य प्रदेश में नगरीय निकाय चुनाव होने जा रहा है मतगणना केंद्रों का पुलिस कर्मचारियों ने निरीक्षण किया

मध्य प्रदेश में नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2022 द्वितीय चरण के लिए नगर पालिका परिषद शुजालपुर एवं परिषद अकोदिया के मतगणना केंद्रों का निरीक्षण निर्वाचक प्रेषक अरुण कुमार तोमर कलेक्टर दिनेश जैन एवं पुलिस अधीक्षक जगदीश डावर ने किया है। इस मौके पर अनुविभागीय अधिकारी सत्येंद्र प्रसाद सिंह शुजालपुर में रिटर्निंग अधिकारी नरेंद्र पांडे तहसीलदार राकेश खजूरिया नगर पालिका सीएमओ निगहत सुलताना भी मौजूद थी।

चुनाव आयोग ने नए राष्ट्रपति के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी की गई है

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का कार्यकाल 24 तारीख को समाप्त हो रहा है। इसलिए चुनाव आयोग ने नए राष्ट्रपति के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी की है। इसमें ओडिशा के एक प्रसिद्ध आदिवासी नेता और झारखंड राज्य की पूर्व राज्यपाल द्रौपती मुर्मू को सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार के रूप में मैदान में उतारा गया था। पूर्व केंद्रीय मंत्री और तृणमूल कांग्रेस के सदस्य यशवंत सिन्हा ने विपक्षी दलों के सामान्य उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान 18 तारीख को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक व्यस्त माहौल में हुआ। सांसदों ने संसद भवन में और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के विधायकों ने देश भर में 30 स्थानों पर बने केंद्रों पर वोट डाला। इस चुनाव में 776 सांसदों सहित 4,800 से अधिक जनप्रतिनिधियों को मतदान के लिए योग्य घोषित किया गया था। उनमें से 99 प्रतिशत ने मतदान किया।

NSTI कॉलेज विद्यानगर में किया गया स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन

NSTI कॉलेज विद्यानगर हैदराबाद में किया गया स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज के प्रिंसिपल महेशी सर एवं डायरेक्टर गोपीनाथ सर और बाहर से आए हुए हमारे गेस्ट एवं हमारे क्लास टीचरों के द्वारा स्वच्छता पखवारा मनाया गया। सारे एनएसटीआई कॉलेज के छात्र एवं छात्राएं स्वच्छता पखवाड़ा अभियान में अपना भागीदारी निभाए अप्रैल 2016 से स्वच्छता पखवाड़ा शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य सभी सरकारी मंत्रालयों एवं विभागों को उनके अधिकार क्षेत्र में शामिल करके स्वच्छता के मुद्दे और प्रथाओं पर पखवारा का गहण ध्यान केंद्रित करना था।

मंदसौर में चुनावी डिप्टी कलेक्टर की एक दम्पति ने की पिटाई, मामला दर्ज

संजय फरक्या

मंदसौर में निजी वाहन से चुनावी ड्यूटी पर जा रहे डिप्टी कलेक्टर की चाय बेचने वाले दम्पति ने पिटाई कर दी। दंपति को पिटाई के बाद पुलिस आने पर पता चला कि उन्होंने जिसे पीटा वो अधिकारी थे, जिसके बाद डिप्टी कलेक्टर के आवेदन पर पुलिस ने पति पत्नी पर एफआईआर दर्ज कर उन्हे गिरफ्तार कर लिया। सुबह मारपीट के बाद दिन तक पुलिस ने दंपत्ति की चाय की गुमटी को तोड़ने की कार्रवाई भी कर दी है। मंदसौर में बुधवार सुबह चुनावी ड्यूटी पर अपने निजी वाहन से जा रहे डिप्टी कलेक्टर अरविंद भाभोर को चाय वाले दंपत्ति ने पीट दिया। बताया जा रहा है कि, डिप्टी कलेक्टर ड्यूटी पर जा रहे थे। उसी दौरान एक बाइक सवार उन्हे रास्ता ना देते हुए स्टंट करते हुए बाइक दौड़ा रहा था। उसे ही समझाने के लिए डिप्टी कलेक्टर ने गाड़ी रोकी थी, लेकिन तभी सड़क पार से चाय की गुमटी चलाने वाले पति - पत्नी आकर अधिकारी से उलझ गए और गाली गलौज, मारपीट करने लगे। मारपीट के दौरान किसी ने पुलिस को फोन लगा दिया। पुलिस मौके पर पहुंची तब जाकर दंपत्ति को मालूम हुआ को उन्होंने जिसे मारा है, वो डिप्टी कलेक्टर है, जिसके बाद चाय वाले के हाव भाव बदल गए। इस कार्रवाई के बाद पुलिस ने उनकी चाय की गुमटी को तोड़ने की कार्रवाई भी की है।

जनसुनवाई में पति की शिकायत सुनते ही हंस पड़े पुलिस वाले

गौरव कुमार जयसवाल / एनसीआर समाचार

महराजगंज जिले से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है जिसे सुनकर पुलिस भी हक्के बक्के रह गए। जनसुनवाई के दौरान एक शख्स अपनी फरियाद लेकर थाने पहुंचा और बोला कि सहाब मेरी पत्नी रोज मुझे गालियां देती है और डंडे से पीटती है, वो मुझे पीट-पीटकर मार डालेगी भगवान के लिए मुझे बचा लीजिए। यह सुनकर मौके पर मौजूद सभी पुलिसकर्मी हैरान रहे गए। पीड़ित युवक ने अपनी शिकायत में पुलिस को बताया कि पत्नी उसकी बात नहीं मानती और आए दिन छोटी-छोटी बातों पर विवाद करती है।

क्षेत्रीय विधायक, उच्च शिक्षा व गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव की अनुशंसा पर

राज्य सरकार ने जारी की राशि

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

क्षेत्रीय विधायक, उच्च शिक्षा व गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव की अनुशंषा पर राज्य सरकार ने कोटपूतली विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न ग्राम पंचायतों व कस्बे में मिसिंग लिंक, नॉन पैचेबल सडक़ों के निर्माण हेतु 10 करोड़ रूपयों की राशि स्वीकृत की है। उक्त राशि से क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में 33 किलोमीटर 300 मीटर लम्बी कुल 22 सडक़ों का निर्माण होगा। उक्त सडक़ों के निर्माण से पिछले लम्बे समय से आमजन को हो रही आवागमन की समस्या से मुक्ति मिलेगी। साथ ही रास्ते छोटे व सुगम होगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने हाल ही के बजट 2022-23 में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र पर मिसिंग लिंक सडक़ों के निर्माण हेतु 10 करोड़ रूपयों की राशि दिये जाने की घोषणा की थी। इसको लेकर विधानसभा स्तर पर प्रस्ताव मांगे गये थे। जिस पर राज्यमंत्री यादव ने विभिन्न सडक़ों की स्वीकृति के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाये थे। राज्यमंत्री यादव की अनुशंषा पर राज्य सरकार ने उक्त सडक़ों के निर्माण कार्य को मंजुरी देते हुए वित्तिय एवं प्रशासनिक स्वीकृति जारी की है। राज्यमंत्री यादव ने इसको लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कस्बा स्थित विभिन्न गाँवों व ढ़ाणियों में कई वर्षो से उक्त मिसिंग लिंक सडक़ों का निर्माण कार्य अटका

पड़ा था। जिससे क्षेत्रवासियों को छोटी दुरी के लिए भी लम्बा चक्कर लगाकर आने को मजबुर होना पड़ रहा था। अब मिसिंग लिंक सडक़ों के निर्माण से समय, ईंधन व धन की बचत होगी। वहीं क्षेत्र का आर्थिक एवं सामाजिक विकास भी तेजी से होगा। निम्न सडक़ों के निर्माण को मिली स्वीकृति :- निजी सचिव सतीश शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि कायमपुराबास स्कूल से नाथा वाली ढ़ाणी तक की 2.2 किमी लम्बी सडक़ हेतु 67 लाख, चौकी बस स्टैण्ड से रमेश यादव के मकान तक 1.5 किमी लम्बी सडक़ के लिए 45 लाख, ग्राम खेडक़ी वीरभान से बनका होते हुए खेडक़ी मुक्कड़ तक की 1 किमी सडक़ के लिए 30 लाख, देवता-छारदड़ा मुख्य सडक़ से ढ़ाणी करण सागर तक की 1 किमी लम्बी सडक़ के लिए 30 लाख, ग्राम खड़ब में रामकुमार नाई के घर से शिव ईंट भट्टा तक की। 1 किमी लम्बी सडक़ के लिए 33 लाख, ग्राम नांगड़ीवास सडक़ से बीढ़ की ढ़ाणी जाहिदपुरा में अशोक आर्य के घर तक की 1.2 किमी सडक़ के लिए 36 लाख, सुजातनगर में कांकरिया धाम मंदिर से द्वारिकपुरा तक 3 किमी लम्बी सडक़ के लिए 90 लाख, पुरूषोत्तमपुरा में भरतलाल मास्टर के घर से खातीवाला मोड़ तक 1.1 किमी लम्बी सडक़ के लिए 33 लाख, पाथरेड़ी में हनुमान डाबड़ से दयाराम गुर्जर के मकान होते हुए 1.5 किमी लम्बी सडक़ के लिए 45 लाख, पवाना अहीर से हनुमान की कोठी पुरूषोत्तमपुरा मोड़ तक 1.5 किमी लम्बी सडक़ के लिए 45 लाख, भालोजी सरकारी स्कूल से मीणा की ढ़ाणी होते हुए राजनौता रोड़ तक 2 किमी सडक़ के लिए 60 लाख, राजमार्ग पर सनाबील होटल से रामदेव की ढ़ाणी होते हुए अजीतपुरा तक 3 किमी सडक़ के लिए 90 लाख, शुक्लावास में इन्द्रा कॉलोनी से पवाना रोड़ तक 2 किमी लम्बी सडक़ के लिए 60 लाख, पिचाणी से आढ़ा पथ शुक्लावास तक 1.1 किमी लम्बी सडक़ के लिए 33 लाख, रघुनाथपुरा से बोद्या की ढ़ाणी तक 2.5 किमी लम्बी सडक़ के लिए 75 लाख, सुजातनगर से धालेड़ा स्कूल तक की। 1.1 किमी सडक़ के लिए 33 लाख, शुक्लावास से जयराम की ढ़ाणी होते हुए जाटावाली ढ़ाणी तक 1.2 किमी लम्बी सडक़ के लिए 36 लाख, खड़ब बालाजी मंदिर चौराहा से शुक्लावास तक 0.6 किमी सडक़ के लिए 18 लाख, निमोरिया की ढ़ाणी बेरी से कुण्डा मंदिर होते हुए सुदरपुरा तक 1.5 किमी लम्बी सडक़ के लिए 45 लाख रूपयों की राशि स्वीकृत की है।

नेशनल हेराल्ड मामले में पेश होंगी सोनिया गांधी

एनसीआर समाचार

प्रवर्तन निदेशालय ने नेशनल हेराल्ड अखबार कंपनी की बिक्री से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच के लिए कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और उनके बेटे राहुल गांधी को पिछले महीने की 8 तारीख को पेश होने के लिए तलब किया है, क्योंकि सोनिया गांधी का कोरोना संक्रमण के चलते अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था, इसलिए उन्हें मुकदमे में शामिल होने से छूट देने का अनुरोध कर दिया गया था। इसके बाद जहां सोनिया गांधी को ट्रायल के लिए पेश होने से छूट दी गई, वहीं राहुल गांधी का ट्रायल पूरा हो गया है। ऐसे में कोरोना वायरस से उबर चुकी सोनिया गांधी आज प्रवर्तन निदेशालय के कार्यालय में पेश होने जा रही हैं। कांग्रेस सोनिया गांधी के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की जांच के खिलाफ देशव्यापी विरोध की योजना बना रही है। इस मामले में पुलिस ने अकबर रोड पर बैरिकेड्स लगा दिए हैं और सुरक्षा कड़ी कर दी गई है, जहां दिल्ली में कांग्रेस का मुख्यालय है। Google समाचार का अनुसरण करें तो Google समाचार पृष्ठ पर News18 तमिल वेबसाइट का अनुसरण करने के लिए यहां क्लिक करें तुरंत समाचार की जानकारी प्राप्त करें। कांग्रेस नेता केएस अझागिरी के नेतृत्व में आज चेन्नई में विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। प्रशासकों को सूचित किया गया है कि तमिलनाडु के सभी जिलों की राजधानियों में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया जाना चाहिए।

वाराणसी के सरकारी डॉक्टरों और कर्मचारियों के लिये बडी खबर लेट लतीफी पड़ेगी भारी

ऐप से चेहरा पहचानने पर ही लगेगी हाजिरी

एनसीआर समाचार

वाराणसी में चिकित्सा सेवा को बेहतर बनाने के लिए एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके तहत जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में अब ऐप से चेहरे की पहचान कर चिकित्सकों और चिकित्साकर्मियों की हाजिरी दर्ज की जायेगी। इसके लिए यह निर्देश जारी कर दिया गया हैं और जल्द ही अब इस व्यवस्था पर अमल करना शुरू दिया जायेगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. संदीप चौधरी ने बताया कि जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा ने निर्देश दिया था, कि सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों व चिकित्साकर्मियों की हाजिरी फेस रिकग्नाइजेशन एण्ड जीयोफेस ऐप के

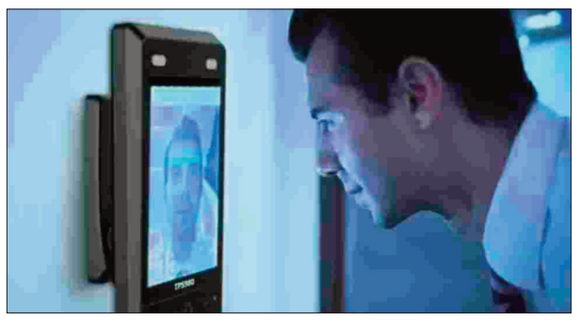

जरिये दर्ज की जाएगी। इस निर्देश के बाद शहर के 24 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में यह व्यवस्था लागू कर दी गयी है। वहां इस ऐप के जरिये ही चिकित्सक एवं चिकित्साकर्मियों की हाजिरी दर्ज की जा रही है। सीएमओ ने कहा कि जिलाधिकारी के निर्देश के अनुपालन के क्रम में अब इस व्यवस्था को जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में लागू कर दिया जाएगा। इसके लिए मण्डलीय अस्पताल के प्रमुख अधीक्षक, लालबहादुर शास्त्री चिकित्सालय (रामनगर), पं. दीन दयाल उपाध्याय चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, जिला महिला चिकित्सालय के प्रमुख अधीक्षक के अलावा जिले के सभी अधीक्षक/ प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों को पत्र भेजकर इस व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है। पत्र में यह भी लिखा गया है कि वह अपने अधीन कार्यरत समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों की उपस्थिति फेस रिकग्नाइजेशन एण्ड जीयो फेस के माध्यम से कराना सुनिश्चित करें। इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय 'रोगी कल्याण समिति' में उपलब्ध धनराशि से किया जा सकता है। हर हाल में यह व्यवस्था एक सप्ताह के अंदर लागू कर दी जाएगी। फेस रिकग्नाइजेशन एण्ड जीयो फेस ऐप जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में कार्यरत चिकित्सकों, चिकित्सकाकर्मियों के मोबाइल फोन में स्टाल होगा। इसके पूर्व उनके चेहरे को स्कैन कर डेटा के रूप में ऐप में फीड किया जायेगा। अपने कार्यस्थल पर पहुंचते ही मोबाइल में स्टाल यह ऐप सक्रिय हो जायेगा।

यातायातएवं महिला पुलिस ने चलाया जागरूकता अभियान

एनसीआर समाचार

दतिया पुलिस अधीक्षक अमन सिंह राठौड़ के निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमल सिंह मौर्य वं एसडीओपी प्रियंका मिश्रा मागदर्शन में यातायात प्रभारी हौतम सिंह बघेल एवं सूबेदार नईम खान सहित यातायात कर्मचारियों द्वारा एव महिला पुलिस बल द्वारा महिला संबंधी अपराधों के प्रति जागरूक किया गया। गुड्स सेमरिटिन के वारे में ऑटो चालक बस चालक एवम बस ट्रक एसोसिएशन के साथ गुडस सेमरिटन के वारे में लोगों को जागरूक किया गया। बताया गया कि दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तत्काल हॉस्पिटल पहुंचाने वाले समस्त व्यक्तियों को सरकार की तरफ से 5000 रुपए इनाम दिया जाता है। साथ ही यातायात अभियान के तहत लोगों को

सुरक्षित वाहन चलाने की हिदायत दी गई। युवाओं को समझाया गया की तीन सवारी वा तेज गति से वहां न चलाए हेलमेट एवम सीट बेल्ट का उपयोग करें। जागररूकता कार्यक्रम की कड़ी में गुरुवार को झांसी चुंगी पर यातायात प्रभारी हौतम सिंह बघेल ने गुजर रहे राहगीरों को छात्र- छात्राओं और महिलाओं को सड़क सुरक्षा के जुड़े बिंदुओं पर जागरूक कर साइबर अपराधों के बारे में भी बताकर जागरूक किया और पम्पलेट देकर वितरण की। उन्होंने लोगों और महिलाओं, छात्राओं से कहा कि, अपने स्कूल या घर के आसपास होने वाले अपराध या आपराधिक गतिविधियों की जानकारी तुरंत पुलिस को दे। अनजान लोगों से वाटसएप्प और फेसबुक पर अनजान लोगों से बातचीत न करें। कार्यक्रम में प्रमुख बिंदुओं पर लोगों को जागरूक किया। इसमें वाहन रजिस्ट्रेशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस व वाहन का बीमा नहीं होने के फायदे व नुकसान बताए।दोपहिया वाहन चलाते वक्त क्या- क्या दस्तावेज हमारे पास होने चाहिए। दोपहिया वाहन चलाने के लिए व लाइसेंस बनवाने की उम्र आदि बताई गई। आकास्मिक सेवाएं तत्काल पुलिस की मदद लेने के लिए डायल हंड्रेड, घायल को प्राथमिक उपचार दिलाने के लिए 108, चाइल्ड हेल्प लाइन व महिला हेल्पलाइन से भी अवगत कराया। बच्चों से कि अपील परिवार के सदस्यों को यातायात जन जागरूकता अभियान के तहत टू व्हीलर पर हेलमेट लगाकर चलने फोर व्हीलर में सीट बेल्ट बांधकर चलने वाहन चलाते समय उचित दस्तावेज रखने के लिये करे प्रेरित किया।

आबकारी और खाद्य एवं औषधि प्रशासन की टीम द्वारा मेडिकल दुकानों की जांच

एनसीआर समाचार

कलेक्टर अविनाश लवानिया के निर्देश पर सहायक आयुक्त आबकारी राकेश कुर्मी के मार्गदर्शन में आबकारी अमले द्वारा प्राप्त शिकायत पर बुधवार को भोपाल शहर के ईदगाह, स्टेशन, इत्यादि पुराना भोपाल के साथ साथ साईं बोर्ड 11 नम्बर, 12 नम्बर मल्टी एवं आसपास के संदिग्ध स्थलों की विधिवत तलाशी ली गई। टाइगर ब्रांड का सेनिटाइजर दवा दुकानों से बिक्री हो रहा है।

इस संबंध में आबकारी विभाग की टीम ने खाद्य एवं औषधि प्रशासन की टीम के साथ मेडिकल दुकानों की जांच की। मेडिकल दुकानों से बिकने वाले टाइगर नाम का सेनेटाइजर रंगहीन है और इसमें स्प्रिट की मात्रा है, जो देशी प्लेन मदिरा जैसा दिखता है। इसे नशे के रूप में ग्राहकों द्वारा उपयोग किए जाने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता है। जिले में आबकारी एवं फूड एंड ड्रग्स की टीमों ने मेडिकल शॉप की दुकानों की जांच कर इसके विक्रय पर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की।

टीमें बुधवार को देर रात्रि तक सक्रिय रहीं। सहायक आबकारी आयुक्त भोपाल द्वारा बताया कि इस संबंध में कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा मध्यप्रदेश के समस्त सेनिटाइजर निर्माताओं को जन हानि की आशंका को ध्यान में रखते हुए सेनिटाइजर के लेबल पर सूचनायें अंकित करने के लिए निर्देश जारी किए है।

एनटीपीसी ने 17वें सीआईआई एक्जिम कॉन्क्लेव के दौरान सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

एनसीआर समाचार

एनटीपीसी और मासेन ने बुधवार को नई दिल्ली में 19-20 जुलाई तक आयोजित भारत-अफ्रीका विकास साझेदारी पर 17वें सीआईआई एक्जिम सम्मेलन के वक्त अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर दस्तख़त किये है। इस संयोजन में भारी भागीदारी देखी गई है। कई अफ्रीकी देशों और अफ्रीका में विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय और अफ्रीकी कंपनियों के बीच निवेश और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए वाद-विवाद किया गया है। भारत-अफ्रीका परियोजना भागीदारी, पर CII-EXIM बैंक कॉन्क्लेव को वर्ष 2005 में विदेश मंत्रालय और वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के समर्थन से शुरुवात कर दी थी। पिछले सोलह संस्करणों में, कॉन्क्लेव ने भारतीय कंपनियों को अफ्रीका में अपने पदचिह्न स्थापित तथा विकसित करने के लिए अपना प्रोत्साहित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत गणराज्य में मोरक्को के राजा महामहिम के राजदूत एचईएम मोहम्मद मलिकी और भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव पुनीत कुंडल की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए है। एमओयू पर रचिद बेयद, संचालन के कार्यकारी निदेशक और विकास के कार्यवाहक निदेशक, मासेनसेन, मोरक्को और नरिंदर मोहन गुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक और एनटीपीसी लिमिटेड, भारत से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

के प्रमुख द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह ऊर्जा सुरक्षा के लिए सहयोग और वैकल्पिक स्रोतों का दोहन शीर्षक वाले सत्र का हिस्सा था। सत्र में महामहिम अब्दुल जोबे, पेट्रोलियम और ऊर्जा मंत्री, गाम्बिया गणराज्य, महामहिम अजय माथुर, महानिदेशक, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, और पुनीत कुंडल, संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार भी शामिल हुए थे। एनटीपीसी और मासेन प्रतिनिधियों के अलावा अर्थात। राशिद बेयद और नरिंदर मोहन गुप्ता। डॉ. प्रदीप सिंह राजपुरोहित, संयुक्त सचिव (पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने भी सत्र में भाग लिया था। एनटीपीसी लिमिटेड और मासेन के बीच समझौता हुआ था, जो अक्षय ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी हैं, अफ्रीका में अक्षय ऊर्जा पर आधारित उपयोगिता-स्तरीय परियोजनाओं के संयुक्त विकास की शुरुआत करने का वादा करता है। इस सहयोग के माध्यम से, विशेष रूप से अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में पारस्परिक हित के क्षेत्रों में क्षमता निर्माण, साझा अनुभव, जानकारी और विशेषज्ञता के लिए सेवाओं का समर्थन करने का इरादा करते है। सहयोग एनटीपीसी और मासेन को अन्य अफ्रीकी देशों में अक्षय ऊर्जा बिजली परियोजनाओं के लिए सामान्य विकास के अवसरों की खोज करते हुए देख सकते है। 2010 में बनाया गया, मासेन मोरक्को में अक्षय ऊर्जा के संचालन का प्रभारी समूह है। अपनी परियोजनाओं के माध्यम से, मासेन 2030 तक मोरक्को के बिजली मिश्रण में +52% नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त करने के राष्ट्रीय उद्देश्य में योगदान देता है। 2021 के अंत में, 4109 मेगावाट पवन, जल और सौर में काम कर रहे हैं। मेसेन समूह अपनी रणनीति के केंद्र में अक्षय संसाधनों के विकास को रखता है, ताकि मोरक्को और उससे आगे के लिए आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय विकास की एक अटूट शक्ति का निर्माण कर सके। एनटीपीसी भारत का सबसे बड़ा ऊर्जा समूह है।

संपादकीय

चायवाले प्रधानमंत्री हैं, संत मुख्यमंत्री हैं और अब आदिवासी समुदाय से राष्ट्रपति हैं

डॉ. रमेश ठाकुर

द्रौपदी मुर्मू के प्रथम महिला व हिंदुस्तान की 15वीं राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर समूचा देश गौरवान्वित है, विशेषकर उनका आदिवासी समाज! जो उनके निर्वाचन के ऐलान के बाद से ही ढोल-नगाड़े बजाकर जीत की खुशियां मनाने में लगा है, आपस में मिठाईयां बांट रहे हैं।

राष्ट्रपति पद यानी देश का राजा, इस गरिमा को ध्यान में रखकर आजादी के बाद से बनी स्वयंभू व्यवस्थाओं के चलते रसूख और बड़ी हैसियत वाले व्यक्तियों को ही महामहिम की कुर्सी पर आसान कराया जाता रहा। पंक्ति में खड़ा अंतिम व्यक्ति देश का महामहिम बने, ऐसी कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था।

पर, अब वैसी सोच और वो पुरानी रिवायतें बदल चुकी हैं। देश की सियासत में रोजाना नित कोई ना कोई अप्रत्याशित चमत्कार हो रहे हैं। यूं कहें कि राष्ट्रपति पद का इतिहास अब पहले के मुकाबले बदल दिया गया है। क्योंकि इंसान और उसकी इंसानियत से बढ़कर कोई औहदा नहीं होता। शायद ये हमारी भूल थी कि हमने इंसान के बनाए औहदों को व्यक्ति विशेष से बड़ा समझा। इंसान से ही सभी चीजें सुशोभित हैं, वरना धरती, आकाश, जल जंगल, घर, संसार सभी वीरान हैं। बहरहाल, अगर कायदे से विचार करें तो समझ में आता है कि किसी भी पद-प्रतिष्ठा पर किसी का भी हक हो सकता है और होना भी चाहिए? फिर चाहे कोई आम हो या खास। कमोबेश, यही इस बार के राष्ट्रपति चुनाव में देखने को मिला। एक अति शोषित, पिछड़े आदिवासी समाज की बेटी को पहली बार राष्ट्रपति बनाया गया है जो सपनों और कल्पनाओं से काफी परे है। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरगामी और सर्वसम्मानी सोच का अक्स दिखता है। उनकी अकल्पनीय और जिंदा कल्पनाओं का ही असर है कि मौजूदा समय में देश का जनमानस ऐसी बदली हुई तस्वीरें देख पा रहा है। भारत के राजनैतिक इतिहास में पहली मर्तबा ऐसा हुआ है जब प्रधानमंत्री पद पर कोई चाय बेचने वाला आसीन है, मठ-मंदिर में पूजा-अर्चना करने वाला संत मुख्यमंत्री बनकर जनता की सेवा में लगा हो और उसी कड़ी में अब राष्ट्रपति पद पर आदीवासी समाज से ताल्लुक रखने वालीं बेहद सरल-सादगी की मूर्ति द्रौपदी मुर्मू जैसी समान्य महिला विराजमान हुई हों। दरअसल, ये सब बदलती राजनीति परपाटी की ही देन है, जिसके लिए इच्छाशक्ति और ईमानदारी का होना जरूरी है। शायद द्रौपदी मुर्मू ने भी कभी ना सोचा हो कि एक दिन देश के सर्वोच्च पद की सोभा बढ़ाएंगी। लेकिन अब असल में ऐसा हो चुका है। द्रौपदी मुर्मू के प्रथम महिला व हिंदुस्तान की 15वीं राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर समूचा देश गौरवान्वित है, विशेषकर उनका आदिवासी समाज! जो उनके निर्वाचन के ऐलान के बाद से ही ढोल-नगाड़े बजाकर जीत की खुशियां मनाने में लगा है, आपस में मिठाईयां बांट रहे हैं। गांव में लोग खुशी से झूम रहे हैं। दरअसल, ये ऐसा समाज है जो शुरू से हाशिए पर रहा, कागजों में उनके लिए पूर्ववर्ती हुकूमतों ने जनकल्याकारी योजनाओं की कोई कमी नहीं छोड़ी, लेकिन धरातल पर सब शून्य। जंगलों में रहना, कोई स्थाई ठौर ना होना, रोजगार-धंधों में भागीदारी ना के बराबर रही। उनकी असली पहचान गरीबी और मजबूरी ही रही। रंगभेद का भी शिकार हमेशा से होते रहे हैं। कायदे से आज तक इनका किसी ने भी ईमानदारी से प्रतिनिधित्व नहीं किया। ऐसा भी नहीं कि संसद या विधानसभाओं में इनके जनप्रतिनिधि ना आए हों, आए पर उन्होंने सिर्फ अपना भला किया, अपने समुदाय को पीछे छोड़ दिया। हालांकि इसके पीछे कुछ कारण भी रहे, आदिवासी जनप्रतिनिधियों की कोशिशों को किसी ने सिरे से चढ़ने भी नहीं दिया। द्रौपदी मुर्मू के साथ भी ऐसा ही हुआ। पार्षद से लेकर विधायक, मंत्री और राज्यपाल तक रहीं लेकिन उनके मूल गांव में बिजली नहीं पहुंच पाई, जिसके लिए उन्होंने प्रयासों की कोई कमी नहीं छोड़ी। दरअसल बात घूम फिर के वही आ जाती है कि इस समुदाय पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। राष्ट्रपति बनने के बाद इस समुदाय को उनसे बहुत उम्मीदें हैं। कितना कर पाएंगे ये तो वक्त ही बताएंगा, लेकिन उनकी जीत पर समूचा आदीवासी समाज गदगद है, खुशी से झूम रहा है।

साथ ही अभी से खुद को विकास की मुख्यधारा से जुड़ा देख रहा है। द्रौपदी मुर्मू उनकी आखिरी उम्मीद हैं, अगर वह भी कुछ नहीं कर सकीं, तो यहीं से उनकी आखिरी ख्वाहिशें दम तोड़ देंगी। उम्मीद है ऐसा ना हो, नई महामहिम अपने समुदाय के लिए कुछ करें, उनके सुदीर्घ सामाजिक, राजनीतिक, सार्वजनिक जीवन के अनुभव का लाभ लेने की प्रतीक्षा में हैं उनका अपना मूल समुदाय। द्रौपदी मुर्मू को लेकर लोगों में एक डर है। कहीं उनकी आड़ में कोई राजनीतिक स्वार्थ तो पूरा नहीं करना चाहता। इस डर का समाज भुक्तभोगी है। जब रामनाथ कोविंद को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया था, तब प्रचारित किया गया था कि उनके आने के बाद दलित समाज का उद्धार होगा, समस्या दूर होंगी, तब दलित समुदाय बेहद खुश था। लेकिन बीते पांच वर्षों में उन्होंने अपने समुदाय के हित में क्या किया, ये शायद बताने की जरूरत नहीं? हां, इतना जरूर है कि उनके जरिए दलित समुदाय का बहुसंख्यक वोट जरूर हासिल किया गया। काश, ऐसा द्रौपदी मुर्मू के साथ भी ना हो?

क्योंकि राजस्थान जैसे प्रदेशों में चुनाव होने हैं, जहां आदिवासियों की संख्या बहुत ज्यादा है। क्या उन्हें साधने के लिए ही तो ये सब नहीं किया गया। ऐसी आशंकाएं लोगों के मन में हैं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ और ओडिसा प्रदेश हैं जो उनका मूल राज्य भी है वहां आदिवासियों की संख्या अनगिनत है। ओडिशा भाजपा के आगामी एजेंडे में है जहां दशकों से नवीन पटनायक सत्ता संभाले हुए हैं। उन्हें हटाने के लिए कई पार्टियों ने अपने जनाधार को बढ़ाने का प्रयास किया, लेकिन पटनायक की लोकप्रियता के सामने किसी की नहीं चली। भाजपा अब उनके किले को भेदना चाहती है जिसमें द्रौपदी का निर्वाचन शायद मील का पत्थर साबित हो सकता है।

सिर्फ भारतीय रुपया ही नहीं , अन्य देशों की मुद्राओं में भी गिरावट जारी है

विशेष रूप से कोरोना महामारी एवं रूस यूक्रेन युद्ध के बाद से अमेरिकी डॉलर की कीमत अन्य देशों की मुद्रा की कीमत की तुलना में अंतरराष्ट्रीय बाजार में बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। एक अमेरिकी डॉलर आज लगभग 80 रुपए का हो गया है। इसका आशय यह है कि भारत सहित अन्य देशों की मुद्रा की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में गिरती जा रही है। दरअसल अमेरिकी डॉलर की मांग अंतरराष्ट्रीय बाजार में हाल ही के समय में बहुत बढ़ी है। एक तो, कच्चे तेल की कीमतें बहुत तेज गति से बढ़ी हैं और यह लगभग 130 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच कर अब लगभग 110 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर आ गई हैं। प्रायः समस्त देश अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की खरीद का सामान्यतः अमेरिकी डॉलर में ही भुगतान करते हैं जिसके कारण अमेरिकी डॉलर की मांग भी बढ़ी है और जिसके चलते अमेरिकी डॉलर की कीमत में भी वृद्धि दर्ज हुई है। दूसरे, अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों में मुद्रास्फीति की दर 8 प्रतिशत के पार (अमेरिका में 9.1 प्रतिशत) पहुंच गई है जो कि इन देशों में पिछले 40-45 वर्षों में सबसे अधिक महंगाई की दर है। महंगाई पर नियंत्रण करने के उद्देश्य से इन देशों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की जा रही है, जिसके कारण इन देशों द्वारा जारी किए जाने वाले बांड्स पर प्रतिफल बहुत आकर्षित हो रहे हैं एवं विदेशी निवेशक विकासशील देशों के शेयर बाजार से अपना निवेश निकाल कर अमेरिकी बांड्स में अपना निवेश बढ़ाते जा रहे हैं। जिन विकासशील देशों से डॉलर का निवेश निकाला जा रहा है उन देशों के विदेशी मुद्रा के भंडार कम होते जा रहे हैं जिससे उनकी अपनी मुद्रा पर दबाव आ रहा है और डॉलर की कीमत लगातार बढ़ती जा रही है। भारतीय रुपए की कीमत भी कैलेंडर वर्ष 2022 में अभी तक अमेरिकी डॉलर की तुलना में लगभग 6 प्रतिशत नीचे आ चुकी है। अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों में लगातार हो रही ब्याज दरों में वृद्धि के कारण विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने भारत से पिछले 6 माह के दौरान लगभग 230,000 करोड़ रुपए से अधिक की राशि निकाली है। दूसरे, भारत पूरे विश्व में कच्चे तेल के सबसे बड़े आयातक देशों में शामिल है। भारत अपनी तेल खपत का लगभग 80 प्रतिशत से अधिक भाग आयात करता है। हाल ही के समय में भारत में आर्थिक गतिविधियों में आई तेजी के चलते कच्चे तेल की मांग बहुत तेजी से बढ़ी है। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम भी रिकॉर्ड 130 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गए थे। अतः भारत को कच्चे तेल की कीमत चुकाने के लिए अमेरिकी डॉलर की जरूरत हुई है और इसकी मांग बढ़ने से अमेरिकी डॉलर की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में लगातार बढ़ रही है। केवल भारतीय रुपया ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देशों की मुद्राओं की कीमत में कमी दृष्टिगोचर है। बल्कि अन्य देशों की मुद्राओं की कीमत भारतीय रुपए की तुलना में और अधिक तेजी से गिरी है। इस दृष्टि से भारतीय रुपए की कीमत अन्य देशों की मुद्राओं की तुलना में (अमेरिकी डॉलर को छोड़कर) बढ़ रही है।

अभी हाल ही के समय में यूरो की कीमत गिरते गिरते अब अमेरिकी डॉलर की कीमत तक नीचे आ गई है। इसका मुख्य कारण भी निवेशकों द्वारा यूरोजोन से निवेश बाहर निकाल कर अमेरिका की ओर मुड़ते जाना है। वर्ष 2021 में एक यूरो की कीमत लगभग 90 रुपए थी जो अब लगभग 80 रुपए तक नीचे आ गई है। इस प्रकार यूरो की तुलना में रुपए की कीमत में सुधार हुआ है। इसी प्रकार, एक जापानी येन की कीमत वर्ष 2021 में 0.70 रुपए थी जो आज 0.58 रुपए हो गई है तथा एक पाउंड स्टर्लिंग की कीमत वर्ष 2021 में 101 रुपए थी जो अब घटकर 94 रुपए हो गई है एवं एक फ्रेंच फ्रैंक की कीमत वर्ष 2021 में 13.60 रुपए थी जो अब घटकर 12.2 रुपए हो गई है। इस प्रकार उक्त चारों मुख्य मुद्राओं की तुलना में भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़ी है परंतु केवल अमेरिकी डॉलर की तुलना में उक्त वर्णित कारणों के चलते घटी है। वैश्विक स्तर पर अमेरिकी डॉलर का लगातार इस प्रकार मजबूत होते जाना एवं अन्य देशों की मुद्रा की कीमत गिरते जाना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों के लिए ठीक नहीं है। क्योंकि, जैसे यदि भारत का ही उदाहरण लें, भारतीय रुपए की कीमत लगातार अमेरिकी डॉलर की तुलना में गिरते जाने के मायने यह है कि भारत द्वारा आयात की जाने वाली वस्तुओं का महंगा होते जाना एवं भारत द्वारा अधिक अमेरिकी डॉलर का भुगतान किया जाना। इसके परिणाम स्वरूप भारत में भी मुद्रा स्फीति की दर में वृद्धि हो रही है एवं इसे आयातित महंगाई भी कहा जाता है। इस प्रकार भारत सहित विश्व के अन्य देशों की विदेशी व्यापार करने पर अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता बढ़ गई है। हालांकि विश्व के समस्त देश वैश्विक स्तर पर विदेशी व्यापार करने के लिए विदेशी मुद्रा, जैसे डॉलर, यूरो, रॅन्मिन्बी और पाउंड का इस्तेमाल करते रहे हैं, और अब चीन की मुद्रा युआन का इस्तेमाल भी किया जाने लगा है। परंतु, अमेरिकी डॉलर अभी भी विदेशी व्यापार के लिए सबसे प्रभावी मुद्रा बना हुआ है और इसीलिए पूरी दुनिया में अमेरिका की बादशाहत भी है। परंतु अब विदेशी व्यापार में अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने के उद्देश्य से भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में भारतीय रुपए को विदेशी व्यापार में भुगतान के माध्यम के रूप में स्वीकार्यता प्रदान की है। विशेष रूप से रूस एवं यूक्रेन के बीच छिड़े युद्ध के बाद रूस और इसके पूर्व ईरान पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के चलते इन देशों से कच्चे तेल के आयात में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए इन देशों द्वारा कच्चे तेल के भुगतान के रूप में भारतीय रुपए को स्वीकार करने पर अपनी सहमति दे दी गई थी। अतः अब न केवल रूस और ईरान बल्कि कई अन्य कई देशों यथा श्रीलंका, बांग्लादेश एवं अरब देश भी भारत से आयात और निर्यात करने पर भारतीय रुपए में भुगतान कर सकेंगे एवं भुगतान प्राप्त कर सकेंगे। इससे अमेरिकी डॉलर की मांग भारत के लिए कम होगी। भारत द्वारा केवल रूस से ही प्रति माह लगभग 300 करोड़ अमेरिकी डॉलर की वस्तुओं (विशेष रूप से कच्चा तेल) का आयात किए जाने के स्तर को शीघ्र ही प्राप्त किया जा रहा है जो पूरे वर्ष में लगभग 3600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाने की सम्भावना है। भारत द्वारा इस राशि का भुगतान रुपए में किया जा सकेगा एवं भारत की अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता इस स्तर तक कम हो जाएगी और रुपए की कीमत पर दबाव भी कम होगा। जो अंततः भारत में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में भी सहायक होगा। इससे भारत के साथ विदेशी व्यापार करने वाले देशों को भी लाभ होगा क्योंकि इन देशों द्वारा भारत से आयात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत का भी भारतीय रुपए में ही भुगतान किया जा सकेगा।

हालिया राजनीतिक घटनाएं दर्शाती हैं कि मौजूदा दल बदल कानून प्रभावी साबित नहीं हो पा रहा है

रमेश सर्राफ धमोरा

महाराष्ट्र में शिवसेना पार्टी के विधायकों द्वारा दलबदल करने के कारण मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की सरकार को गिरा कर शिवसेना के बागी नेता एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में नई सरकार के गठन के बाद देश का दल बदल निरोधक कानून अप्रासंगिक बनकर रह गया है। इस कानून की कमजोरियों का फायदा उठाकर सांसद, विधायक लगातार दल बदल कर रहे हैं। महाराष्ट्र की हालिया घटना के बाद पूरे देश में इस बात को लेकर जोरों से चर्चा है कि मौजूदा कानून दलबदल को रोक पाने में कमजोर साबित हो रहा है। इसे और अधिक मजबूत बनाने की जरूरत है। ताकि दल बदल जैसे सत्ता बनाने बिगाड़ने के खेल पर रोक लग सके। महाराष्ट्र में बड़े पैमाने पर हुए दलबदल में भी भाजपा की भूमिका खुलकर सामने आई है। इससे पूर्व भाजपा कर्नाटक व मध्य प्रदेश में बड़े पैमाने पर विधायकों से दलबदल करवा कर वहां की सरकारों को अपदस्थ कर भाजपा की सरकार बनवा चुकी है। 2014 के बाद दलबदल का खेल कुछ अधिक ही खेले जाने लगा है। 2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर में पूरी सरकारों को ही अपदस्थ कर वहां भाजपा की सरकार बनवा दी गई थी।

उसके बाद गोवा में बहुमत नहीं मिलने के बावजूद सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस को दरकिनार कर भाजपा की सरकार बनाई गई थी। 2018 के विधानसभा चुनाव में राजस्थान में पूर्ण बहुमत नहीं मिलने पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बसपा से चुनाव जीते सभी 6 विधायकों को कांग्रेस में शामिल करवा कर बहुमत प्राप्त कर लिया था। हाल ही में बिहार विधानसभा में लालू प्रसाद यादव की पार्टी राजद ने असदुद्दीन ओवैसी की ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी के 5 में से 4 विधायकों को दल बदल करवा कर राजद में शामिल करवा लिया है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चन्द्रशेखर राव कांग्रेस के अधिकांश विधायकों को अपनी पार्टी में शामिल करवा चुके हैं। सिक्किम में सिक्किम डेमोक्रेटिक पार्टी के दस विधायक दलबदल कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। चर्चा है कि गोवा कांग्रेस के मौजूदा विधायक कभी भी भाजपा में जा सकते हैं। मौजूदा नियमों के मुताबिक किसी पार्टी के दो तिहाई व उससे अधिक विधायक एक साथ किसी अन्य पार्टी में विलय करते हैं तो उनकी सदस्यता बच जाती है। इसी का फायदा उठाकर राजनीतिक दलों द्वारा धड़ाधड़ दलबदल करवाया जा रहा है। चुनावों के दौरान भी प्रदेशों में बड़े पैमाने पर विधायकों द्वारा दलबदल किया जाता है। हालांकि उस समय विधानसभाओं के चुनाव होने होते हैं ऐसे में दलबदल का सरकार की सेहत पर प्रभाव नहीं पड़ता है। जनता द्वारा निर्वाचित सांसद या विधायक तो अपनी सुविधानुसार दल बदल कर सत्ता का लाभ प्राप्त कर लेता है। मगर ऐसे में उनको वोट देने वाले मतदाता खुद को ठगा हुआ महसूस करने लगते हैं। किसी पार्टी विशेष के पक्ष में मतदान कर चुनाव जिताने वाले लोगों को उस वक्त बड़ा झटका लगता है जब उन्हें पता लगता है कि उनके वोटों से जीता हुआ जनप्रतिनिधि उनके विरोधी दल की पार्टी में शामिल हो गया है। लगातार दल बदल की हो रही घटनाओं को लेकर लोगों में चर्चा है कि दल बदल विरोधी कानून को और अधिक मजबूत बनाया जाए ताकि जिस कार्यकाल के लिए जनप्रतिनिधि निर्वाचित हुआ है। उस कार्यकाल में वह दलबदल नहीं कर सके और यदि वह दलबदल करता है तो उसकी सदस्यता समाप्त हो जाए। अक्टूबर 1967 में हरियाणा के एक विधायक गया लाल ने एक ही दिन में तीन बार दल बदलकर इस मुद्दे को राजनीति की मुख्यधारा में ला दिया था। उस दौर में आया राम गया राम की राजनीति देश में काफी प्रचलित हो चली थी। अंततः राजीव गांधी के प्रधानमंत्री रहते 1985 में 52वें संविधान संशोधन के माध्यम से देश में दलबदल विरोधी कानून पारित कर इसे संविधान की दसवीं अनुसूची में जोड़ा गया था। इस कानून का मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीति में दलबदल की कुप्रथा को समाप्त करना था। इस कानून के तहत किसी जनप्रतिनिधि को अयोग्य घोषित किया जा सकता है। अगर एक निर्वाचित सदस्य स्वेच्छा से किसी राजनीतिक दल की सदस्यता छोड़ देता है या कोई निर्दलीय निर्वाचित सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है या किसी सदस्य द्वारा सदन में पार्टी के रुख के विपरीत वोट किया जाता है या कोई सदस्य स्वयं को वोटिंग से अलग रखता है या छह महीने की अवधि के बाद कोई मनोनीत सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है। मगर अगर किसी पार्टी के एक तिहाई विधायक या सांसद दूसरी पार्टी के साथ जाना चाहें तो उनकी सदस्यता खत्म नहीं होगी। 2003 में इस कानून में संशोधन भी किया गया। जब ये कानून बना तो प्रावधान ये था कि अगर किसी मूल पार्टी में बंटवारा होता है और एक तिहाई विधायक एक नया ग्रुप बनाते हैं तो उनकी सदस्यता नहीं जाएगी। लेकिन इसके बाद बड़े पैमाने पर दल-बदल हुए और ऐसा महसूस किया गया कि पार्टी में टूट के प्रावधान का फायदा उठाया जा रहा है। इसलिए ये प्रावधान खत्म कर दिया गया। लगातार दलबदल से निपटने में कानून को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए 2003 में दसवीं अनुसूची में संविधान में निन्यानवे संशोधन का प्रस्ताव किया गया था। 16 दिसंबर 2003 को लोकसभा द्वारा और 18 दिसंबर 2003 को राज्यसभा द्वारा यह बिल पारित किया गया था। 1 जनवरी 2004 को राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त हुई और संविधान (निन्यानवे संशोधन) अधिनियम- 2003 को 2 जनवरी 2004 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया। 2003 के अधिनियम के अनुसार दलबदल विरोधी कानून में एक राजनीतिक दल को किसी अन्य राजनीतिक दल में या उसके साथ विलय करने की अनुमति दी गई है। बशर्ते कि उसके कम-से-कम दो-तिहाई सदस्य विलय के पक्ष में हों। इस प्रकार इस कानून के तहत एक बार अयोग्य सदस्य उसी सदन की किसी सीट पर किसी भी राजनीतिक दल से चुनाव लड़ सकते हैं। दलबदल के आधार पर अयोग्यता संबंधी प्रश्नों पर निर्णय के लिये मामले को सदन के सभापति या अध्यक्ष के पास भेजा जाता है जो कि न्यायिक समीक्षा के अधीन होता है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता में संसद भवन में आयोजित पीठासीन अधिकारियों की बैठक में दल बदल विरोधी कानून को मजबूत करने पर भी चर्चा हुई। बैठक में तय हुआ कि इस पर अंतिम निर्णय से पहले सभी हित धारकों जैसे पीठासीन अधिकारियों, संवैधानिक विशेषज्ञों और कानूनी विद्वानों के साथ विचार विमर्श किया जाए।

अखिलेश की रणनीतियां आगे भी ऐसे ही विफल होती रहीं तो कोई सहयोगी साथ नहीं बचेगा

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव का खराब समय बदलने का नाम नहीं ले रहा है। अभी समाजवादी पार्टी का लोकसभा की दो सीटों के लिए उप-चुनाव में मिली हार का जख्म सूखा भी नहीं था और एक बार फिर राष्ट्रपति चुनाव ने अखिलेश यादव के जख्मों को दोबारा से कुरेद दिया है। सपा प्रमुख राष्ट्रपति चुनाव में जिस विपक्षी एकजुटता की बात कर रहे थे, वह पूरी तरह से तार-तार हो गई। सपा विधायक शिवपाल सिंह यादव व सहयोगी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर की खुली बगावत राष्ट्रपति चुनाव में भी देखने को मिली। राष्ट्रपति चुनाव के परिणामों ने यह बात साफ कर दी है कि सपा गठबंधन में शिवपाल यादव और ओम प्रकाश राजभर के अलावा कुछ और भितरघाती भी मौजूद हैं। राष्ट्रपति चुनाव में राजग प्रत्याशी द्रौपदी मुर्मू को उत्तर प्रदेश से 282 वोट से बढ़कर 287 वोट मिले जो चौंकाने वाली बात थी। यूपी से विपक्ष के साझा उम्मीदवार यशवंत सिन्हा के 119 तय माने जा रहे वोटों में आठ मतों की सेंध सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की सियासी दूरदर्शिता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर रहे हैं। अखिलेश चुनावी जंग में तो पिछड़ ही रहे हैं, सियासी मोर्चे पर भी वह सलीके से अपनी गोटें नहीं बिछा पा रहे हैं, इसी वजह से उनके सहयोगी एक-एक कर दूर होते जा रहे हैं। पहले महान दल ने साथ छोड़ा, अब ओम प्रकाश राजभर मुसीबत खड़ी कर रहे हैं। चाचा शिवपाल यादव तो शुरू से ही भतीजे की मुखालफत करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। गौरतलब है कि राष्ट्रपति चुनाव में उत्तर प्रदेश की 403 सीटों वाली विधानसभा के विधायकों के मतों का मूल्य सबसे अधिक 208 था। इसलिए इस राज्य के मतों पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और विपक्ष, दोनों की नजर थी। शुरुआत में माना जा रहा था कि राजग प्रत्याशी द्रौपदी मुर्मू को भाजपा गठबंधन के 273 विधायकों का वोट मिल जाएगा, जबकि विपक्ष के साझा उम्मीदवार यशवंत सिन्हा के लिए सपा गठबंधन के 125 सहित कांग्रेस के दो मिलाकर 127 विधायकों के वोट का आंकड़ा था। द्रौपदी मुर्मू के आदिवासी वर्ग की महिला होने के चलते बसपा प्रमुख मायावती पहले ही उनके समर्थन की बात कह चुकी थीं।

इस तरह बसपा का एक वोट राजग के साथ आने से 274 मत की व्यवस्था हो गई। लोकतांत्रिक जनसत्ता दल के रघुराज प्रताप सिंह ने भी अपने दो वोट मुर्मू को देने की घोषणा की तो आंकड़ा 276 पर पहुंच गया, लेकिन कांग्रेस के दो वोट सहित सपा गठबंधन के पास 127 वोट बरकरार थे। विपक्ष के साक्षा उम्मीदवार यशवंत सिन्हा को भी यूपी से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन उनकी उम्मीदों पर तब पानी फिर गया जब द्रौपदी मुर्मू समर्थन मांगने लखनऊ आईं। अचानक ही सपा मुखिया के चाचा शिवपाल सिंह यादव और सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर मुख्यमंत्री के सरकारी आवास पर पहुंच गए और राजग प्रत्याशी के समर्थन में उन्होंने समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव के खिलाफ खुली बगावत कर दी। इसके साथ ही विपक्ष की मुट्ठी से शिवपाल का एक और सुभासपा के छह समेत कुल सात वोट और खिसक गए। वैसे इसके लिए अखिलेश कम कसूरवार नहीं थे, क्योंकि यशवंत सिन्हा जब लखनऊ आए थे और सपा प्रमुख के साथ उन्होंने मीटिंग की थी, तब अखिलेश ने इस मीटिंग में ओम प्रकाश राजभर और शिवपाल यादव को न्योता नहीं दिया था, सिर्फ रालोद के जयंत चौधरी को बुलाया गया था। यहीं से ओम प्रकाश राजभर अपना आपा खो बैठे थे। इसके बाद ऐसा लग रहा था कि यशवंत सिन्हा को सपा गठबंधन और कांग्रेस के 120 विधायकों के वोट तो मिल ही जाएंगे। मगर, मतदान वाले दिन सपा विधायक नाहिद हसन वोट डालने नहीं आए, जिससे यशवंत का एक और वोट कम हो गया। सुभासपा के अब्बास अंसारी के भी वोट न देने से मुर्मू के पक्ष में कुल 282 वोट पड़ने की उम्मीद थी, लेकिन चुनाव परिणाम ने अखिलेश के लिए एक बार फिर खतरे की घंटी बजा दी।

NCR समाचार

संपादकीय कार्यालय

जी-12/276, संगम विहार, नई दिल्ली-110062. सोमवार से शनिवार प्रात: 9:00 से सायं 9:00

फोन: 8888883968, 9811111715

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अत: भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

विदेशी निवेशकों की वापसी से शेयर बाजार का बढ़ा उत्साह

नई दिल्ली। शुक्रवार को खत्म हुआ कारोबारी सप्ताह घरेलू शेयर बाजार के लिए जबरदस्त मजबूती वाला सप्ताह रहा। इस सप्ताह के पांचों कारोबारी दिन के दौरान शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे। सबसे बड़ी बात ये रही कि इस सप्ताह विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) लंबे अंतराल के बाद नेट बायर (खरीदार) के रूप में कारोबार करते नजर आए। जबकि पिछले कुछ महीनों से उनकी भूमिका नेट सेलर (बिकवाल) की ही रही थी। शुक्रवार को खत्म हुए सप्ताह में लगातार मजबूती का रुख बने रहने की वजह से बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का सेंसेक्स 2,311.5 अंक यानी 4.29 प्रतिशत की मजबूती के साथ 56,072.23 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की तरह ही नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के निफ्टी ने 670.30 अंक यानी 4.17 प्रतिशत की तेजी के साथ 16,719.45 अंक के स्तर पर अपने साप्ताहिक कारोबार का अंत किया। शेयर बाजार के जानकारों के मुताबिक सकारात्मक वैश्विक संकेत, विदेशी निवेशकों की बाजार में खरीदार के तौर पर वापसी, जून तिमाही के दौरान दिग्गज कंपनियों के उत्साहजनक नतीजे, मॉनसून की वापसी और अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड ऑयल की कीमत पर बना दबाव घरेलू शेयर बाजार के सेंटीमेंट्स को मजबूत करने के अहम कारक रहे। इसके साथ ही अमेरिकी बाजार में आई तेजी ने भी दुनिया के अन्य शेयर बाजारों के साथ ही भारतीय

शेयर बाजार को भी मजबूती देने में बड़ी भूमिका निभाई। पूरे सप्ताह के कारोबार के दौरान बीएसई के लार्ज कैप इंडेक्स ने ओवरऑल 4 प्रतिशत की मजबूती दर्ज की। इस इंडेक्स में शामिल शेयरों में लार्सन एंड टूब्रो इंफोटेक, पीरामल इंटरप्राइजेज, इंडसइंड बैंक, एक्सिस बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, वेदांता और अल्ट्राटेक सीमेंट ने खरीदारी के सपोर्ट से सबसे ज्यादा बढ़त दर्ज की। इसी तरह बीएसई के मिडकैप इंडेक्स ने पूरे सप्ताह के कारोबार के दौरान ओवरऑल 3.5 प्रतिशत की तेजी दर्ज की। इस इंडेक्स में शामिल आदित्य बिरला कैपिटल, केनरा बैंक, श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस कारपोरेशन, क्लीन साइंस एंड टेक्नोलॉजी और आरबीएल बैंक के शेयरों में 10 प्रतिशत से अधिक की बढ़त दर्ज की गई।

स्मॉल कैप की बात की जाए तो बीएसई के स्मॉल कैप इंडेक्स में भी पूरे सप्ताह के कारोबार के दौरान ओवरऑल 4 प्रतिशत की छलांग लगाई। इंडेक्स में शामिल एजीज लॉजिस्टिक, अंजनी पोर्टलैंड सीमेंट्स, पीटीसी इंडस्ट्रीज, रेपको होम

- **शुक्रवार को खत्म हुआ कारोबारी सप्ताह घरेलू शेयर बाजार के लिये जबरदस्त मजबूती वाला सप्ताह रहा। इस सप्ताह के पांचों कारोबारी दिन के दौरान शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे।**
- **सप्ताह में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक लंबे अंतराल के बाद नेट बायर (खरीदार) के रूप में कारोबार करते नजर आये। जबकि पिछले कुछ महीनों से उनकी भूमिका नेट सेलर (बिकवाल) की ही रही थी।**
- **शुक्रवार को खत्म हुए सप्ताह में लगातार मजबूती का रुख बने रहने की वजह से बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का सेंसेक्स 2,311.5 अंक यानी 4.29 प्रतिशत की मजबूती के साथ 56,072.23 अंक के स्तर पर बंद हुआ।**

फाइनेंस, अनंतराज, एजी ग्रीनपैक, क्विक हील टेक्नोलॉजी, ओमैक्स, लासा सुपर जेनेरिक्स, ब्राइटकॉम ग्रुप, इगाराशि मोटर्स, ऊर्जा ग्लोबल, संदूर मैंगनीज, नवकार, सिंकॉम फॉर्मूलेशंस और हैपिएस्ट माइंड्स टेक्नोलॉजी के शेयरों में 20 से 30 प्रतिशत तक की बढ़त दर्ज की गई। कारोबार के लिहाज से शुक्रवार को खत्म हुए सप्ताह के दौरान बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड कंपनियों में से रिलायंस इंडस्ट्रीज के मार्केट केपीटलाइजेशन में सबसे ज्यादा बढ़त दर्ज की गई। इसके अलावा टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), आईसीआईसीआई बैंक और इंफोसिस मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर रहे।

दूसरी ओर डॉ. रेड्डीज लेबोरेट्रीज के मार्केट कैप में इस कारोबारी सप्ताह के दौरान सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई। सेक्टोरल इंडेक्स के परफॉर्मेंस पर नजर डालें, तो इस कारोबारी सप्ताह के दौरान पीएसयू बैंक इंडेक्स में सबसे अधिक 7.7 प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई। जबकि आईटी इंडेक्स 6.3 प्रतिशत, बैंक इंडेक्स 6 प्रतिशत और मेटल इंडेक्स 5.4 प्रतिशत की मजबूती के साथ ऊपर की ओर चढ़ा। शेयर बाजार में खरीदारी और बिकवाली के लिहाज से सबसे उल्लेखनीय बात विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों का एक बार फिर खरीदारी शुरू करना रहा। इस कारोबारी सप्ताह के दौरान विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार में 4,037.29 करोड़ रुपये की खरीदारी की, वहीं घरेलू संस्थागत निवेशकों ने इस कारोबारी सप्ताह के दौरान 940.47 करोड़ रुपये की खरीदार की। खरीदारी और बिकवाली के आंकड़ों को मिलाकर देखें, तो जुलाई में विदेशी निवेशक अभी तक 6,421.84 करोड़ रुपये की बिकवाली कर चुके हैं, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों ने इस महीने अभी तक 8,307.51 करोड़ रुपये की खरीदारी की है। शेयर बाजार की चाल के संबंध में धामी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत धामी का कहना है कि यूएस फेडरल रिजर्व की तरफ से ब्याज दरों में आक्रामक बढ़ोतरी करने का डर कम होने की वजह से दुनियाभर के शेयर बाजार को राहत मिली है। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में गिरावट का रुख बनने से भी वैश्विक माहौल सकारात्मक हुआ है। इसी तरह मार्केट एक्सपर्ट मयंक मोहन का कहना है कि विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की घरेलू बाजार में खरीदार के तौर पर वापसी होने से भारतीय निवेशकों का हौसला भी इस सप्ताह बढ़ता हुआ नजर आया। इसी कारण इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में बिकवाली के मुकाबले लिवाली अधिक तेज रही है।

घरेलू शेयर बाजार ने इस सप्ताह के पहले 15 जुलाई को खत्म हुए सप्ताह के दौरान भी आखिरी कारोबारी दिन मजबूती हासिल की थी। इस तरह 22 जुलाई को लगातार छठे कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजार ने मजबूती दर्ज कर इस बात का संकेत दिया है कि घरेलू बाजार के फंडामेंटल लगातार मजबूत बने हुए हैं। इससे ये बात भी स्पष्ट होती है कि वैश्विक परिस्थितियों की वजह से ही अभी तक घरेलू शेयर बाजार लगातार गिरता रहा है। ऐसे में अगर अंतरराष्ट्रीय मोर्चे पर कोई बड़ा उलटफेर नहीं हुआ, तो आने वाले दिनों में भारतीय शेयर बाजार में मजबूती बने रहने की उम्मीद की जा सकती है।

दुनिया में बढ़ रही महंगाई, लोग खानपान में कटौती के लिये मजबूर

सिंगापुर। दुनिया भर में आसमान छूती महंगाई के बीच लोगों को सबसे ज्यादा परेशान खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतें कर रही हैं। विकासशील देशों के अलावा सिंगापुर जैसी उन्नत अर्थव्यवस्था वाला देश भी इसकी मार से अछूता नहीं है। घरेलू कीमतों को काबू में करने के लिए कई देशों ने खाद्य निर्यात पर पाबंदी लगा दी है। मलेशिया ने पिछले महीने जिंदा ब्रॉइलर चिकन के निर्यात पर रोक लगा दी।

मलेशिया से बड़ी संख्या में पोल्ट्री का आयात करने वाला सिंगापुर भी इस फैसले से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। तेल से लेकर चिकन तक की कीमतें बढ़ने से खानपान कारोबार से जुड़े प्रतिष्ठानों को भी दाम बढ़ाने पड़े हैं। इस वजह से लोगों को खानपान की चीजों के लिए 10-20 फीसदी तक ज्यादा दाम

चुकाना पड़ रहा है। उपभोक्ताओं को समान मात्रा की वस्तु के लिए या तो ज्यादा रकम देनी पड़ रही है या फिर अपने खानपान में कटौती करनी पड़ रही है। लेबनान में संयुक्त राष्ट्र खाद्य कार्यक्रम लोगों को भोजन खरीदने के लिए नकद दे रहा है।

बेरुत की रहने वाली ट्रेसी सलिबा कहती हैं कि मैं अब केवल आवश्यक सामान और भोजन ही खरीद रही हूं। आर्थिक अनुसंधान एजेंसी कैपिटल इकोनॉमिक्स के मुताबिक उभरते बाजारों में खाद्य वस्तुओं की कीमतें इस वर्ष करीब 14 फीसदी व विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सात फीसदी से अधिक बढ़ी हैं।

एजेंसी ने अनुमान जताया है कि अधिक मुद्रास्फीति के कारण विकसित बाजारों में इस साल और अगले साल भी खान-पान की वस्तुओं पर परिवारों को अतिरिक्त सात अरब डॉलर खर्च करने पड़ेंगे। विश्व खाद्य कार्यक्रम और संयुक्त राष्ट्र की चार अन्य एजेंसियों की वैश्विक रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले वर्ष 2.3 अरब लोगों को गंभीर या मध्यम स्तर की भूखमरी का सामना करना पड़ा।

सूडान में हालात बेहद खराब हैं जहां मुद्रास्फीति इस वर्ष 245 फीसदी के अविश्वसनीय स्तर तक पहुंच सकती है। वहीं ईरान में भी मई के महीने में चिकन, अंडे और दूध के दाम 300 फीसदी तक बढ़ चुके है। अकाल, आपूर्ति श्रृंखला के मुद्दे, ऊर्जा के ऊंचे दाम और उर्वरक की कीमतों के कारण दुनियाभर में खाद्य वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं। इसकी ज्यादा मार विकासशील देशों के निम्न वर्ग के लोगों पर पड़ रही है और उनके लिये भरपेट खाने का इंतजाम कर पाना भी मुश्किल हो गया है।

आईसीआईसीआई बैंक को जून तिमाही में 6905 करोड़ रुपये का मुनाफा

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के तीसरे सबसे बड़े आईसीआईसीआई बैंक ने पहली तिमाही (अप्रैल-जून) के नतीजे का ऐलान कर दिया है। वित्त वर्ष 2022-23 की जून तिमाही में बैंक का एकल आधार पर मुनाफा 50 फीसदी उछलकर 6905 रुपये पर पहुंच गया। एक साल पहले की समान तिमाही में बैंक को 4,616 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। बैंक ने शनिवार को शेयर बाजारों को दी गई सूचना में कहा कि जून तिमाही में बैंक का मुनाफा 49.59 फीसदी बढ़कर 6905 रुपये रहा है, जबकि एक साल पहले की समान तिमाही में बैंक को 4,616 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। आईसीआईसीआई बैंक के मुताबिक चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में ब्याज से आय भी बढ़कर 23,671.54 करोड़ रुपये हो गई। पिछले साल की समान तिमाही में यह 20,383.41 करोड़ रुपये रही थी।

यस बैंक का शुद्ध लाभ 50 प्रतिशत बढ़कर हुआ 311 करोड़ रुपये

नई दिल्ली। फंसे कर्जों में कमी आने और आय बढ़ने से निजी क्षेत्र के यस बैंक का चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 50 प्रतिशत बढ़कर 311 करोड़ रुपये हो गया। बैंक ने शनिवार को शेयर बाजारों को दी गई सूचना में कहा कि एक साल पहले की समान तिमाही में उसका शुद्ध लाभ 207 करोड़ रुपये रहा था।

अप्रैल-जून 2022 की तिमाही में बैंक की कुल आय बढ़कर 5,916 करोड़ रुपये हो गई जबकि एक साल पहले की समान अवधि में यह 5,394 करोड़ रुपये रही थी। बैंक के लाभ में बढ़ोतरी की बड़ी वजह फंसे कर्जों के अनुपात में आई गिरावट रही है। उसके सकल ऋण में गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) का अनुपात घटकर 13.45 प्रतिशत पर

आ गया जबकि पिछले साल की समान तिमाही में यह अनुपात 15.60 प्रतिशत था। वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में शुद्ध एनपीए यानी फंसे कर्जों का अनुपात भी 5.78 प्रतिशत से घटकर 4.17 प्रतिशत पर आ गया। फंसे कर्जों एवं अन्य आकस्मिक खर्चों के लिए वित्तीय प्रावधान की जरूरत भी आलोच्य तिमाही में घटकर 175 करोड़ रुपये रह गई जो अप्रैल-जून 2021 की तिमाही में 457 करोड़ रुपये रही थी। यस बैंक ने कहा कि उसके वैकल्पिक बोर्ड के गठन के साथ पुनर्गठन योजना भी गत 15 जुलाई से अमल में आ गई है। हालांकि इसे अभी शेयरधारकों की मंजूरी मिलनी बाकी है।

बैंक के मुताबिक, नए बोर्ड ने प्रशांत कुमार को नए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के तौर पर तीन साल के लिए नियुक्त करने की अनुशंसा की है। इसके अलावा बैंक ने करीब 48,000 करोड़ रुपये की तनावग्रस्त परिसंपत्तियों की बिक्री के मकसद से जेसी फ्लॉवर्स के साथ मिलकर एक परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनी बनाने के लिए बाध्यकारी समझौता किए जाने की जानकारी भी शेयर बाजारों को दी है।

खुबल गैस क्षेत्र के लिये ओएनजीसी ने एजीसीएल के साथ किये बिक्री समझौते

अगरतला। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस कंपनी ओएनजीसी ने त्रिपुरा के खुबल में विकसित किए जा रहे गैस क्षेत्र के मौद्रीकरण के लिए गेल इंडिया और असम गैस कंपनी लिमिटेड (एजीसीएल) के साथ गैस बिक्री करार किये हैं। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि इस बिक्री करार के तहत खुबल गैस गैदरिंग स्टेशन (जीजीएस) से गेल और एजीसीएल को 50,000-50,000 घन मीटर गैस की आपूर्ति की जाएगी। उत्पादन शुरू होने के साथ नॉर्थ त्रिपुरा जिले में स्थित खुबल इस राज्य में ओएनजीसी का दसवां उत्पादन क्षेत्र होगा। खुबल स्टेशन की क्षमता 4,40,000 घन मीटर गैस के प्रसंस्करण की होगी। ओएनजीसी त्रिपुरा में परिसंपत्ति प्रबंधक तरुण मलिक ने कहा कि यह न केवल ओएनजीसी, गेल और एजीसीएल के लिए बल्कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों के लिये भी अहम पल है। अब उद्योगों और लोगों के घरों तक अधिक मात्रा में गैस पहुंचेगी। खुबल गैस क्षेत्र से उत्पादन वर्ष 2024 से शुरू होने की उम्मीद है। उस समय तक इंद्रधनुष गैस ग्रिड लाइन (आईजीजीएल) पाइपलाइन भी शुरू हो जाएगी जो पूर्वोत्तर के गैस क्षेत्र के लिये बड़े स्तर की अवसंरचना परियोजना है।

एडीबी ने हिमाचल प्रदेश में सुरक्षित पेयजल के लिये 770 करोड़ रुपये का कर्ज किया मंजूर

नई दिल्ली। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने हिमाचल प्रदेश में सुरक्षित पेयजल एवं स्वच्छता परियोजना के वित्तपोषण के लिए 9.63 करोड़ डॉलर (लगभग 770 करोड़ रुपये) का कर्ज मंजूर किया है। एशियाई विकास बैंक ने शनिवार को एक विज्ञप्ति में बताया कि यह ऋण हिमाचल प्रदेश ग्रामीण पेयजल सुधार और आजीविका परियोजना के तहत दिया गया है।

इसमें कहा गया है कि प्रदेश की 90 फीसदी से अधिक ग्रामीण आबादी की पेयजल तक पहुंच है लेकिन जलापूर्ति ढांचा पुराना एवं खस्ताहाल है जिससे सेवा की गुणवत्ता खराब रहती है। एशियाई विकास बैंक की इस परियोजना के तहत हिमाचल प्रदेश के 75,800 घरों को इस सेवा से जोड़ा जायेगा और

दस जिलों में 370,000 निवासियों को स्वच्छ पेयजल की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी।

एशियाई विकास बैंक में शहरी विकास एवं दक्षिण एशिया के लिए जल परियोजना प्रशासन में यूनिट प्रमुख जूड कोल्हेस ने कहा कि इस परियोजना में जल आपूर्ति अवसंरचना को बेहतर किया जाएगा तथा संस्थागत क्षमता मजबूत की जाएगी। इस तरह सुरक्षित, टिकाऊ तथा समावेशी ग्रामीण जल आपूर्ति एवं स्वच्छता सेवा सुनिश्चित की जायेगी।

अगस्त महीने में 14 दिन बंद रहेंगे बैंक

नई दिल्ली। डिजिटल बैंकिंग के दौर में बैंक से संबंधित काम के लिए यदि आपको बैंक जाना जरूरी है, तो यह खबर आपके काम की है। अगस्त का महीना कई मायनों में खास होता है। दरअसल, इस महीने में कई पर्व एवं त्यौहार होते हैं, जबकि इसी महीने में स्वतंत्रता दिवस भी है। लिहाजा इस महीने में छुट्टियां ज्यादा होती है। इसकी वजह से अगस्त में बैंक 14 दिन बंद रहेंगे। आरबीआई ने बैंकों की अगस्त महीने की होने वाली छुट्टियों से संबंधित सूची जारी कर दी है। आरबीआई के मुताबिक अगस्त में कुल 14 दिन बैंक बंद रहेंगे। दरअसल, स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी जैसे बड़े त्योहार इसी महीने में होते हैं।

उत्तराखंड में खाद्यान्न पर जीएसटी लगाये जाने के विरोध में खड़े हुए व्यापारी संगठन

हल्द्वानी। उत्तराखंड के व्यापारी संगठनों ने खाद्यान्नों पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) लगाये जाने और जीएसटी की नीतियों में लगातार हो रहे बदलाव के विरोध में 25 जुलाई से विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की है।

प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल उत्तराखंड के अध्यक्ष नवीन वर्मा ने शनिवार को संवाददाताओं से कहा कि सोमवार से समूचे प्रदेश के जिला एवं शहरी क्षेत्रों में सरकार की जीएसटी सर्वे नीतियों तथा खाद्यान्नों पर जीएसटी लगाने का पुरजोर विरोध किया जायेगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने खाद्यान्नों पर कभी भी जीएसटी नहीं लगाने का भरोसा दिया था लेकिन आज खाद्यान्नों पर जीएसटी लगा दिया गया है। इससे आम आदमी की मुश्किलें और बढ़ गई हैं।इसके साथ ही उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में जीएसटी सर्वे के

नाम पर व्यापारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उनका संगठन इसके खिलाफ अपनी आवाज पुरजोर ढंग से उठाएगा। उन्होंने कहा, जरूरत पड़ने पर व्यापारी प्रतिष्ठान बंद कर आंदोलन की राह भी अपनायेंगे।

व्यापारिक संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि कोविड-19 महामारी आने के बाद से ही कारोबार पर काफी असर पड़ा है। कोरोना काल में कारोबारी प्रतिष्ठान बंद रहने से उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन सरकार की तरफ से उन्हें कोई भी राहत नहीं दी गई।

चीन, पाकिस्तान ने आर्थिक गलियारे में दिलचस्पी रखने वाले अन्य देशों को भी दिया न्योता

इस्लामाबाद। चीन और पाकिस्तान ने दोनों देशों के बीच बन रहे अरबों डॉलर के आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) का हिस्सा बनने में दिलचस्पी रखने वाले दूसरे देशों को इसका न्योता देते हुए कहा है कि यह आपसी सहयोग का एक 'खुला एवं समावेशी मंच' है। वर्ष 2013 में शुरू हुआ यह आर्थिक गलियारा पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को चीन के शिनझियांग क्षेत्र में स्थित काशगर से जोड़ने वाला है। इसके जरिये दोनों देश ऊर्जा, परिवहन एवं औद्योगिक सहयोग करेंगे।

सीपीईसी के अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय संबंधी संयुक्त कार्य समूह की शुक्रवार को तीसरी बैठक वर्चुअल माध्यम से हुई। इसमें दोनों देशों ने आर्थिक गलियारे का हिस्सा बनने की दिलचस्पी रखने वाले अन्य देशों को भी शामिल होने का न्योता दिया। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी एक बयान के

मुताबिक, विदेश सचिव सोहैल महमूद और चीन के सहायक विदेश मंत्री वू जियानझाओ ने इस कार्यसमूह की बैठक की संयुक्त रूप से अध्यक्षता की। इस दौरान सीपीईसी से जुड़ी परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा किए जाने के अलावा साझा रूप से सहमत हुए क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के मुद्दे पर भी चर्चा की गई। बैठक में कहा गया कि चीन की महत्वाकांक्षी योजना 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (बीआरआई) के तहत शुरू की गई सीपीईसी परियोजना ने खासकर अफगानिस्तान के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संपर्क को सशक्त करने में नया मुकाम हासिल किया है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने कहा कि दोनों ही पक्षों ने एक खुले एवं समावेशी मंच के तौर पर सीपीईसी से लाभान्वित होने में दिलचस्पी रखने वाले तीसरे पक्षों का स्वागत किया। चीन और पाकिस्तान के बीच के इस आर्थिक गलियारे का भारत खुलकर विरोध करता रहा है। भारत इस गलियारे के पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरने के आधार पर इसका विरोध करता आ रहा है।

पाकिस्तान के विदेश सचिव ने सीपीईसी में हुई प्रगति पर संतोष जताते हुए कहा कि चीन और पाकिस्तान की दोस्ती बहुत गहरी है और यह परियोजना दोनों देशों के बीच की गहराई तक पैठ वाली आपसी सद्भावना को दर्शाती है। हालांकि तमाम पश्चिमी विश्लेषकों का मानना है कि सीपीईसी दरअसल पाकिस्तान को चीन के आर्थिक नियंत्रण में लेने का एक जरिया है और आगे चलकर पाकिस्तान कर्ज के भारी बोझ तले दब सकता है।

फॉक्सवैगन के सीईओ पद से इस्तीफा देंगे हरबर्ट डाइस

विएना। जर्मनी की कार विनिर्माता कंपनी फॉक्सवैगन के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) हरबर्ट डाइस पद से इस्तीफा देने जा रहे हैं। फॉक्सवैगन के चेयरमैन हैंस डीटर पोएश ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि निदेशक मंडल के साथ पारस्परिक सहमति बनने के बाद डाइस ने सीईओ का पद छोड़ने का फैसला किया है। वह एक सितंबर को अपना पद छोड़ देंगे। हालांकि डाइस के पद छोड़ने को लेकर कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। डाइस की जगह कंपनी के पॉर्श ब्रांड के सीईओ ओलिवर ब्लूम लेंगे। डाइस ने 2018 में फॉक्सवैहन के सीईओ का पद संभाला था और उनका सेवा अनुबंध 2025 तक के लिए था। फॉक्सवैगन के साथ उनके जुड़ाव के दौरान कंपनी पर उत्सर्जन परीक्षण के दौरान धांधली करने के आरोप भी लगे थे। पद छोड़ने की घोषणा के पहले डाइस ने लिंक्डइन पर लिखी एक पोस्ट में कहा कि कंपनी को रूस-यूक्रेन युद्ध, कंप्यूटर चिप की कमी जैसी कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

ईथर के सपोर्ट से क्रिप्टो करेंसी मार्केट में तेजी, बिटकॉइन भी उछला

नई दिल्ली। लंबे समय से कमजोरी और दबाव का सामना कर रहा क्रिप्टो करेंसी बाजार इस हफ्ते मजबूती के साथ कारोबार करता नजर आया। बाजार में आई तेजी के कारण लंबे समय बाद क्रिप्टो करेंसी मार्केट का बाजार पूंजीकरण 1 ट्रिलियन डॉलर के स्तर को पार करने में सफल रहा। खास बात ये रही कि इस सप्ताह के कारोबार में बिटकॉइन और ईथर समेत ज्यादातर क्रिप्टो करेंसीज में तेजी का रुख बना रहा।

क्रिप्टो करेंसी मार्केट में आई इस तेजी के पीछे इथेरियम ब्लॉकचेन से जुड़ी क्रिप्टो करेंसी ईथर का सबसे अधिक योगदान रहा है। पिछले 1 महीने के दौरान ईथर ने लगभग 51 प्रतिशत की छलांग लगाई है। खासकर इस सप्ताह इस क्रिप्टो करेंसी ने जबरदस्त तेजी का रुख दिखाया है। ईथर फिलहाल 1,558 डॉलर के स्तर के ऊपर कारोबार कर रहा है। जानकारों के मुताबिक ईथर में तेजी आने की वजहों में

सबसे बड़ी वजह इथेरियम ब्लॉकचेन के नेटवर्क का काम लगभग 55 प्रतिशत के स्तर तक पहुंच जाने की उम्मीद बन जाना है। ऐसा होने की वजह से ईथर की मर्जिंग का काम तेजी से हो सकेगा।

जिसके बाद इथेरियम ब्लॉकचेन पर एक सेकंड में 1 लाख तक ट्रांजैक्शन किए जा सकेंगे। इथेरियम ब्लॉकचेन में मर्जिंग के लिए 19 सितंबर की तारीख तय की गई है। यही वजह है कि क्रिप्टो करेंसी मार्केट के निवेशक ईथर में बड़े पैमाने पर निवेश कर रहे हैं। पिछले 24 घंटे के कारोबार की बात की जाए, तो ईथर 1.02 प्रतिशत की तेजी के साथ 1,565 डॉलर के दिन के उच्चतम स्तर तक पहुंचने में सफल रहा। हालांकि बाद के कारोबार में इसमें 7 डॉलर की कमजोरी आई और ये क्रिप्टो करेंसी 1,558 डॉलर के स्तर पर स्थिर हो गई। हालांकि नवंबर 2021 के बाद से लेकर ईथर की कीमत में अभी तक तक 58 प्रतिशत तक की गिरावट आ चुकी है। इस क्रिप्टो करेंसी का उच्चतम स्तर 4,878 डॉलर रहा है। माना जा रहा है कि इथेरियम ब्लॉकचेन की मर्जिंग का काम पूरा हो जाने के बाद इस क्रिप्टो करेंसी की कीमत में और भी अधिक तेजी आ सकती है।

ईथर के अलावा दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे लोकप्रिय क्रिप्टो करेंसी बिटकॉइन भी पिछले 24 घंटे के दौरान 0.61 प्रतिशत की मजबूती के साथ 22,983 डॉलर के स्तर पर कारोबार कर रहा है। बिटकॉइन फिलहाल अपने उच्चतम स्तर से लगभग 62 प्रतिशत गिरकर कारोबार कर रहा है। जानकारों के मुताबिक चीन के प्रतिबंधात्मक आदेशों के कारण क्रिप्टो करेंसी मार्केट अपनी क्षमता के मुताबिक उछल नहीं पा रहा है।

तुर्की के सैन्य ठिकाने पर रॉकेट से हमला

बगदाद। उत्तरी इराक के नीनवे प्रांत में तुर्की के सैन्य ठिकाने ज्लिकन पर रॉकेट से हमला किया गया है। सैन्य ठिकाने पर पर कम से कम तीन रॉकेट दागे जाने की सूचना है। इससे पहले तुर्की के सशस्त्र बलों ने बुधवार को इराकी कुर्दिस्तान में स्थित जाखो के रिसॉर्ट शहर पर गोलाबारी की थी। कुर्दिस्तान डेमोक्रेटिक पार्टी के अनुसार इस हमले में नौ लोग मारे गए और 33 घायल हुए। तुर्की में प्रतिबंधित पीकेके को लेकर इराक और तुर्की के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा है। तुर्की सरकार पीकेके से लड़ रही है। यह पार्टी 1980 के दशक के से ही तुर्की में कुर्द स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है।

ईरान में अचानक आई बाढ़ से 17 लोगों की मौत

तेहरान। ईरान के सूखा प्रभावित दक्षिणी फार्स प्रांत में अचानक आई बाढ़ के कारण कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई। सरकारी टीवी चैनल पर शनिवार को प्रसारित रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

रिपोर्ट में एस्ताहबान के गवर्नर युसेफ कारेगर के हवाले से बताया गया कि शहर में बहने वाली रूदबल नदी का जलस्तर भारी बारिश के कारण काफी बढ़ गया। कारेगर के मुताबिक, बचाव दलों ने बाढ़ में फंसे 55 लोगों को बचा लिया, जबकि कम से कम छह लोग अब भी लापता हैं। ईरान जलवायु परिवर्तन के कारण

दशकों से सूखे का सामना कर रहा है। मौसम विज्ञान विभाग ने पिछले दिनों देशभर में संभावित भारी मौसमी बारिश को लेकर चेतावनी जारी की थी। विशेषज्ञों के मुताबिक, ईरान में नदियों के किनारे बड़े पैमाने पर इमारतों और सड़कों के निर्माण से अचानक आने वाली बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। मार्च 2018 में फार्स प्रांत में अचानक आई बाढ़ से 44 लोगों की जान चली गई थी।

- **गवर्नर युसेफ कारेगर के हवाले से बताया गया कि शहर में बहने वाली रूदबल नदी का जलस्तर भारी बारिश के कारण काफी बढ़ गया। कारेगर के मुताबिक, बचाव दलों ने बाढ़ में फंसे 55 लोगों को बचा लिया, जबकि कम से कम छह लोग अब भी लापता हैं।**

जो बाइडन की सेहत में सुधार हो रहा है : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन। कोरोना वायरस से संक्रमित अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को वीडियो कांफ्रेंस के जरिये अपने शीर्ष आर्थिक दल के साथ बैठक की और इस दौरान उनके गले में खराश और खांसी थीं। हालांकि, उन्होंने कहा कि वह बेहतर महसूस कर रहे हैं। वह हाल के हफ्तों में गैस कीमतों में गिरावट पर चर्चा करने के लिए बैठक कर रहे थे और बैठक की शुरुआत में उन्होंने अपने चेहरे से मास्क हटाया और पानी पीया। पत्रकारों को बैठक की कुछ मिनटों की कार्यवाही देखने के लिए व्हाइट हाउस के सभागार में प्रवेश की अनुमति थी और जब उन्होंने बाइडन की तबीयत के बारे में पूछा तो उन्होंने अंगूठा (थम्स अप) से इशारा कर अपने ठीक होने का संकेत दिया।

राष्ट्रपति के चिकित्सकों ने कहा कि उन्हें कोविड-19 के हल्के लक्षण हैं, जिससे वह अब उबर रहे हैं। व्हाइट हाउस बाइडन की बीमारी के बावजूद उनके काम में व्यस्त रहने की छवि पेश करने की कोशिश कर रहा है। इस बीच, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने भी बाइडन के "शीघ्र स्वस्थ" होने की कामना की है।

- **राष्ट्रपति के निजी चिकित्सक डॉ. केविन ओ'कोनोर ने कहा कि बाइडन को बृहस्पतिवार को 99.4 फारेनहाइट बुखार था, लेकिन दवा लेने से अब बुखार उतर गया है। उन्होंने कुछ समय के लिए इन्हेलर का भी इस्तेमाल किया। हालांकि, उन्हें सांस लेने में कोई कठिनाई नहीं हो रही**

राष्ट्रपति के निजी चिकित्सक डॉ. केविन ओ'कोनोर ने कहा कि बाइडन को बृहस्पतिवार को 99.4 फारेनहाइट बुखार था, लेकिन दवा लेने से अब बुखार उतर गया है। उन्होंने कुछ समय के लिए इन्हेलर का भी इस्तेमाल किया।

हालांकि, उन्हें सांस लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन ज्यां-पियरे ने बताया कि 17 लोग बाइडन के करीबी संपर्क में आए थे जिनमें उनके वरिष्ठ स्टाफ सदस्य भी शामिल हैं लेकिन उनमें से कोई भी संक्रमित नहीं पाया गया।

व्हाइट हाउस के कोविड-19 प्रतिक्रिया समन्वयक डॉ. आशीष झा ने बताया कि बाइडन पांच दिनों तक पृथक-वास में रहेंगे और फिर जांच करायेंगे।

श्रीलंका में राष्ट्रपति ने की मंत्रिमंडल की बैठक

एक हफ्ते के भीतर हालात सामान्य बनाने के तरीकों पर चर्चा की

कोलंबो। श्रीलंका के मंत्रिमंडल ने नव-निर्वाचित राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की अगुवाई में पहली बार बैठक की और आर्थिक संकट से जूझ रहे देश में एक सप्ताह के भीतर स्थिति सामान्य करने के तरीकों पर चर्चा की।

मीडिया की एक रिपोर्ट में शनिवार को बताया गया कि बैठक में प्रधानमंत्री कार्यालय और राष्ट्रपति सचिवालय जैसे सरकारी संस्थानों के कामकाज को नियमित करके एक हफ्ते के भीतर स्थिति सामान्य करने के तरीकों पर चर्चा की गयी। 'डेली मिरर' अखबार में प्रकाशित एक खबर के अनुसार, शुक्रवार को नए मंत्रिमंडल की नियुक्ति के बाद राष्ट्रपति ने बैठक बुलायी। अखबार ने सूत्रों के हवाले से बताया कि उन्होंने इस पर चर्चा की कि देश में प्रधानमंत्री कार्यालय, राष्ट्रपति सचिवालय जैसे सरकारी संस्थानों और स्कूलों का कामकाज नियमित करके एक सप्ताह के भीतर स्थिति सामान्य होनी चाहिये। मंत्रिमंडल को सूचित किया गया कि एक महीने के लिए पर्याप्त ईंधन है और कोटा व्यवस्था के तहत वितरण तेज किया जाना चाहिये। राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने

कहा कि उन्होंने सुरक्षाबलों को संविधान बरकरार रखने तथा ऐसा माहौल बनाने का अधिकार दिया है, जिसमें लोग बिना डर के रह सकें। मंत्रिमंडल ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से बातचीत पर भी चर्चा की, जो वित्तीय सहायता हासिल करने के लिए की जा रही है।

इस बीच, विपक्ष ने प्रधानमंत्री दिनेश गुणवर्धने से 25 जुलाई को संसद सत्र बुलाने का अनुरोध किया ताकि सुरक्षाबलों द्वारा शुक्रवार को गाले फेस में शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर की कार्रवाई तथा देश के मौजूदा हालात पर चर्चा की जा सके। गौरतलब है कि असॉल्ट राइफल तथा लाठी-डंडों से लैस श्रीलंकाई सुरक्षाबलों और पुलिस ने शुक्रवार को राष्ट्रपति कार्यालय के बाहर डेरा जमाए सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों को जबरन हटा दिया।

प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के आवासों तथा प्रधानमंत्री के कार्यालय को खाली कर दिया है, जिस पर उन्होंने नौ जुलाई को कब्जा जमाया था लेकिन उन्होंने राष्ट्रपति सचिवालय के कुछ कमरों पर अब भी कब्जा जमाया हुआ था। उन्होंने विक्रमसिंघे को नया राष्ट्रपति स्वीकार करने से भी इनकार कर दिया। नौ अप्रैल के बाद से राष्ट्रपति कार्यालय तक प्रवेश बाधित करने वाले मुख्य प्रदर्शनकारी समूह ने कहा कि विक्रमसिंघे के इस्तीफा देने तक उनका प्रदर्शन जारी रहेगा। श्रीलंका की नयी सरकार की सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों को हटाने में बल का इस्तेमाल करने के लिए आलोचना की गयी है।

गौरतलब है कि 2.2 करोड़ की आबादी वाला देश श्रीलंका सात दशकों में सबसे खराब आर्थिक संकट से जूझ रहा है, जिसके चलते लोग खाद्य पदार्थ, दवा, ईंधन और अन्य जरूरी वस्तुएं खरीदने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

- **राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने कहा कि उन्होंने सुरक्षाबलों को संविधान बरकरार रखने तथा ऐसा माहौल बनाने का अधिकार दिया है, जिसमें लोग बिना डर के रह सकें**
- **मंत्रिमंडल ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से बातचीत पर भी चर्चा की, जो वित्तीय सहायता हासिल करने के लिए की जा रही है**

भारत-अमेरिका ने नारकोटिक्स नियंत्रण के समझौते पर किये हस्ताक्षर

वाशिंगटन। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने नारकोटिक्स नियंत्रण और कानून प्रवर्तन सहयोग के क्षेत्र में संशोधित पत्र समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने शुक्रवार को जारी बयान में यह जानकारी दी। बयान के मुताबिक 7-8 जुलाई को नई दिल्ली में आयोजित भारत-अमेरिका काउंटर नारकोटिक्स वर्किंग ग्रुप की तीसरी बैठक के दौरान समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। अमेरिकी विदेश विभाग के मुताबिक एनसीबी के महानिदेशक सत्य नारायण प्रधान ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल और व्हाइट हाउस में राष्ट्रीय औषधि नियंत्रण नीति के निदेशक के वरिष्ठ सलाहकार केम्प चेस्टर ने अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। विदेश विभाग के अनुसार, अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश विभाग और न्याय विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने किया था। बयान में कहा गया है कि कानून प्रवर्तन, नीति निर्माण, दवा की मांग में कमी और अन्य नशीली दवाओं से संबंधित मामलों के लिए जिम्मेदार संबंधित एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने नशीली दवाओं की मांग, नशीले पदार्थों की तस्करी, नियामक और नियंत्रण प्रयासों और प्रवर्तन और आपराधिक जांच पर सहयोग से संबंधित व्यापक मुद्दों पर विचार-विमर्श में हिस्सा लिया।

अल्बानिया में आतंकवादी खतरे की चेतावनियां मिलने के बाद ईरानी असंतुष्टों का सम्मेलन रद्द

तिराना। उत्तरपूर्वी यूरोप में स्थित अल्बानिया में ईरान के असंतुष्टों ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने स्थानीय प्राधिकारियों से आतंकवादी खतरे की चेतावनियां मिलने के बाद अपना आगामी सम्मेलन रद्द कर दिया है। मुजाहिदीन-ए-खल्क (एमईके) के करीब 3,000 ईरानी असंतुष्ट अल्बानिया की राजधानी तिराना से 30 किलोमीटर पश्चिम में मानेज में अशरफ 3 कैम्प में रहते हैं।

एमईके एक निर्वासित विपक्षी समूह है जिसकी शुरुआत शाह मोहम्मद रेजा पहलवी के शासन के विरोध स्वरूप हुई थी। इसने 1979 की इस्लामिक क्रांति का समर्थन किया लेकिन जल्द ही ग्रैंड अयातुल्ला रुहल्ला खुमैनी से इसका झगड़ा हो गया और यह उनकी सरकार के खिलाफ हो गया। एमईके ने 23-24 जुलाई को अपने शिविर में 'फ्री ईरान वर्ल्ड समिट' करने की योजना बनायी थी, जिसमें अमेरिकी सीनेटरों और कांग्रेस सदस्यों तथा पश्चिम देशों के अन्य नेताओं को भाग लेना था। इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन से ईरान की सरकार के खिलाफ निर्णायक नीति अपनाने का अनुरोध किया जाना था। कैम्प के एक बयान के अनुसार, सुरक्षा कारणों और आतंकवादी खतरों तथा षडयंत्रों के कारण अल्बानियाई सरकार की सिफारिशों को मानते हुए इस सम्मेलन को अगले नोटिस तक स्थगित किया जाता है। तिराना में अमेरिकी दूतावास ने अपने नागरिकों को इस सम्मेलन पर आतंकवादी खतरे के मद्देनजर इसमें शामिल न होने को लेकर आगाह किया है।

विकीपीडिया के फाउंडेशन समेत छह मानवाधिकार समूहों को मिली संयुक्त राष्ट्र की मान्यता

संयुक्त राष्ट्र। ऑनलाइन विश्वकोश विकीपीडिया का संचालन करने वाले फाउंडेशन समेत छह मानवाधिकार संगठनों को वर्षों की देरी के बाद आखिरकार संयुक्त राष्ट्र की मान्यता मिल गयी है। वे अब आर्थिक विकास और समाजिक मुद्दों पर नजर रखने वाली संयुक्त राष्ट्र की संस्था में अपने मुद्दे पेश कर सकेंगे और चर्चा में भाग ले सकेंगे। अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र की गैर सरकारी संगठनों सबंधी एक समिति के समक्ष इन छह समूहों पर मतदान कराने का जून में प्रस्ताव पेश किया था, लेकिन उस समय कोई कदम नहीं उठाया जा सका था।

यह समिति संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद की मान्यता देने के अनुरोधों पर फैसला लेती है। बाद में अमेरिका, इटली, स्वीडन और एस्टोनिया ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिस पर बृहस्पतिवार को मतदान हुआ। इस प्रस्ताव के पक्ष में 23 देशों ने मतदान किया, सात ने इसके खिलाफ मतदान किया और 18

सदस्य देश मतदान से दूर रहे। रूस ने इन छह मानवाधिकार समूहों को परामर्शदाता का दर्जा देने का विरोध किया। चीन, भारत, कजाखस्तान, निकारागुआ, नाइजीरिया और जिम्बाब्वे ने भी इसका विरोध किया।

मानवाधिकार निगरानी संगठन में संयुक्त राष्ट्र के निदेशक लुइस चार्बोनियु ने कहा कि छह मानवाधिकार समूहों को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता देने का फैसला सही दिशा में लिया गया निर्णय है, लेकिन यह उन सैकड़ों संगठनों का महज एक छोटा-सा हिस्सा है, जिनके आवेदन रूस, चीन और अन्य सरकारों ने अनुचित रूप से वर्षों से रोके हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र की मान्यता हासिल करने वाले छह संगठनों में बेलारूस की 'हेलसिंकी कमेटी', स्वीडन की'डायकोनिया', इटली की 'नो पीस विदआउट जस्टिस', 'एस्टोनिया इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमैन राइट्स' और अमेरिका के दो समूह 'सीरियन-अमेरिकन मेडिकल सोसायटी' और 'विकीमीडिया फाउंडेशन' शामिल हैं।

आम चुनाव से पहले थाईलैंड के प्रधानमंत्री प्रयुथ चान-ओचा ने जीता आखिरी अविश्वास मत

बैंकॉक। अगले साल होने वाले आम चुनाव से पहले उम्मीद के अनुरूप थाईलैंड के प्रधानमंत्री प्रयुथ चान-ओचा ने शनिवार को संसद में अपना चौथा और अंतिम अविश्वास मत जीत लिया। प्रयुथ (68) और उनके 10 कैबिनेट सदस्यों को लेकर चार दिन तक हुई बहस के बाद मतदान हुआ।

विपक्ष ने बढ़ते सरकारी ऋण और भ्रष्टाचार को रोकने में विफल रहने के लिए प्रयुथ की सरकार के आर्थिक कुप्रबंधन को जिम्मेदार ठहराया है। संसद में मौजूदा गठबंधन सरकार के बहुमत की बदौलत सभी 10 कैबिनेट मंत्री भी बच गये। प्रयुथ को 256 वोट मिले, जबकि उनके विरोध में 206 वोट पड़े। वहीं, नौ सांसद मतदान में गैरहाजिर रहे। मुख्य विपक्षी दल फेउ थाई पार्टी के प्रमुख चोलनन श्रीकाव ने कहा कि परिणाम निराशाजनक थे, क्योंकि ये जनता की भावना को नहीं दर्शाते हैं। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि हम संसद में नहीं जीत सकते, लेकिन हम आम चुनाव में नहीं हारेंगे। सेवानिवृत्त जनरल प्रयुथ 2020 के बाद से तीन निंदा प्रस्तावों से बचने में सफल रहे हैं और संसदीय बहुमत होने के कारण उनकी गठबंधन सरकार बरकरार है। थाईलैंड के संसदीय इतिहास में किसी भी कैबिनेट मंत्री को कभी अविश्वास प्रस्ताव के जरिये नहीं हटाया गया है। प्रधानमंत्री प्रयुथ चान ओचा 2014 के तख्तापलट के दौरान सत्ता में आए थे और बाद में 2019 के आम चुनावों में प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे।

बैंकॉक के रंगसिट विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के व्याख्याता प्रोफेसर वानविच बूनप्रोंग ने कहा कि प्रयुथ को मिले वोट की संख्या उनकी सरकार की स्थिरता को प्रभावित कर सकती है और यह तय कर सकती है कि अगले साल मार्च में होने वाले आम चुनावों के लिए राजनीतिक गठबंधन की स्थिति कैसी होगी। विपक्ष के मुख्य सचेतक सुतिन क्लुंगसांग ने कहा कि प्रयुथ की प्रमुख विफलता आर्थिक प्रबंधन थी। प्रयुथ, जो रक्षा मंत्री भी हैं, पर पेगासस स्पाइवेयर के साथ राजनीतिक असंतुष्टों की जासूसी करने और देश के बजट का दुरुपयोग करने का भी आरोप लगा था। विपक्ष ने उप प्रधानमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री अनुतिन चरनवीराकुल पर उचित नियंत्रण के बिना भांग के इस्तेमाल को वैध बनाने का भी आरोप लगाया।

प्रयुथ ने अपनी सरकार का बचाव करते हुए कहा कि ऊर्जा की बढ़ती कीमतों और उच्च मुद्रास्फीति के बावजूद थाईलैंड की अर्थव्यवस्था स्थिर है। उन्होंने कहा कि सरकार के शेष 250 दिनों के लिए मैं जोर देकर कहता हूं कि देश को जल्द से जल्द संकट से निकालने के लिए मैं हर संभव प्रयास करूंगा।

रूस के कब्जे से जमीन वापस लिये बिना युद्धविराम नहीं: जेलेंस्की

कीव । यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने कहा कि युद्ध में खोए हुए क्षेत्रों को वापस लिये बिना रूस के साथ युद्धविराम नहीं होगा बल्कि इससे युद्ध और लंबे समय तक चलेगा। जेलेंस्की ने चेतावनी देते हुए कहा कि युद्धविराम से रूस को यूक्रेनी क्षेत्रों को कब्जा बनाए रखने से संघर्ष को और बढ़ायेगा तथा मास्को फिर से तैयारी करने का मौका मिल जायेगा। ज़ेलेंस्की ने अमेरिका द्वारा आपूर्ति की जाने वाली उच्च गतिशीलता आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम के बारे में कहा कि रॉकेट सिस्टम की पश्चिमी आपूर्ति यूक्रेन की युद्ध आवश्यकता से बहुत कम है। उन्होंने कहा कि युद्धविराम से पहले सभी क्षेत्रों को मुक्त किया जाना चाहिये। फिर इसके बाद हम बातचीत कर सकते हैं कि क्या करना है और हम आने वाली सदियों में कैसे रह सकते हैं। ज़ेलेंस्की ने कहा कि वायु-रक्षा प्रणाली रूस की लंबी दूरी की मिसाइलों को शहरों से सैकड़ों मील दूर हमले से पहले ही रोक सकती है।

हमजा शरीफ ने ली पंजाब के मुख्यमंत्री पद की शपथ

लाहौर। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के बेटे हमजा शरीफ ने शनिवार को पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इससे एक दिन पहले नाटकीय घटनाक्रम के बीच वह महज तीन मतों के अंतर से इस पद पर पुनः निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष ने उनके प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार के 10 अहम मतों को खारिज कर दिया था।

पंजाब के गवर्नर बलीगुर रहमान ने हमजा (47) को शपथ दिलायी। शपथ ग्रहण समारोह पंजाब में 'गवर्नर हाउस' में हुआ। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय के निर्देशों पर पंजाब विधानसभा में शुक्रवार को पंजाब के मुख्यमंत्री पद के लिए मतदान हुआ। हमजा को चुनाव में विजेता घोषित किया गया। हालांकि, उनकी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज पार्टी के पास 17 जुलाई को हुए अहम उपचुनावों के बाद विधानसभा में बहुमत नहीं है। विधानसभा उपाध्यक्ष दोस्त मोहम्मद माजरी ने संविधान के अनुच्छेद 63-ए का हवाला देते हुए पाकिस्तान मुस्लिम लीग-क्यू पार्टी के उम्मीदवार चौधरी परवेज इलाही के 10

मतों को खारिज कर दिया, जिसके बाद हमजा महज तीन मतों के अंतर से पंजाब के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर फिर से आसीन हो सके।

पीएमएल-क्यू पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ का सहयोगी दल है। पंजाब की 368 सदस्यीय विधानसभा में हमजा की पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज को 179 वोट मिले जबकि इलाही की पार्टी को 176 वोट मिले। इलाही की पीएमएल-क्यू के 10 मतों को इस आधार पर नहीं गिना गया कि उन्होंने अपने पार्टी के प्रमुख चौधरी शुजात हुसैन के आदेशों का उल्लंघन किया था। मजारी ने कहा कि पार्टी प्रमुख हुसैन ने पीएमएल-क्यू के सदस्यों को इलाही के बजाय हमजा को वोट देने का निर्देश दिया था। मजारी ने कहा कि मैंने पीएमएल-क्यू के 10 मतों को खारिज करने का फैसला दिया क्योंकि उसके प्रमुख चौधरी शुजात हुसैन ने मुझे एक पत्र लिखकर कहा था कि उनकी पार्टी के विधायकों को पीटीआई-पीएमएलक्यूउम्मीदवार के लिए वोट नहीं करना चाहिये था। मैंने फोन पर शुजात से बात की और उन्होंने अपने पत्र में इसका जिक्र होने की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि हमजा ने तीन मतों से पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री पद की कुर्सी फिर से हासिल कर ली।

बहरहाल, पीटीआई-पीएमएलक्यू के विधायकों ने उपाध्यक्ष के फैसले का विरोध किया। यह दूसरी बार है जब हमजा ने पंजाब के मुख्यमंत्री पद पर इलाही को हराया है। पिछली बार उन्हें 16 अप्रैल को जीत मिली थी लेकिन उन्हें शपथ दिलाने में कई दिनों की देरी हुई थी क्योंकि तत्कालीन गवर्नर उमर सरफराज चीमा ने उन्हें शपथ दिलाने से इनकार कर दिया था। बाद में नेशनल असेंबली के अध्यक्ष राजा परवेज अशरफ ने लाहौर उच्च न्यायालय के निर्देशों पर 30 अप्रैल को उन्हें शपथ दिलायी थी। पीएमएल-क्यू के 10 सदस्यों के मतों को खारिज करने के मजारी के फैसले के बाद पीटीआई ने कहा कि वह इस निर्णय को चुनौती देने के लिए उच्चतम न्यायालय का रुख करेगी। इलाही ने कहा कि वह उच्चतम न्यायालय में इस फैसले को चुनौती देंगे क्योंकि उपाध्यक्ष ने अदालत के आदेश का उल्लंघन किया है। इससे पहले, पीटीआई के अध्यक्ष खान ने आगाह किया था कि अगर जनादेश को पलटने के लिए सरकारी तंत्र का इस्तेमाल किया गया तो देश में श्रीलंका जैसे हालात खड़े हो जायेंगे।

वहीं, पीएमएल-एन नेता नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज ने कहा कि उनकी पार्टी ने शुक्रवार को जो किया वह खान की पार्टी को "जैसे को तैसा" जवाब है। मरियम ने ट्वीट किया, "पीएमएल-एन उसके साथ हुए बर्ताव को भूली नहीं है। अब खेल के नियम सभी के लिए समान होंगे, नहीं तो पीएमएल-एन इसे बेहतर तरीके से खेलना जानती है।"

- **पंजाब की 368 सदस्यीय विधानसभा में हमजा की पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज को 179 वोट मिले जबकि इलाही की पार्टी को 176 वोट मिले। इलाही की पीएमएल-क्यू के 10 मतों को इस आधार पर नहीं गिना गया कि उन्होंने अपने पार्टी के प्रमुख चौधरी शुजात हुसैन के आदेशों का उल्लंघन किया था।**

आयोवा के पार्क में गोलीबारी में तीन लोगों की मौत

संदिग्ध बंदूकधारी ने भी खुद को गोली मारकर की आत्महत्या

आयोवा सिटी। अमेरिका के पूर्वी आयोवा के एक पार्क में शुक्रवार को एक परिवार के तीन सदस्यों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। बाद में संदिग्ध बंदूकधारी ने भी खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। 'आयोवा डिवीजन ऑफ क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन' ने एक बयान जारी कर बताया कि शुक्रवार सुबह करीब साढ़े छह बजे मकोकेटा केव्स स्टेट पार्क कैंपग्राउंड में गोलीबारी की सूचना मिलने पर अधिकारी वहां पहुंचे।

डिवीजन के सहायक निदेशक मिच मोर्टवेट के मुताबिक, अधिकारियों ने पाया कि कैंप ग्राउंड में एक तंबू में मृत पड़े तीन लोगों को गोली लगी थी। बाद में जन सुरक्षा विभाग ने उनकी पहचान टायलर रिमट (42), सारा रिमट (42) और लुलु रिमट (छह) के रूप में की, जो

सीडर फॉल्स, आयोवा के निवासी थे। उनकी हत्या के पीछे की वजह फिलहाल पता नहीं चल सकी है। मोर्टवेट ने बताया कि अधिकारियों ने पार्क में मौजूद सभी लोगों को तुरंत वहां से निकाल लिया। लोगों को निकाले जाने की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद एकमात्र पंजीकृत पर्यटक 23 वर्षीय एंथोनी शेरविन का पता नहीं चल पाया है।

मोर्टवेट ने कहा कि वह हथियार रखने के लिए जाना जाता था। निश्चित रूप से हमने सतर्कता बढ़ा दी है। आयोवा में लाइसेंस धारी लोगों को हथियार कहीं भी ले जाने की अनुमति होती है।

अधिकारियों ने हालांकि यह नहीं बताया कि शेरविन के पास लाइसेंस था या नहीं। मोर्टवेट ने कहा कि शेरविन नेब्रास्का से आया था और जांचकर्ताओं का मानना है कि उसका पीड़ितों के साथ पूर्व में कोई संबंध नहीं था। वारदात के मद्देनजर पार्क शुक्रवार को बंद रहा।

भारत ने पहले एकदिनी मैच में वेस्टइंडीज को 3 रन से हराया

पोर्ट ऑफ स्पेन। भारतीय क्रिकेट टीम ने पहले एकदिवसीय मैच में वेस्टइंडीज को 3 रन से हराकर तीन मैचों की एकदिनी श्रृंखला में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 7 विकेट पर 308 रनों का स्कोर खड़ा किया, जवाब में वेस्टइंडीज की टीम लक्ष्य से तीन रन दूर रह गई और 50 ओवर में 6 विकेट पर 305 रन ही बना सकी।

इस मुकाबले में वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। भारत को कप्तान शिखर धवन और शुभमन गिल ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों ने पहले विकेट के लिए 119 रनों की साझेदारी की। 18वें ओवर में 119 के कुल स्कोर पर गिल अपने ही कॉल पर रन आउट हो गए। गिल ने 53 गेंदों पर 6 चौकों और दो छक्कों की बदौलत 64 रन बनाए। गिल के आउट होने के बाद बल्लेबाजी करने आये श्रेयस अय्यर ने धवन का अच्छा साथ दिया। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 94 रनों की साझेदारी की। इस साझेदारी को गुडकेस मोती ने तोड़ा। 213 के कुल स्कोर पर मोती ने धवन को आउट कर यह साझेदारी तोड़ी। धवन ने 99 गेंदों पर 97 रन बनाये। इस दौरान उन्होंने 10 चौके और 3 छक्के लगाए। इसके बाद 230 के कुल स्कोर पर मोती ने अय्यर को भी आउट कर भारत को तीसरा झटका दिया। अय्यर ने 57 गेंदों में 5 चौके और 2 छक्के की बदौलत 54 रन बनाये। अय्यर के आउट होने के बाद सूर्यकुमार यादव (13) और संजू सैमसन (12) जल्दी-जल्दी पवेलियन लौट गये और भारत का स्कोर 5 विकेट पर 252 रन हो गया। यहां से दीपक हुड्डा और अक्षर पटेल ने पारी संभाला और भारत का स्कोर 290 के पार ले गये। 49वें ओवर में 294 के कुल स्कोर पर अल्जारी जोसेफ ने अक्षर को बोल्ड कर भारत को छठा झटका दिया। अक्षर ने 21 गेंदों में 1 चौके और 1 छक्के की बदौलत 21 रन बनाये। इसी ओवर में 299 के कुल स्कोर पर जोसेफ ने दीपक हुड्डा को आउट कर भारत को सातवां झटका दिया। हुड्डा ने 32 गेंदों में 1 चौके और 1 छक्के की बदौलत 27 रन बनाये। शार्दुल ठाकुर 7 और मोहम्मद सिराज 1 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने निर्धारित 50 ओवर में 7 विकेट पर 308 रन बनाए।

309 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरुआत खराब रही और 5वें ओवर में 16 के कुल स्कोर पर मोहम्मद सिराज ने शाई होप को शार्दुल ठाकुर के हाथों कैच कराकर वेस्टइंडीज को पहला झटका दिया। पहला विकेट जल्दी गिर जाने के बाद काईल मेयर्स और शमराह ब्रुक्स ने वेस्टइंडीज की पारी को संभाला। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 117 रनों की साझेदारी की। 24वें ओवर में 133 के कुल स्कोर शार्दुल ठाकुर ने ब्रुक्स को आउट कर यह साझेदारी तोड़ी। ब्रुक्स ने 61 गेंदों में 4 चौके और 1 छक्के की बदौलत 46 रन बनाए। इसके बाद ठाकुर ने मेयर्स को भी 138 के कुल स्कोर पर चलता कर भारत को तीसरी सफलता दिलाई। मेयर्स ने 68 गेंदों में 10 चौकों और 1 छक्के की बदौलत 75 रन बनाये। इसके बाद ब्रैंडन किंग्स (54) और निकोलस पूरन (25) ने वेस्टइंडीज का संघर्ष जारी रखा। इन दोनों के आउट होने के बाद अकील हुसैन और रोमारियो शेफर्ड ने अंत मे वेस्टइंडीज को जीताने की भरपूर कोशिश की लेकिन लक्ष्य से तीन रन दूर रह गए। वेस्टइंडीज को जीत के लिए आखिरी ओवर में 15 रनों की जरूरत थी, लेकिन मोहम्मद सिराज इन इस ओवर में 11 रन दिए और भारत को तीन रन से जीत दिला दी। अकील हुसैन 32 और रोमारियो शेफर्ड 39 रन बनाकर नाबाद रहे।

श्रेयस अय्यर ने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पूरे किये 1000 रन

भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने 1000 रन पूरे कर लिए हैं। अय्यर ने यह उपलब्धि शुक्रवार को क्वींस पार्क ओवल में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले एकदिनी मैच के दौरान हासिल की। स्पिनर गुडाकेश मोती द्वारा फेंके गये भारत की पारी के 36 वें ओवर में अय्यर ने मिडविकेट क्षेत्र एक रन लेकर अपने 1,000 एकदिवसीय रन पूरे किये। अय्यर ने मैच में 57 गेंदों में पांच चौकों और दो छक्कों की मदद से 54 रन बनाए और मोती का शिकार बने। अय्यर ने 25 एकदिवसीय पारियों में अपने 1000 रन पूरे किये और पूर्व भारतीय बल्लेबाज नवजोत सिंह सिद्धू के रिकार्ड की बराबरी की, जिन्होंने 1,000 एकदिवसीय रन तक पहुंचने के लिए इतनी ही पारी खेली थी।

विराट कोहली और शिखर धवन इस लैंडमार्क तक सबसे तेज पहुंचे हैं। दोनों ने 24 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की है। अब अय्यर ने 28 मैचों में अपनी 25 पारियों में 41.70 की औसत से 1,001 रन बनाए हैं। उन्होंने 50 ओवर के प्रारूप में 103 के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ एक शतक और 10 अर्द्धशतक बनाए हैं। मैच की बात करें तो इस मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 7 विकेट पर 308 रन बनाए। भारत की तरफ से कप्तान शिखर धवन ने 97, शुभमन गिल ने 64 और श्रेयस अय्यर ने 54 रन बनाए। वेस्टइंडीज की तरफ से गुडाकेश मोती ने दस ओवरों में 54 रन देकर 2 विकेट लिये।

309 रनों का पीछा करते हुए काइल मेयर्स (75) और ब्रैंडन किंग (54) के अर्धशतकों ने विंडीज की उम्मीदों को जिंदा रखा, अंत में अकील होसेन (32*) और रोमारियो शेफर्ड (39*) ने विंडीज को लगभग जीत दिला दी थी, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने धैर्य बनाए रखा। अंतिम वर में विंडीज की टीम को जीत के लिए 15 रनों की जरूरत थी, लेकिन मोहम्मद सिराज ने केवल 11 रन दिये और भारत को 3 रन से जीत दिला दी। सिराज ने दस ओवरों में 57 रन देकर दो विकेट लिया। शिखर धवन को उनके 97 रनों की बेहतरीन पारी के लिए 'मैन ऑफ द मैच' का पुरस्कार दिया गया।

विंडीज के खिलाफ पहले एकदिनी में शतक न बना पाने पर धवन ने जताई निराशा

पोर्ट ऑफ स्पेन। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले एकदिनी में मिली तीन रनों की रोमांचक जीत के बाद, भारतीय कप्तान शिखर धवन ने शतक नहीं बना पाने पर निराशा व्यक्त की है। काइल मेयर्स (75) और ब्रैंडन किंग (54) के शानदार अर्धशतकों के बावजूद वेस्टइंडीज को पहले एकदिनी में तीन रन से हार का सामना करना पड़ा। धवन ने मैच में 97 रनों की शानदार पारी खेली, जिससे उन्हें 'मैन ऑफ द मैच' का पुरस्कार भी मिला। धवन ने मैच के बाद , शतक नहीं बनाने से निराश हूं, लेकिन यह टीम का अच्छा प्रयास था। हमें अंत में अच्छा स्कोर मिला। अंत में उम्मीद नहीं थी कि मैच इस तरह से पलटेगा। हमने धैर्य बनाए रखा। अंत के बदलाव में हमने फाइन लेग को पीछे धकेला और इससे वास्तव में हमें मदद मिली। हम सीखते रहना चाहते हैं और बाकी प्रतियोगिता के लिए खुद को बेहतर बनाना चाहते हैं। मैच की बात करें तो इस मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 7 विकेट पर 308 रन बनाए। भारत की तरफ से कप्तान शिखर धवन ने 97, शुभमन गिल ने 64 और श्रेयस अय्यर ने 54 रन बनाए। वेस्टइंडीज की तरफ से गुडाकेश मोती ने दस ओवरों में 54 रन देकर 2 विकेट लिए। 309 रनों का पीछा करते हुए काइल मेयर्स (75) और ब्रैंडन किंग (54) के अर्धशतकों ने विंडीज की उम्मीदों को जिंदा रखा, अंत में अकील होसेन (32*) और रोमारियो शेफर्ड (39*) ने विंडीज को लगभग जीत दिला दी थी, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने धैर्य बनाए रखा। अंतिम वर में विंडीज की टीम को जीत के लिए 15 रनों की जरूरत थी, लेकिन मोहम्मद सिराज ने केवल 11 रन दिये और भारत को 3 रन से जीत दिला दी। सिराज ने दस ओवरों में 57 रन देकर दो विकेट लिया।

अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के मुख्य कोच नियुक्त हुए जोनाथन ट्रॉट

काबुल। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) ने इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज जोनाथन ट्रॉट को राष्ट्रीय पुरुष क्रिकेट टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया है।वह अगस्त में अफगानिस्तान के आयरलैंड दौरे के दौरान मुख्य कोच की भूमिका संभालेंगे। जोनाथन ट्रॉट ने 2009-2015 तक इंग्लैंड के लिए 52 टेस्ट मैच खेले, जिसमें उन्होंने 44.08 की औसत से 3835 रन बनाए, इसमें 9 शतक और 19 अर्धशतक शामिल थे, इस दौरान 226 रनों का उनका सर्वोच्च स्कोर रहा। उन्होंने 68 एक दिवसीय अंतराष्ट्रीय मैचों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व भी किया। एकदिनी में उन्होंने 51.25 की औसत के साथ 2838 रन बनाए, जिनमें 4 शतक और 22 अर्धशतक शामिल हैं। ट्रॉट ने दक्षिण अफ्रीका में इंग्लैंड की सीनियर बैटिंग यूनिट के साथ, 2020 के इंग्लिश टेस्ट समर के दौरान और पिछले साल इंग्लैंड के लाल / सफेद गेंद के भारत दौरे पर काम किया है।

उन्होंने इंग्लैंड लायंस और अंडर -19 के साथ बल्लेबाजी कोच और संरक्षक के रूप में भी काम किया है, साथ ही टी-20 विश्व कप 2021 के दौरान उन्होंने स्कॉटलैंड के बल्लेबाजी सलाहकार के रूप में भी काम किया है।

ट्रॉट ने कहा, ₹मैं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की सबसे रोमांचक टीमों में से एक को एक टीम के रूप में विकसित करने के लिए एक बहुत बड़ा वर्ष लेने का अवसर पाकर सम्मानित और उत्साहित हूं।

उनका यह भी मानना है कि अफगानिस्तान में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है और उन्होंने ऐसे खिलाड़ी तैयार किए हैं जो अपने अंदाज में और बेजोड़ जुनून के साथ खेलने में सक्षम हैं।

ट्रॉट ने कहा, मैं ऐसे खिलाड़ियों के समूह के साथ काम करने का इंतजार नहीं कर सकता जो स्पष्ट रूप से ऐसी शैली में परिणाम देने में सक्षम हैं जो अफगानिस्तान के लोगों को गौरवान्वित करे।

अफगानिस्तान क्रिकेट टीम अगस्त की शुरुआत में आयरलैंड के दौरे पर जायेगी, जहां टीम 9 अगस्त से शुरू होने वाले 5 टी20 मैचों की श्रृंखला खेलेगी।

सिडनी मैकलॉघलिन ने 400 बाधा दौड़ में अपने विश्व रिकॉर्ड में सुधार किया

यूजीन। सिडनी मैकलॉघलिन ने 400 मीटर बाधा दौड़ में 50.68 सेकंड के समय के साथ अपने विश्व रिकॉर्ड में सुधार करते हुए शुक्रवार को यहां विश्व चैम्पियनशिप का पहला स्वर्ण पदक हासिल किया। इस 22 साल की धाविका ने ट्रैक पर अपना दबदबा कायम करते हुए बड़े अंतर से प्रतिस्पर्धियों को पछाड़ा। यह लगातार चौथी बार है जब उन्होंने किसी बड़े टूर्नामेंट में अपने व्यक्तिगत रिकॉर्ड में सुधार किया है। नीदरलैंड की फेम्के बोल उनसे 1.59 सेकंड पीछे 52.27 सेकंड के समय के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि गत विश्व चैंपियन दलिला मुहम्मद 53.13 सेकंड के समय के साथ तीसरे स्थान पर रही। दलिला सात साल पहले इस समय के साथ स्वर्ण पदक विजेता होती। मैकलॉघलिन ने अपनी स्पर्धा के बाद कहा, '' यह अविश्वसनीय लग रहा है।'' हेवर्ड स्टेडियम में मैकलॉघलिन ने बोल और दलिला को शुरुआती 150 मीटर के बाद पीछे छोड़ा और फिर अपनी बढ़त को मजबूत करते गयी। उन्होंने रेस पूरा करने के बाद घड़ी और स्कोरबोर्ड को देखा और कहा , '' यह शानदार है, शानदार है।

विश्व एथलेटिक्स : भाला फेंक स्पर्धा के फाइनल में 7वें स्थान पर रहीं अन्नू रानी

ओरेगॉन। भारतीय एथलीट अन्नू रानी शुक्रवार को ओरेगॉन में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भाला फेंक स्पर्धा के फाइनल में सातवें स्थान पर रहीं। उन्होंने 61.12 मीटर थ्रो का सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। ऑस्ट्रेलिया की केल्सी-ली बार्बर ने 66.91 मीटर थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता, जबकि यूएस की कारा विंगर ने 64.05 के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक जीता, जो उनके अंतिम प्रयास में आया था। जापान की हारुका किटागुची ने 63.27 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ कांस्य पदक जीता। रानी ने फाइनल में 56.18 मीटर के थ्रो के साथ अपने अभियान की शुरुआत की, जिसके बाद वह बारह में से नौवें स्थान पर रहीं। अपने दूसरे प्रयास में, उन्होंने 61.12 मीटर का प्रभावशाली प्रदर्शन किया,

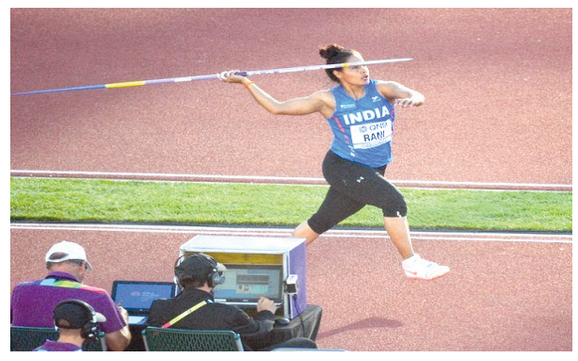

जिसने उसे छठे स्थान पर धकेल दिया। हालांकि, उसका तीसरा और चौथा प्रयास निराशाजनक रहा, क्योंकि वह क्रमशः 59.27 मीटर और 58.14 के थ्रो हासिल कर सकी, जिससे वह सातवें स्थान पर खिसक गई। बार्बर ने इस समय 66.91 मीटर के साथ बढ़त बनाई।

रानी अपने अंतिम दो प्रयासों में 59.98 मीटर और 58.70 के थ्रो के बाद सातवें स्थान पर रही। हालांकि वह पदक तो नहीं हासिल कर सकीं, लेकिन वह विश्व चैंपियनशिप में शीर्ष आठ में दो स्थान हासिल करने वाली दूसरी भारतीय महिला जरूर बन गईं।

अखबार के लेख ने किस तरह बदली मुक्केबाज सागर अहलावत की जिंदगी

नयी दिल्ली (भाषा)। राष्ट्रमंडल खेलों के लिये भारतीय मुक्केबाजी दल के सदस्य सागर अहलावत का कहना है कि 2015 में फ्लॉएड मेवेदर जूनियर और मैनी पैकियाओ के बीच 'फाइट ऑफ द सेंचुरी' पर अखबार में छपा लेख पढ़ने के बाद उनकी जिंदगी बदल गयी। यह लेख पढ़ने के सात साल बाद 20 साल का मुक्केबाज बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में पुरुषों की +92 किग्रा सुपर हैवीवेट स्पर्धा में चुनौती पेश करने के लिये तैयार है जिसमें वह पहली बार भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। सागर ने पीटीआई से कहा, ''मैं पढ़ाई में अच्छा नहीं था। मेरे से पढ़ाई नहीं होती थी। इसलिये मैंने 12वीं के बाद कुछ करने के लिये देखना शुरू किया। '' किसान परिवार में जन्में सागर का खेलों से कोई लेना देना नहीं था। लेकिन एक दिन उन्होंने मेवेदर और पैकियाओ के बीच मशहूर भिड़ंत के बारे में अखबार में पूरे पन्ने का लेख पढ़ा। जैसे जैसे वह दोनों महान मुक्केबाजों के बारे में और उनकी उपलब्धियों के बारे में पढ़ते गये।

विंस मैकमोहन ने वर्ल्ड रेसलिंग एंटरटेनमेंट के अध्यक्ष और सीईओ के पद को छोड़ा

कनेक्टिकट। विंस मैकमोहन ने दशकों तक शीर्ष वैश्विक पेशेवर कुश्ती का नेतृत्व करने के बाद शुक्रवार को वर्ल्ड रेसलिंग एंटरटेनमेंट (डब्ल्यूडब्ल्यूई) के अध्यक्ष और सीईओ का पद छोड़ दिया है। उनकी बेटी स्टेफ़नी मैकमोहन और निक खान कंपनी के सह-सीईओ की भूमिका निभायेंगे। आधिकारिक डब्ल्यूडब्ल्यूई कॉर्पोरेट वेबसाइट के अनुसार मैकमोहन ने एक बयान में कहा, जैसे ही मैं 77 साल का हो गया, मुझे लगता है कि यह मेरे लिए डब्ल्यूडब्ल्यूई के अध्यक्ष और सीईओ के रूप में सेवानिवृत्त होने का समय है। वर्षों तक, डब्ल्यूडब्ल्यूई को आपको खुशी देने, आपको प्रेरित करने, आपको रोमांचित करने, आपको आश्चर्यचकित करने और हमेशा आपका मनोरंजन करने का सौभाग्य रहा है। मैं अपने परिवार को हमारी सफलता में योगदान देने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं, और मैं अपने सभी अतीत और वर्तमान

सुपरस्टारों और कर्मचारियों को हमारे ब्रांड के प्रति समर्पण और जुनून के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। उन्होंने कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं अपने प्रशंसकों को हर हफ्ते अपने घरों में हमें अनुमति देने और मनोरंजन की पसंद होने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं दुनिया भर में फैले अपने प्रशंसकों की सराहना करता हूं, जिन्होंने हमें पसंद किया है। उन्होंने कहा, हमारे वैश्विक दर्शक यह जानकर खुश हो सकते हैं कि डब्ल्यूडब्ल्यूई हमेशा की तरह उसी उत्साह, समर्पण और जुनून के साथ आपका मनोरंजन करता रहेगा। मुझे डब्ल्यूडब्ल्यूई की निरंतर सफलता पर बेहद भरोसा है, और मैं अपनी कंपनी को अध्यक्ष और सह-सीईओ स्टेफ़नी मैकमोहन और सह-सीईओ निक खान सुपरस्टार, कर्मचारियों और अधिकारियों के सुरक्षित हाथों में छोड़ रहा हूं। उन्होंने आगे कहा, बहुसंख्यक शेयरधारक के रूप में, मैं हर तरह से डब्ल्यूडब्ल्यूई का समर्थन करना जारी रखूंगा। हमारे समुदाय और व्यापार भागीदारों, शेयरधारकों और निदेशक मंडल को उनके मार्गदर्शन और समर्थन के लिए मेरा व्यक्तिगत धन्यवाद। बता दें कि साप्ताहिक टीवी शो 'डब्ल्यूडब्ल्यूई रॉ', 'डब्ल्यूडब्ल्यूई स्मैकडाउन', 'डब्ल्यूडब्ल्यूई एनएक्सटी' दुनिया भर के प्रशंसकों द्वारा पसंद किए जाते हैं। रैसलमेनिया, सभी प्रो-रेसलिंग में एक कैलेंडर वर्ष की सबसे बड़ी पेशेवर कुश्ती प्रतियोगिता मैकमोहन के दिमाग की ही उपज है।

राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के दिलचस्प तथ्य

नयी दिल्ली। बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेल 2022 के शुरू होने में एक हफ्ते से भी कम का समय रह गया है और इन खेलों में भारत के प्रदर्शन के बारे में दिलचस्प तथ्य पेश है।

1. राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के पहले पदक विजेता पहलवान राशिद अनवर थे जिन्होंने लंदन में 1934 चरण में कांस्य पदक जीता था। भारत ने इन खेलों में पहली बार हिस्सा लिया था। 2. 1934 राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के केवल छह खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। 3. भारत के छह सदस्यीय दल ने 1934 राष्ट्रमंडल खेलों की केवल एथलेटिक्स और कुश्ती स्पर्धा में हिस्सा लिया था। 4. आजादी के बाद भारत को राष्ट्रमंडल खेलों में पहला स्वर्ण पदक जीतने के लिये 1958 तक इंतजार करना पड़ा था, तब महान एथलीट मिल्खा सिंह ने कार्डिफ में पीला तमगा जीता था। 5. अमी घीया और कंवल ठाकर सिंह की जोड़ी राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिलायें बनी थीं जिन्होंने कनाडा के एडमंटन में 1978 के चरण में कांस्य पदक जीता था। 6. चक्का फेंक खिलाड़ी कृष्णा पूनिया ने मिल्खा सिंह की ऐतिहासिक उपलब्धि के 52 साल बाद दिल्ली में 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में भारत को एथलेटिक्स में दूसरा स्वर्ण पदक दिलाया था।

स्वीडन महिला यूरो 2022 के सेमीफाइनल में, इंग्लैंड से होगा सामना

मैनचेस्टर। लिंडा सेम्ब्रेंट द्वारा अतिरिक्त समय में किये गए गोल की बदौलत स्वीडन ने बेल्जियम को 1-0 से हराकर महिला यूरो 2022 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। जहां टीम का सामना इंग्लैंड से होगा। इस मुकाबले में स्वीडन ने आक्रामक शुरुआत की। स्वीडन के पास शुरुआत में ही खाता खोलने का बेहतरीन मौका था,

फिलीपा एंजेलडाहल ने छठे मिनट में लगभग गोल कर ही दिया था, लेकिन बेल्जियम की गोल कीपर एवरार्ड ने शानदार बचाव किया। बेल्जियम को भी पहले हाफ में कुछ मौके मिले, लेकिन वह उसे गोल में नहीं बदल सके. पहला हाफ गोलरहित रहा। दूसरे हाफ की भी रोमांचक शुरुआत हुई। स्वीडन ने मैच के 73वें मिनट में लगभग बढ़त बना ली थी। असलानी द्वारा फ्री-किक को लिंडा सेम्ब्रेंट ने हेडर के जरिए गोल पोस्ट में डालने की कोशिश की, लेकिन एवरार्ड ने एक बार फिर यह प्रयास विफल कर दिया। इसके बाद अतिरिक्त समय में लिंडा सेम्ब्रेंट ने बेल्जियम के डिफेंस को भेदते हुए गोल किया और अपनी टीम को सेमीफाइनल में पहुंचा दिया। टूर्नामेंट मेजबान इंग्लैंड के खिलाफ स्वीडन का सेमीफाइनल मुकाबला 31 जुलाई को प्रतिष्ठित वेम्बली स्टेडियम में खेला जायेगा।

तिरुवनंतपुरम पहुंची शतरंज ओलंपियाड की मशाल रिले

तिरुवनंतपुरम। देश में पहली बार आयोजित हो रहे शतरंज ओलंपियाड की मशाल रिले तिरुवनंतपुरम पहुंच गई है। केरल के परिवहन मंत्री एंटनी राजू ने शुक्रवार को शहर के जिमी जॉर्ज इंडोर स्टेडियम में जिला कलेक्टर नवजोत खोसा से मशाल प्राप्त की। साई मीडिया ने ट्वीट किया, ₹पहली बार चेस ओलंपियाड रिले 22 जुलाई शुक्रवार को तिरुवनंतपुरम पहुंची। माननीय परिवहन मंत्री एंटनी राजू, केरल सरकार ने जिमी जॉर्ज इंडोर स्टेडियम में जिला कलेक्टर नवजोत खोसा और जिला कलेक्टर, त्रिवेंद्रम से मशाल प्राप्त की। इससे पहले बुधवार को मशाल रिले लक्षद्वीप पहुंची थी। अब तक मशाल रिले अगरतला, नामसाई, डिब्रूगढ़, ईटानगर, लेह, जम्मू, श्रीनगर, धर्मशाला, शिमला, चंडीगढ़, पटियाला, अमृतसर, पानीपत, गुरुग्राम, कुरुक्षेत्र, देहरादून, हरिद्वार, मेरठ, कानपुर, केवड़िया, अहमदाबाद, दांडी, सूरत, जयपुर, दमन, मुंबई, पुणे, नागपुर, पणजी, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, झांसी, गंगटोक, सिलीगुड़ी, कोहिमा, गंगटोक, शिलांग, गुवाहाटी और सिलीगुड़ी, रायपुर, भुवनेश्वर, पुरी, कोणार्क , विशाखापत्तनम, अमरावती, बेंगलुरु, मंगलुरु आदि शहरों की यात्रा कर चुकी है। मशाल रिले को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया था और लेह से रिले शुरू हुई थी। मशाल रिले तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समाप्त होने से पहले 40 दिनों के लिए 75 शहरों की यात्रा करेगी। शतरंज ओलंपियाड में 200 से अधिक देश भाग ले रहे हैं। शतरंज के ग्रैंडमास्टर विभिन्न चिन्हित स्थानों पर मशाल प्राप्त करेंगे। दुनिया के सबसे बड़े शतरंज आयोजन के 44वें संस्करण का आयोजन 28 जुलाई से 10 अगस्त तक चेन्नई के पास महाबलीपुरम में किया जायेगा।

राष्ट्रमंडल खेल 2022 के लिये बर्मिंघम रवाना हुई भारतीय पुरुष हॉकी टीम

बेंगलुरु। भारतीय पुरुष हॉकी टीम राष्ट्रमंडल खेल (सीडब्ल्यूजी) 2022 के लिए शनिवार को इंग्लैंड के लिए रवाना हो गई। मेगा इवेंट बर्मिंघम में 28 जुलाई 2022 से 8 अगस्त 2022 तक आयोजित किया जाएगा। मनप्रीत सिंह के नेतृत्व में भारतीय पुरुष हॉकी टीम को इंग्लैंड, कनाडा, वेल्स और घाना के साथ राष्ट्रमंडल खेलों में पूल बी में रखा गया है। भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत रविवार 31 जुलाई 2022 को घाना के खिलाफ करेगी।

कप्तान मनप्रीत सिंह ने अपने प्रस्थान से पहले टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम के उत्साह के बारे में बात करते हुए कहा कि उनका लक्ष्य राष्ट्रमंडल खेलों में पोडियम फिनिश करना होगा। उन्होंने कहा, हम इस आयोजन को लेकर काफी उत्साहित हैं क्योंकि हम पिछले कुछ समय से इस प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं, और हम दुनिया की कुछ सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की उम्मीद कर रहे हैं। अपनी ताकत और कमजोरियों पर काम करने के बाद पिछले कुछ महीनों में, हम यहां पदक जीतने के लिए जो कुछ भी होगा, हम करेंगे। मनप्रीत का यह भी मानना है कि एफआईएच मेन्स हॉकी प्रो लीग सीजन 2021–2022 में भारत का तीसरा स्थान हासिल करना, जहाँ उन्हें कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा, बर्मिंघम में उनकी मदद करेगा। ड्रेसिंग रूम के मिजाज के बारे में मनप्रीत ने कहा, 'हर कोई उत्साहित है और अपना 100 फीसदी देने को लेकर उत्सुक है। उन्होंने कहा, अभी, हम बर्मिंघम पहुंचने और वहां के मौसम और खेलने की स्थिति के आदी होने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हम अपने पहले गेम की भी तैयारी कर रहे हैं, क्योंकि घाना के खिलाफ एक मजबूत शुरुआत हमारे अभियान को शुरू करने में महत्वपूर्ण होगी।

ब्रिटेन में मौसम से सामंजस्य बैठाने पर ध्यान: मनप्रीत

बेंगलुरु(भाषा)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह ने शनिवार को कहा कि ब्रिटेन पहुंचने कर मौसम के अनुकूल ढलने के बाद यह टीम राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने के लिए जी-जान लगा देगी। टीम 28 जुलाई से आठ अगस्त तक चलने वाले खेलों में हिस्सा लेने के लिए शनिवार को बर्मिंघम रवाना हुई। उन्होंने रवानगी से पहले यहां कहा, '' हम इस आयोजन को लेकर काफी उत्साहित हैं क्योंकि हम पिछले कुछ समय से इस प्रतियोगिता को ध्यान में रखकर अभ्यास कर रहे हैं। हम दुनिया की कुछ सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की उम्मीद कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा, '' टीम ने पिछले कुछ महीनों में अपनी ताकत और कमजोरियों पर काम किया है और हम यहां पदक जीतने के लिए जो कुछ भी करना हो वह करेंगे।'' भारत को पूल बी में इंग्लैंड, कनाडा, वेल्स और घाना के साथ है।

फिल्म 'गुडबाय' की रिलीज डेट तय

काफी समय से चर्चा में बनी हुई बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ,नीना गुप्ता और साउथ फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री रश्मिका मंदाना की आगामी फिल्म 'गुडबाय' की रिलीज डेट मेकर्स ने तय कर दी है। मेकर्स ने शनिवार को फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा करते हुए बताया है कि यह फिल्म इसी साल 22 अक्टूबर को रिलीज होगी। इसके साथ ही मेकर्स ने फिल्म का एक पोस्टर भी जारी किया है, जिसमें फिल्म के सभी अहम किरदार नजर आ रहे हैं। फिल्म के इस पोस्टर में सभी कलाकार साथ में बैठ कर टीवी पर कुछ देख रहे हैं। तस्वीर में सुपरस्टार अमिताभ बच्चन सोफे पर बैठे नजर आ रहे हैं। वहीं सोफे के किनारे पर बैठीं रश्मिका उन्हें पॉपकॉर्न दे रही हैं। नीना गुप्ता सोफे के नीचे बैठी हैं। परिवार के बाकी सदस्य भी जमीन पर बैठे नजर आ रहे हैं। सोफे के पीछे दीवार पर ढेर सारे फोटो फ्रेम लगे हैं। गौरतलब है कि फिल्म गुडबाय में अमिताभ और नीना रश्मिका के माता-पिता के किरदार में होंगे।फिल्म में अमिताभ, नीना और रश्मिका के अलावा पावेल गुलाटी, एली अविराम, सुनील ग्रोवर और साहिल मेहता भी अहम भूमिका निभाते नजर आएंगे। बालाजी टेलीफिल्म्स के बैनर तले बन रही मनोरंजन से भरी इस फिल्म को बालाजी टेलीफिल्म्स और रिलायंस एंटरटेनमेंट फिल्म को प्रोड्यूस कर रहे हैं। वहीं निर्देशन विकास बहल ने किया है।

तान्हाजी' के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने को लेकर उत्साहित हैं अजय देवगन

मुंबई। बॉलीवुड के सिंघम स्टार अजय देवगन अपनी सुपरहिट फिल्म 'तान्हाजी-द अनसंग वॉरियर' के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने को लेकर उत्साहित हैं। भारत सरकार ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार की घोषणा कर दी है। 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता की कैटेगरी में इस साल यह पुरस्कार दो अभिनेताओं को मिला है। अजय देवगन और दक्षिण भारतीय अभिनेता सूर्या ने राष्ट्रीय पुरस्कार अपने नाम किया है। अजय देवगन को तान्हाजी-द अनसंग वॉरियर और सूर्या ने फिल्म 'सोरारई पोट्टु' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार अपने नाम किया है। अजय देवगन ने कहा, "मैं 'तान्हाजी-द अनसंग वॉरियर' के लिए 68वें राष्ट्रीय पुरस्कारों में सूर्या के साथ सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीतने के लिए उत्साहित हूं। सूर्या को 'सोरारई पोट्टु' के लिए यह पुरस्कार मिला है। मैं सभी को धन्यवाद देता हूं। सबसे बढ़कर मेरी क्रिएटिव टीम, दर्शकों और मेरे प्रशंसकों का शुक्रिया करना चाहूंगा। साथ ही अपने माता-पिता और ईश्वर को उनके आशीर्वाद के लिए भी आभार व्यक्त करता हूं। मेरी ओर से अन्य सभी विजेताओं को भी उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई।"

द नांबी इफेक्ट को मिली सफलता से उत्साहित हैं आर माधवन

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता आर माधवन फिल्म रॉकेट्रीः द नांबी इफेक्ट को मिली सफलता से उत्साहित हैं। आर माधवन की फिल्म रॉकेट्रीः द नांबी इफेक्ट हाल ही में सिनेमाघरों में रिलीज हुयी है। रॉकेट्रीः द नांबी इफेक्ट इसरो के पूर्व रॉकेट साइंटिस्ट नांबी नारायणन के जीवन पर आधारित है। आर माधवन ने नांबी नारायणन का किरदार निभाया है।यह पैन इंडिया फिल्म 6 भाषा हिंदी, तमिल, तेलुगु, अंग्रेजी, मलयालय और कन्नड़ में रिलीज हुई है।फिल्म को क्रिटिक्स और ऑडियंस का भी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। आर माधवन इस फिल्म को मिली सफलता से बेहद उत्साहित हैं। आर माधवन ने कहा, "इस फिल्म से लोगों का जो प्यार और सम्मान मिला है। वह 1000 करोड़ की कमाई से भी ज्यादा है। शुरूआत में इस फिल्म की रफ्तार थोड़ी कम थी, लेकिन वर्ड ऑफ माउथ से इस फिल्म को धीरे धीरे बहुत फायदा मिला है।नंबी नारायणन से जब मैं मिला और उनकी कहानी सुनी तो सारी बातें मेरे जेहन में ऐसी चिपक गईं कि निकल ही नहीं रही थी। उनसे मिलने के बाद महीने भर उनके बार सोचता रहा, नींद में भी उनसे बाते करता रहता। उनके साथ जो खतरनाक सिचुएशन थी, मैं सोच रहा था कि यदि मेरे साथ ऐसा हुआ होता तो क्या होता? मुझे लगा कि ये कहानी दुनिया के सामने आनी चाहिये।"

'भाभीजी घर पर हैं' फेम अभिनेता दीपेश भान का निधन

मुंबई। टेलीविजन फिल्म इंडस्ट्री से दुखद सूचना सामने आई है। मशहूर धारावाहिक 'भाभी जी घर पर है' में मलखान सिंह का किरदार निभाने वाले अभिनेता दीपेश भान का निधन हो गया। रिपोर्ट्स के अनुसार दीपेश शुक्रवार को क्रिकेट खेलते समय गिर गए थे। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दीपेश के आकस्मिक निधन से मनोरंजन जगत में शोक की लहर है। दीपेश टीवी की दुनिया से लंबे समय से जुड़े हुए थे। 'भाभीजी घर पर हैं' से पहले वह 'कॉमेडी का किंग कौन', 'कॉमेडी क्लब', 'भूतवाला', 'एफआईआर' समेत कई कॉमेडी शोज का हिस्सा रह चुके थे। उन्होंने आमिर खान के साथ भी काम किया था। वह आमिर के साथ टी-20 वर्ल्ड कप के विज्ञापन में नजर आये थे। उन्होंने साल 2007 में रिलीज फिल्म 'फालतू ऊटपटांग चटपटी कहानी' में काम किया था।

सो कॉल्ड मर्दों के जरिये चलाया जाता है बॉलीवुड

मल्लिका शेरावत

मुंबई। 'मर्डर' और 'वेलकम' फेम मल्लिका शेरावत ने पिछले साल वेब सीरीज नकाब से कमबैक किया था। अब उनकी रजत कपूर के डायरेशन और एक्टिंग वाली 'आरके/आरके' आ रही है। मल्लिका ने बताया कि आखिर क्यों उनका करियर इंडस्ट्री में उंचाई नहीं छू पाया है। ये बात तो डायरेक्टर रजत कपूर से ही पूछनी पड़ेगी। मुझे भी फिल्म ऑफर हुई थी, मैंने भी उनसे यही पूछा था कि रजत जी ये टाइटल क्या है? डबल रोल वाला सस्पेंस तो फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा। पचास के दशक में जो एक्ट्रेसेज होती थीं, गुलाबो उन पर बेस्ड है। तब की एक्ट्रेसेज में बहुत ठहराव होता था। उसे प्ले करना मेरे लिए बहुत चैलेंजिंग था। उनकी हर अदा में फेमिनिटी थी। वहीदा जी की 'प्यासा', 'कागज के फूल' वगैरह देखी। मीना कुमारी की 'पाकीजा' भी देखी। वो सब बड़ी पोएटिक फिल्म थी। वही सारी चीजें डायलॉग्स में मैं लेकर आई हूं। यह सारी चीजें हम करेंट टाइम में भूल चुके हैं। सीरियस फिल्ममेकर इसलिए नहीं आ सके, क्योंकि मेरी ग्लैमरस इमेज मेरी शख्सियत पर भारी रही है। वो बेशक अब गुलाबो और ओटीटी वाले ऑफर्स से हो रही है। उस दौर में एक्ट्रेसेस के अच्छे रोल भी नहीं लिखे जा रहे थे। 'मर्डर' सिर्फ हॉट फिल्म थी, यह कहना गलत होगा। क्योंकि उसके बाद बहुतों की हॉट फिल्में आईं, जो नहीं चलीं। कई हॉट एक्ट्रेसेस भी आईं, जो अपनी एक बेहतरीन फिल्म के बाद आगे चल नहीं पाईं। 'मर्डर' के बाद स्ट्रॉन्ग फीमेल रोल की कमी तो रही है। अब ओटीटी के चलते एक्ट्रेसेस का गोल्डन पीरियड आया है। मैं रेगुलर टच में तो थी, मगर जब मुझे 'मर्डर-2' सुनाई गई तो उसमें मुझे कुछ मजबूती नजर ही नहीं आई। 'मर्डर' के बाद अगर मुझे कुछ बेटर चीज करनी थी तो वो सब 'मर्डर' से बेटर होनी चाहिये थीं। मेरे करियर में भट्ट साहब का बहुत योगदान रहा है। वो जब कुछ अच्छा ऑफर करेंगे तो मैं बेशक करूंगी। बॉलीवुड बड़ी पेट्रियारकल जगह है। बड़े पॉवरफुल सो कॉल्ड मर्दों के जरिये चलाया जाता है। वो रात के 12 बजे कॉल कर कहा करते हैं आ के मुझसे मिलो। मैं ठहरी हरियाणा की जाट लड़की। मैं मना कर देती थी कि भई रात को ही ऐसा क्या डिसकस करना। तो वो सब चीजें मुझ पर उन जैसों की चली नहीं। एक और बात बताती हूं। मैं दुबई में एक मल्टी स्टार कास्ट फिल्म कर रही थी। वो एक हिट फिल्म है, लोगों को काफी पसंद भी है। उस फिल्म का हीरो रोज रात मेरे दरवाजे को ठक-ठक करता था।

सारा अली खान की इंसल्ट के आरोप पर बोले करण जौहर-जाह्नवी हारी तो बुरा लग रहा था

मुंबई। करण जौहर के चैट शो कॉफी विद करण के 3 एपिसोड्स आ चुके हैं। तीनों काफी चर्चे में रहे। दूसरे एपिसोड में सारा अली खान और जाह्नवी कपूर आई थीं। शो के बाद सोशल मीडिया पर चर्चा था कि करण जौहर सारा के साथ ठीक तरह से पेश नहीं आए। वहीं जाह्नवी को प्रिंसेज कहा और उनकी तारीफ करते रहे। लोगों ने कमेंट्स किए थे करण के व्यवहार से सारा अनकम्फर्टेबल थीं। अब करण जौहर ने इस बात पर सफाई दी है। उनका कहना है कि इस तरह के दावे गलत हैं। वह दोनों को बचपन से जानते हैं। उन्होंने जाह्नवी का फेवर नहीं किया बस बुरा लग रहा था कि वह दोनों राउंड हार गई। कॉफी विद करण के दूसरे एपिसोड के बाद अक्षय कुमार पर आरोप लगे थे कि उन्होंने जाह्नवी कपूर को फेवर किया और सारा को लगभग साइड लाइन कर दिया। गुरुवार को मुंबई में लाइगर के ट्रेलर लॉन्च के दौरान उनसे यह सवाल पूछा गया तो करण ने इस आरोप से इनकार किया। करण बोले, यह एकदम गलत है। मुझे बस बुरा लग रहा था कि जाह्नवी दोनों राउंड हार गई। वह रैपिड फायर राउंड भी हारी, वह गेम राउंड भी हार गई। मैं बस अच्छा बनने की कोशिश कर रहा था। मुझे लगता है कि इसको लोगों ने गलत तरह से ले लिया। मैं दोनों को बहुत प्यार करता हूं। दोनों न सिर्फ बेहतरीन आर्टिस्ट्स हैं बल्कि बच्चियां हैं। मैं शायद उन्हें तबसे जानता हूं जब वे 3 साल की रही होंगी। इसलिए एक का पक्ष लेने का सवाल ही नहीं उठता। कभी नहीं। कॉफी विद करण में करण जौहर ने कहा था कि काउच पर जाह्नवी ज्यादा हॉट लग रही हैं। साथ में सारा अली खान भी बैठी थीं। वहीं उन्होंने सवाल पूछा तो कहा कि जाह्नवी अपने घर की प्रिसेंज है। जबकि सारा को सिंगल मदर ने पाला है। फैमिली के बारे में डिसकशन आने पर सारा के एक्सप्रेशंस के सोशल मीडिया पर चर्चे थे। लोगों का कहना था कि सारा अली खान असहज हो गई थीं। वहीं करण ने सारा के सस्ते कपड़ों और पैसे बचाने का मजाक भी उड़ाया था।

बाबा की भक्ति में चार चांद लगाने आया 'मरले बा बसहा गणेश'

मुंबई। सावन का महीना बाबा भोलेनाथ की भक्ति का महीना माना जाता है। इस भक्ति में इजाफा करने के लिए एक के बाद एक बोल बम के गीत भी रिलीज हो रहे है। सभी भोजपुरिया सिंगर अपने अपने फैंस के लिए बोलबम सांग्स रिलीज कर रहे हैं। इसी बीच वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स के साथ एक्सक्लूसिव कॉन्ट्रैक्ट साइन करने वाले सिंगर राकेश तिवारी का वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी से पहला बोलबम सांग रिलीज हो चुका है। इस सांग के बोल भी बड़े ही यूनिक हैं 'मरले बा बसहा गणेश'। जो दर्शकों को बेहद पसंद आ रहे हैं। 'मरले बा बसहा गणेश' में भोजपुरी इंडस्ट्री की क्यूट गर्ल सबा खान नजर आ रही हैं।

सबा खान गाने में बड़े ही प्यारे तरीके से कहती हैं की रहुआ तो दिन भर रही देवघर में 'मरले बा बसहा गणेश' में। ऐसे सबा भोले बाबा से अपने मन की व्यथा सुना रही है। वहीं अगर गाने की पिक्चराइजेशन की बात करें तो इसे काफी रिच लोकेशंस पर फिल्माया गया है। गाने के बीच-बीच में देवघर को दिखाया गया है। इसमें सबा खान पारंपरिक परिधान में बेहद ही खूबसूरत और प्यारी नजर आ रही हैं। वैसे भी सोशल मीडिया में सबा की अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है। जिसका फायदा उनके गानों को मिलता है। सान्ग के बीच बीच में राकेश तिवारी भी नजर आ रहे हैं। जो दर्शकों को गाने में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में कामयाब रहे हैं। वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी प्रस्तुत 'मरले बा बसहा गणेश' के सिंगर राकेश तिवारी हैं, वही इस गीत को लिखा है छोटे मद्धेशिया ने । इसका मधुर संगीत त्रिभुवन यादव ने दिया है। निर्माण रत्नाकर कुमार ने किया है। जबकि निर्देशन गोल्डी जायसवाल और कोरियोग्राफी बॉबी जैक्सन का है।

कंगना रनौत की 'इमरजेंसी' में हुई अनुपम खेर की एंट्री

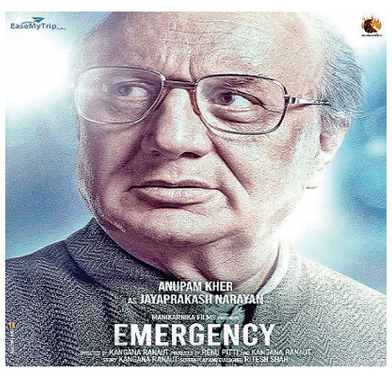

कंगना रनौत की आगामी फिल्म इमरजेंसी इन दिनों चर्चा में है । फिल्म में कंगना रनौत भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के किरदार में नजर आयेंगी। हाल ही में इस फिल्म का टीजर जारी हुआ था। वहीं अब इस फिल्म में दिग्गज अभिनेता अनुपम खेर की एंट्री हो गई है। इसकी जानकारी खुद अनुपम खेर ने फिल्म से अपना फर्स्ट लुक साझा करते हुए दी है। फिल्म 'इमरजेंसी' अनुपम खेर के करियर की 527वीं फिल्म है। इस फिल्म में अनुपम खेर जयप्रकाश नारायण के किरदार में नजर आयेंगे। अनुपम खेर इस फिल्म को लेकर काफी एक्साइटेड हैं और उनकी फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' की सफलता के बाद इस फिल्म में अनुपम के अभिनय को देखना दिलचस्प होगा। उल्लेखनीय है कि फिल्म राजनीतिक ड्रामा पर आधारित इस फिल्म की घोषणा कंगना ने पिछले साल ही की थी। 'इमरजेंसी' इंदिरा गांधी के समय में लगे आपातकाल पर आधारित है। कंगना इस फिल्म में अभिनय और निर्देशन के अलावा इसे प्रोड्यूस भी कर रही हैं।

कॉमेडी के सरताज थे महमूद

बीते जमाने के मशहूर हास्य अभिनेता, निर्माता और निर्देशक रह चुके महमूद आज बेशक हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जब भी फिल्मों में हास्य भूमिकाओं की बात होती है तो सबसे पहले उन्हीं का चेहरा उभर कर सामने आता है। महमूद का 23 जुलाई, 2004 को अमेरिका में इलाज के दौरान निधन हो गया था। लेकिन आज भी वह अपनी अद्भुत अदाकारी के कारण दर्शकों के दिलों में जीवित हैं। वैसे तो महमूद ने फिल्मों में हर तरह के किरदार को बखूबी से निभाया, लेकिन फिल्मों में उनकी हास्य भूमिका को दर्शकों ने काफी पसंद किया और वह इसके लिए काफी मशहूर भी हुए।

29 सितम्बर, 1932 को जन्में महमूद के पिता मुमताज अली एक फिल्म अभिनेता और डांसर थे। आठ भाई -बहनों में दूसरे नंबर पर रहे महमूद ने अपने करियर की शुरुआत बतौर बाल कलाकार साल 1943 में आई फिल्म 'किस्मत' से की। इस फिल्म में उन्हें अशोक कुमार और मुमताज शांति के साथ अभिनय करने का मौका मिला। इस फिल्म में महमूद के अभिनय को काफी पसंद किया गया। इसके बाद महमूद एक के बाद एक कई फिल्मों में अभिनय करते नजर आये और अपनी अदाकारी से दर्शकों के दिलों में अपनी खास जगह बनाई। महमूद की कुछ प्रमुख फिल्मों में दो बीघा जमीन, नास्तिक , सीआईडी , फंटूश , परवरिश, कैदी नंबर 911 ,दिल तेरा दीवाना, भूत बंगला, गुमनाम ,बॉम्बे टू गोवा, पत्थर के सनम ,पड़ोसन, कुंवारा बाप आदि शामिल हैं।

महमूद ने फिल्म 'भूत बंगला का निर्माण और निर्देशन दोनों किया। इसके अलावा उन्होंने छोटे नवाब और पड़ोसन का भी निर्माण किया। फिल्म पड़ोसन 60 के दशक की जबर्दस्त हिट साबित हुई। पड़ोसन को हिंदी सिने जगत की श्रेष्ठ हास्य फिल्मों में गिना जाता है।

हिंदी सिनेमा में लगभग पांच दशक तक राज करने वाले महमूद ने मशहूर अभिनेत्री मीना कुमारी की बहन मधु से विवाह किया था।महमूद के बेटे लकी अली भी महमूद की तरह फिल्मों के जाने माने अभिनेता रह चुके हैं।

महमूद आज बेशक हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने अभिनय के जरिये वह हमेशा दर्शकों के दिलों में जीवित हैं और रहेंगे। हिंदी सिनेमा में दिए गए उनके अभूतपूर्व योगदानों के लिए हिंदी सिनेमा हमेशा उनकी ऋणी रहेगी।

गुलाब की पंखुड़ियों से ढकी नजर आईं उर्फी जावेद

सोशल मीडिया सेंसेशन उर्फी जावेद अपने एक्सपेर्टीमेंटल फैशन के लिए जानी जाती है। उनके अलावा शायद ही किसी अन्य अभिनेत्री ने अपने कपड़ों के साथ इतने एक्सपेरिमेंट किए होंगे। उर्फी कटे-फटे कपड़े पहनकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करती हैं और आग की तरह वह वायरल हो जाती हैं। ऐसा ही नजारा रविवार को भी देखने को मिला जब अभिनेत्री ने अपनी एक नई वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट की। वीडियो में देखते ही देखते सोशल मीडिया पर वायरल हो गयी और ऊपर से उर्फी का हॉट अवतार देखने वालों की हालत खराब हो गई है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रही वीडियो में उर्फी जावेद लेटी हुई नजर आ रही हैं। आपको बता दें कि उन्होंने कपड़े नहीं पहने हुए हैं और गुलाब की पंखुड़ियों से अपने प्राइवेट पार्ट्स को ढक रखा है। वीडियो में उर्फी हद से ज्यादा हॉट अवतार में नजर आ रही हैं।

करण जौहर पर लगा सारा के खिलाफ जाकर जान्हवी को फेवर करने का आरोप, निर्माता ने दी सफाई

बॉलीवुड फिल्म निर्माता करण जौहर इन दिनों अपने रियलिटी चैट शो 'कॉफी विद करण' के सातवें सीजन की वजह से सुर्खियों में बने हुए है। कॉफी विद करण के इस सीजन के अबतक तीन एपिसोड डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर प्रसारित हुए चुके हैं, जो कि काफी मजेदार और धमाकेदार थे। शो के दूसरे में एपिसोड में बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्रियां सारा अली खान और जान्हवी कपूर ने शिरकत की थी। एपिसोड के प्रसारित होने के बाद सोशल मीडिया पर लोगों ने शो के होस्ट करण जौहर पर जान्हवी कपूर का पक्ष लेने का आरोप लगाया था। अब फिल्म निर्माता ने खुद पर लगे इन आरोपों पर चुप्पी तोड़ी है। चलिए जानते हैं उन्होंने क्या कुछ कहा है। फिल्म लाइगर के ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान करण से कॉफी विद करण में जाह्नवी कपूर का पक्ष लेने पर सवाल पूछा गया था। इस सवाल का जवाब देते हुए निर्माता ने कहा, ये बिलकुल भी सही नहीं है, बल्कि मुझे तो जान्हवी के लिए बुरा लग रहा था।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक एवं RNI No. DELHIHIN/2010/37009 संपादक मो हनीफ द्वारा अरावली प्रिंटर्स -WA30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित करवाकर, जी-12/276 , संगम विहार, नई दिल्ली-62 से प्रकाशित। फोन:8888883968, 9811111715 किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही होगा।